स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

ISSN-0971-8397

विकास को समर्पित मासिक

योजना

अगस्त, 2002

मूल्य: 15 रुपये

पर्यावरण-पर्यटन एवं पर्वत

पहाड़ों के बीच बहती गंगा (ऋषिकेश)

योजना

वर्ष : 46 अंक 5 अगस्त, 2002 श्रावण-भाद्रपद, शक-संवत् 1924

प्रधान संपादक

सुभाष सेतिया

कार्यकारी संपादक

अंजनी भूषण

उप संपादक

रेमी कुमारी

संपादकीय कार्यालय

कमरा नं. 538 ए, योजना भवन, संसद मार्ग,

नई दिल्ली-110 001

दूरभाष : 3710473, 3717910

3715481/2510, 2508, 2566

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)

डी.एन. गांधी

विज्ञापन एवं वितरण प्रबंधक

प्रकाश चन्द्र आहूजा

आवरण : दीपायन मैत्रा

हिन्दी के अतिरिक्त **असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, तमिल, उड़िया, पंजाबी, तेलुगू** तथा **उर्दू** भाषाओं में भी प्रकाशित सदस्यता आदि के लिए निम्न पते पर संपर्क करें :-

विज्ञापन एवं प्रसार व्यवस्थापक

प्रकाशन विभाग, ईस्ट ब्लाक IV, लेवल VII, आर.के. पुरम,

नई दिल्ली-110 066 टेलीफोन : 6100207, 6105590

चंदे की दरें

वार्षिक : 70 रु.; द्विवार्षिक : 135 रु.; त्रैवार्षिक 190 रु.

इस अंक में

- **पर्यावरण-पर्यटन की योजनागत तैयारी** — जगमोहन — 3
- **पर्यावरण-पर्यटन : समस्याएं और संभावनाएं** — संतोष यादव — 9
- **पर्यावरण-पर्यटन और पर्वतमालाएं** — उषा बंदे — 17
- **पर्यावरण-पर्यटन और हिमालय** — एम.एस. कोहली — 22
- **पर्यावरण-पर्यटन : भूमि का समुचित प्रबंध** — मंदीप सिंह सोई — 26
- **पर्यावरण-पर्यटन और पर्वत** — महेश्वर राव — 30
- **पर्वतारोहण, ट्रैकिंग और साहसिक खेलकूद** — मनोहर सिंह गिल — 36
- **भारतीय हिमालय पर्वतमाला—एक नजर** — हरीश कपाड़िया — 40
- **स्थायी पर्वत विकास** — गोपी एन. घोष — 47
- **पर्वतों का रहस्यवाद, रोमांस और निमंत्रण** — पी.एम. दास — 53
- **भारत के सर्वाधिक लुभावने समुद्र तट** — मनोहर पुरी — 60
- **पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण** — के.एल. नौटे — 66

इस अंक के लेखक

जगमोहन, केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री; संतोष यादव, 'सर्च' की उपाध्यक्ष, दो बार ऐवरेस्ट पर चढ़ चुकी हैं; उषा बंदे, स्वतंत्र पत्रकार; कैप्टेन एम.एस. कोहली, हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष; मंदीप सिंह सोई, पर्वतारोही एवं इंग्लैंड की 'रायल जियोग्राफिकल सोसाइटी' के अध्येता; महेश्वर राव, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय में संयुक्त निदेशक; मनोहर सिंह गिल, पूर्व प्रमुख चुनाव आयुक्त, भारतीय पर्वतारोही संस्थान के पूर्व अध्यक्ष तथा 'हिमालयन क्लब' के वर्तमान अध्यक्ष; हरीश कपाड़िया, प्रसिद्ध पर्वतारोही; गोपी एन. घोष, 'एफ.ए.ओ.', नई दिल्ली में नेशनल आफिसर; पी.एम. दास, पंजाब पुलिस में इंस्पेक्टर-जेनेरल; मनोहर पुरी, 'युगवार्ता' के संपादक; के.एल. नौटे, शिमला स्थित एक लेखक, पूर्व में 'असिस्टेंट कन्जर्वेटर आफ फारेस्ट'।

संपादकीय

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2002 को पर्यावरण-पर्यटन एवं पर्वत वर्ष घोषित किया है। इस निर्णय को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करना हम सबका कर्तव्य है। हिमालय के रूप में हमारे यहां विश्व की सबसे लम्बी पर्वत-शृंखला मौजूद है जिसे विश्व का ताज माना गया है। फिर, भारत जैव-विविधता की महान सम्पदा वाले दुनिया के सात बड़े राष्ट्रों में एक है जहां पर्यावरण-पर्यटन की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। यह अलग बात है कि आज आर्थिक लाभ और लोभ के कारण इन दोनों पर ही भारी दबाव है। हिमालय का पारिस्थितिक ढांचा अपेक्षाकृत नया होने के कारण अत्यंत नाजुक दौर से गुजर रहा है। भूक्षरण, भूस्खलन, जलवायु परिवर्तन, ज़लबहाव एवं पेयजल की कमी, आदि परिणाम इस ह्रास के फलस्वरूप परिलक्षित होने लगे हैं। जंगलों पर यह दबाव बढ़ने का प्रमुख कारण जनसंख्या में भारी वृद्धि है जिसके कारण मकान-निर्माण, सड़क एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं के निर्माण से संबद्ध विकास गतिविधियां वहां भी अपने पांव पसारने लगी हैं।

तथापि हमें इस बात पर गौर करना होगा कि आज पर्यटन दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है और इसमें भी प्राकृतिक पर्यटन सर्वाधिक तेजी से उभरता क्षेत्र है। पारिस्थितिक पर्यटन, अथवा सरल शब्दों में कहा जाए तो पर्यावरण-पर्यटन, में इस बात को पूरी तरह स्वीकार किया गया है कि स्थानीय लोगों की आय बढ़ाने में पर्यटन एवं यात्राओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। बदले में स्थानीय लोग वहां के वातावरण के संरक्षण, देखभाल एवं पुनर्निर्माण में भरपूर सहयोग देते हैं। इस प्रकार पर्यावरण- पर्यटन स्थाई पर्यटन के विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाता है। अतः इस क्षेत्र के सभी सहयोगियों को यथोचित प्रोत्साहन देना आवश्यक है और इस प्रक्रिया को नियंत्रित करने के लिए संवैधानिक प्रावधान भी जरूरी है।

इस अंक में इस विषय से जुड़े इन सभी तथा कुछ अन्य पहलुओं पर विशिष्ठ लेखकों द्वारा गहन जानकारी उपलब्ध कराई गई है। इनमें से कई लेखक प्रसिद्ध प्रकृति-प्रेमी और पर्वतारोही भी हैं। विषय से संबद्ध हिमालय के कुछ सुन्दर चित्रों का भी अंक में समावेश किया गया है।

पर्यावरण-पर्यटन की योजनागत तैयारी

○ जगमोहन

पिछले 50 वर्षों के अनुभवों से पता चलता है कि स्थायित्व, संरक्षण, पर्यावरण-पर्यटन आदि के विचार और आदर्श उस समय तक मूर्त्त रूप नहीं ले सकते जब तक कि पूरा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अपने आपको एक नई विचार दृष्टि और नई नैतिक दृष्टि से संवार नहीं लेता।

अनंत काल से हमारे संत और महात्मा पर्वतों, मैदानों और नदियों की यात्रा और बुद्धि के उस उत्थान का अनुभव करते रहे हैं जो प्रकृति के साथ निकट संपर्क से पैदा होता है। इन लोगों ने इस बात समझ लिया था कि मनुष्य और प्रकृति दो अलग अस्तित्व नहीं, बल्कि एक ही कार्बनिक तत्व, एक ही दैवी आत्मा के अविभाज्य अंग हैं। उनका विश्वास था कि प्रकृति का बुनियादी तत्व अंतरक्षीय प्राणी बनाता है—वह प्राणी, पर्वत जिसकी अस्थियां, धरती मांस, समुद्र रक्त, वायु सांस और अग्नि ऊर्जा है। उन्होंने यह प्रचारित किया कि "पृथ्वी हमारी माता है और हम उसकी संतान।" चार हजार वर्ष पूर्व रचित प्राचीन काल के आरंभिक वैदिक स्तोत्रों में वह संदेश निहित है जिसे आज हम सतत विकास के नाम से जानते हैं।

धरती की सृजन और वहन क्षमताओं को एक मजबूत अध्यात्मिक आधार माना गया है। यही कारण है कि भारत शताब्दियों से प्राकृतिक और सांस्कृतिक संपत्ति का भंडार बना हुआ है।

दुर्भाग्य से प्रकृति को सम्मान देने और उसके साथ सद्भाव से रहने की यह लंबी परंपरा बाद में अनियंत्रित भौतिकवाद के आक्रमण और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में बढ़ती असमानता के कारण विकृत होती गई और कई तरीकों से विकासशील देशों की क्षमता को दुर्बल बनाती गई। आज यह परंपरा इतनी कमजोर हो चुकी है कि वास्तविक रूप में कोई निर्णायक प्रभाव नहीं डाल सकती। विश्व में अन्यत्र सभी विचार गोष्ठियों, सेमिनारों और घोषणा-पत्रों में बारंबार स्थायित्व के बारे में स्तोत्रों का पाठ किया जाता है, लेकिन वह बिरले ही मूर्त्त रूप ले पाता है।

आंतरिक प्रोत्साहन

मैंने यह जरूरी समझा कि उपर्युक्त तथ्यों की तरफ ध्यान आकर्षित किया जाए, क्योंकि आज हमारे विचारों और आदर्शों को एक जागृत और उन्नत आत्मा के आंतरिक प्रोत्साहन के जरिए समर्थन देने की परम आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि कोई भी स्वस्थ परिदृश्य तब तक नहीं बन सकता जब तक कि एक स्वस्थ मानसिक दृष्टिकोण मौजूद न हो, जो उसे जन्म दे और उसकी परवरिश करे। अनुकूल और उत्तरदायी मृदा के बिना कोई भी बीज चाहे कितना ही अच्छा और उपजाऊ क्यों न हो, अपनी जड़े नहीं जमा सकता और न ही वांछित फसल दे सकता है।

इस सिलसिले में मुझे संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों के पिछले पांच दशकों के अनुभव की तरफ ध्यान आकर्षित कराना होगा। सदस्य देशों द्वारा स्वीकृत आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्य पूरे नहीं हो सके। इसका कारण मुख्य रूप से यह था कि जो मूल्य, जो बुनियादी शक्ति राष्ट्रों का जीवन चलाती है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। व्यवहार में पर्यावरण प्रणाली अथवा समानता तथा स्थायित्व के भुरभुरेपन के प्रति बहुत मामूली सम्मान दर्शाया गया।

अन्यथा इस बात का कोई औचित्य नहीं है कि पियर्सन आयोग, विली ब्रांट आयोग, ब्रंटलैंड आयोग और संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण तथा रियो सम्मेलन की सिफारिशों के बावजूद पहले से अधिक लोग स्लमों में क्यों रह रहे हैं; क्यों लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है और सफाई सुविधा नहीं है; और क्यों अंतर्राष्ट्रीय वातावरण गर्म होता जा रहा है, जिससे तटवर्ती क्षेत्रों के बड़े भाग और द्वीपसमूहों के अस्थित्व को खतरा पैदा हो गया है।

अगर वर्तमान प्रवृत्ति बनी रही तो पर्यावरण-पर्यटन की वकालत के परिणाम भी ऐसे ही होंगे। अंतर्राष्ट्रीय नैतिक शास्त्र-संहिता के अनुच्छेद तीन में कहा गया है कि ''पर्यटन विकास के सभी शेयरधारकों को प्राकृतिक पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहिए ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं और आंकाक्षाओं को समान रूप से संतुष्ट करने वाले सक्षम, मजबूत और सतत आर्थिक विकास का लक्ष्य हासिल किया जा सके।'' इसमें संदेह नहीं कि सभी सदस्य-राष्ट्र दिल की गहराईयों से इसे स्वीकार करेंगे। लेकिन मुद्दा सिद्धांत रूप में इसे स्वीकार करने का नहीं है, इसे व्यवहार में वास्तविक रूप में लाने का है और वास्तविक रूप देने का यह काम तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक हम सब एक साथ मिलकर उचित तरह का आंतरिक प्रोत्साहन बनाने के लिए ठोस और सक्षम उपाय न करें। अभी हम लोग इस दिशा में बहुत कम काम कर रहे हैं।

ब्रंटलैंड आयोग ने जोर देकर कहा है कि सतत विकास का अर्थ उत्पादन से कहीं अधिक है। यह उत्पादन की विषय-वस्तु में परिवर्तन चाहता है ताकि यह कम भौतिक बने और अधिक ऊर्जा गहनता वाला तथा प्रभाव में अधिक समानता वाला हो। पारिस्थितिक पूंजी बनाए रखने, आमदनी के वितरण में सुधार लाने और आर्थिक संकट की असुरक्षा घटाने के उपायों के तौर पर सभी देशों में ये परिवर्तन आवश्यक हैं। जोर कागजों पर ही अधिक है।

उदाहरण के तौर पर ऊर्जा के इस्तेमाल के सिलसिले में आज भी अमेरिका, जहां विश्व जनसंख्या के सिर्फ 5 प्रतिशत व्यक्ति रहते हैं, विश्व का करीब एक-चौथाई कार्बन उत्सर्जित करता है, जो किसी भी अन्य देश से अधिक है। यह चीनी आबादी के प्रति व्यक्ति से 11 गुना अधिक, भारत से 20 गुना अधिक और मोजांबिक से 300 गुना अधिक है। क्योटो प्रोटोकॉल द्वारा निर्धारित लक्ष्य की अनदेखी कर दी गई है हालांकि प्रमुख वैज्ञानिकों ने बार-बार अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को चेतावनी दी है कि 'ग्रीन हाऊस' के खत्म होने में सिर्फ 5 से 10 साल का समय रह गया है, गैस उत्सर्जन से वातावरण स्थिर रखने का काम पहुंच से बाहर हो जाने की आशंका है और यह ग्रह मानवमुक्त 'जोन' बनने की ओर अग्रसर है। सतत विकास और पर्यावरण-पर्यटन जैसे विचारों की तब क्या प्रासंगिकता रह जाएगी जब द्वीप के द्वीप लुप्त हो जाएंगे, तट के तट कट जाएंगे और राष्ट्रों को बाढ़, तूफान, आंधी तथा सूखे के कारण भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ेगा। समझा जाता है कि पिछले दशक (1990-2000) में मौसम-संबंधित नुकसान करीब 480 अरब डॉलर का रहा।

क्योटो प्रोटोकॉल द्वारा निर्धारित लक्ष्य की अनदेखी कर दी गई है हालांकि प्रमुख वैज्ञानिकों ने बार-बार अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को चेतावनी दी है कि 'ग्रीन हाऊस' के खत्म होने में सिर्फ 5 से 10 साल का समय रह गया है, गैस उत्सर्जन से वातावरण स्थिर रखने का काम पहुंच से बाहर हो जाने की आशंका है और यह ग्रह मानवमुक्त 'जोन' बनने की ओर अग्रसर है।

जहां तक समान प्रभाव और आमदनी के वितरण के मुद्दे का सवाल है, स्थिति अधिक परेशान कर देने वाली है। असमानता इतनी बढ़ गई है कि आज विश्व के 20 प्रतिशत लोगों के पास विश्व के कुल सकल राष्ट्रीय उत्पाद का 86 प्रतिशत, विश्व के निर्यात बाजार का 82 प्रतिशत और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का 68 प्रतिशत है। इसके विपरित कम आय वाले 20 प्रतिशत लोग प्रतिदिन एक डालर आमदनी के सहारे जिंदा रहने पर मजबूर हैं और उन्हें विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का सिर्फ एक प्रतिशत हिस्सा मिलता है। विश्व निर्यात बाजार का एक प्रतिशत और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भी इनका हिस्सा एक प्रतिशत ही है। ये असमानताएं दिन प्रतिदिन बढ़ ही रही हैं। पिछले 10 वर्षों में लोगों, निगमों तथा देशों के बीच आमदनी, संसाधन और दौलत में बढ़ती एकाग्रता देखने को मिली है। धनवान देशों में रहने वाले विश्व की आबादी के 5वें और निर्धन देशों में रहने वाले 5वें का अनुपात 1960 में 30:1 का था जो 1997 में बढ़कर 74:1 का हो गया। आज तीन बड़े अरबपतियों की सम्पत्ति सभी कम विकसित देशों और उनके 60 करोड़ लोगों के संयुक्त सकल राष्ट्रीय उत्पाद से कहीं अधिक है।

नई विचारदृष्टि

संक्षेप में पिछले पचास वर्षों में मिला सबक बिल्कुल स्पष्ट है। पूरी दुनिया में नए सांस्कृतिक मूल्य के घोषणा-पत्र के आधार पर जीवन की एक नई रूपरेखा विकसित किए जाने की आवश्यकता है। हमारी सैद्धांतिक अवधारणा सार्थक बनाने और उसे

मूर्त्त रूप देने के लिए एक नई विचारदृष्टि और एक नए विश्व को एक साथ उभरना होगा।

भारत में हम इस सबक से सीख लेने और अन्य देशों को इस बात पर राजी करने में काफी रुचि ले रहे हैं कि एक नए नीतिशास्त्र का निर्माण किया जाए जो इस ब्रह्मांड को एक नए अंतरिक्षीय 'वेब' के तौर पर देखें, जिसके तहत यह माना जाता है कि हर चीज एक दूसरे से जुड़ी है और पृथ्वी पर जो कुछ घटित होगा वही पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों पर घटित होगा।

हमें तथ्यों के मूल में जाना चाहिए और बात की तह में जाकर उस मानसिक अवधारणा का निर्माण करना चाहिए जो विचारों और आदर्शों के समरूप हो और जिसे मूर्त्त रूप दिया जा सके। हम यह महसूस करते हैं कि पर्यावरण-पर्यटन का उन लोगों के लिए बहुत कम आकर्षण है जिन्हें मौजूदा दौर के भौतिकवाद ने डसा हुआ है या जिनका दिमाग सुखवादी दृष्टिकोण से निर्देशित है, जो भौतिक सुख की तलाश में रहते हैं अथवा जिनकी दृष्टि उनके विश्वास से निर्देशित होती है। दुनिया एक मशीन है जिसकी रचना निष्क्रिय पिण्डों से हुई है। इसे भौतिक आवश्यकता घुमाती है और वैचारिक प्राणी के अस्तित्व के प्रति यह असंवेदनशील है। दूसरी तरफ वुड्सवर्थ की तरह, उन लोगों के लिए जिनका दिल आसमान में डेफोडिल्स को देखकर सम्मोहित होता है, इसका अर्थ अलग है।

इसीलिए हम लोग उन उपायों को प्राथमिकता दे रहे हैं जो स्वस्थ विचारदृष्टि बनाने में मदद करे। एक ऐसी विचारदृष्टि जो जीवन के उत्कृष्ट पहलुओं के प्रति संवेदनशील हो और बेहतर मूल्य-व्यवस्था को स्वीकृति की तरफ ले जाए।

सभी स्थलों पर पर्यावरण-शिक्षा और प्रकृति से सामंजस्य बिठाकर रहने की प्राचीन परम्परा फिर से पैदा करना हमारी राष्ट्रीय नीति का बुनियादी घोषणा-पत्र होना चाहिए। समग्र एकता में हमारे बुनियादी विश्वास की पुर्नव्याख्या और उसका सुदृढ़ीकरण तथा ब्रह्मांड के अद्वैतवाद यानी 'सभी में एक और एक में सब' हमारी कार्यसूची में सबसे ऊपर होने चाहिए।

हमारा यह भी विश्वास है कि पर्यावरण पर्यटन को सिर्फ प्रकृति-पर्यटन नहीं समझा जाए। यह काफी व्यापक विषय है। इसे गरीबी दूर करने, बेरोजगारी कम करने, नया कौशल निर्मित करने, महिलाओं की स्थिति सुधारने, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करने, संपूर्ण वातावरण में सुधार लाने, सभ्यताओं के बीच वार्तालाप बढ़ाने और अधिक न्यायोचित विश्व-व्यवस्था के विकास में सहायक बनने में सक्षम होना चाहिए। इसे एक धुंआ-रहित उद्योग के तौर पर काम करना चाहिए और इसका पारिस्थितिकी प्रभाव इतना नरम होना चाहिए कि उसका आरंभिक विरूपण इस धरती द्वारा समय से निष्प्रभाव कर दिया जाए।

समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक, हरिद्वार

भारत की पुनर्खोज

पिछले कुछ समय से पर्यावरण और संस्कृति की रंगभूमि पर भारत अनिद्रा की स्थिति में था। लेकिन अब यह पूरी तरह जाग गया है और सही दिशा में कोशिशें कर रहा है। यह अपनी विशाल प्राकृतिक उदारता तथा कला और वास्तुकला की विशाल निधि, तथा अपने दृष्टिकोण को सुधार कर अपने वातावरण को उन्नत बना रहा है। यह वास्तव में समृद्ध सांस्कृतिक और पवित्र स्थानों को सुस्पष्ट कर रहा है। यह पहाड़ों, साहसिक, ग्रामीण तथा वन्यजीव पर्यटन की सभी संभावनाओं का पता लगा रहा है और शारीरिक तथा मानसिक बीमारी से निपटने में योग, सिद्ध, आयुर्वेद तथा यूनानी पद्धितियों की अद्भुत तकनीकी को पर्यटन-स्थलों के माध्यम से विश्व के सामने रख रहा है। इस काम के लिए प्राकृतिक दृश्यों से संपन्न 572 क्षेत्रों, 89 राष्ट्रीय उद्यानों और 483 वन्यजीव उद्यानों, तथा प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्व और अवशेष अधिनियम के तहत 3606 संरक्षित स्मारकों की मदद ले रहा है। यह प्राचीन प्रतिष्ठा के संदर्भ में सिर्फ भौतिक आधार पर नहीं बल्कि समग्र गुणवत्ता के आधार पर जीवन मूल्यांकन के लिए सब कुछ करने की कोशिश कर रहा है।

कुल मिलाकर हमारा प्रयास दुनिया के सामने उस चमत्कार को पेश करना है जो कि 'भारत' है। यह आश्चर्य न सिर्फ सुंदरता और प्राकृतिक विशालता के अर्थ में है बल्कि उस सभ्यता के संदर्भ में भी है जिसने यहां जन्म लिया और जिसका यहां लालन-पालन हुआ; एक ऐसी सभ्यता जो मूल और शक्तिशाली मस्तिष्क से निकली और जिसने दुनिया की पांच बड़ी विचारधाराओं में से तीन को जन्म दिया—हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म। हम यह सुनिश्चित करने में रुचि रखते हैं कि भारत आने वाला पर्यटक शारीरिक रूप से शक्तिशाली बने, मानसिक रूप से उसका उत्साह बढ़े, सांस्कृतिक रूप से वह समृद्ध बने और नैतिक रूप से उसका उत्थान हो; अपने देश लौट कर वह अपने अंदर 'भारत' को महसूस करे।

हमने यह समझ लिया है कि अगर उभरते अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के मानचित्र पर भारत को सही स्थान बनाना है तो उसे बेहतर प्रयास करने होंगे। विश्व पर्यटन संगठन के अनुमानों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या मौजूदा 700 मिलियन से बढ़कर सन 2020 तक डेढ़ अरब पार कर जाएगी और यह कारोबार वर्तमान 476 अरब डॉलर से बढ़कर 2000 डॉलर का हो जाएगा। साथ ही हम कुप्रबंध तथा 'अदूरदर्शी' पर्यटन से होने वाले गंभीर नुकसानों के प्रति भी सचेत हैं जो खासतौर से राष्ट्र की जैव-विविधता तथा उसके प्राकृतिक पर्यावरण और ऐतिहासिक स्थलों और स्थानीय समुदायों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

संस्थागत स्तर पर हमने एक ढांचा विकसित किया है जो सरकार के नेतृत्व में निजी क्षेत्र द्वारा संचालित है और सामुदायिक कल्याण की ओर उन्मुख है। सरकार को पर्यटन व्यापार और उद्योग नियंत्रित करने, पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा बुनियादी ढांचा और स्वास्थ्य-देखभाल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कानून बनाना होगा। निजी क्षेत्र को इन गतिविधियों के मुख्य संचालक के तौर पर काम करना होगा और विकास प्रक्रिया को गति देनी होगी; साथ ही उनका संरक्षण भी करना होगा। सरकार और निजी क्षेत्र, दोनों को ही स्थायित्व की सुरक्षा करनी होगी और स्थानीय समुदाय के सामाजिक तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा देना होगा।

दो अध्ययन

पर्यटन, खास तौर से पर्यावरण के प्रति हमारे बुनियादी दृष्टिकोण को हाल के दो मामलों के संक्षिप्त तथ्यों द्वारा बेहतर तरीके से निरूपित किया जा सकता है। एक का संबंध उत्तर भारत के जम्मू क्षेत्र में स्थित वैष्णो देवी मंदिर से है और दूसरे का पश्चिम भारत के महाराष्ट्र में स्थित अजंता एलोरा गुफाओं से।

सभी स्थलों पर पर्यावरण-शिक्षा और प्रकृति से सामंजस्य बिठाकर रहने की प्राचीन परम्परा फिर से पैदा करना हमारी राष्ट्रीय नीति का बुनियादी घोषणा-पत्र होना चाहिए। समग्र एकता में हमारे बुनियादी विश्वास की पुर्नव्याख्या और उसका सुदृढ़ीकरण तथा ब्रह्मांड के अद्वैतवाद यानी 'सभी में एक और एक में सब' हमारी कार्यसूची में सबसे ऊपर होने चाहिए।

वैष्णो देवी मंदिर

माता वैष्णो देवी का मंदिर भारत के बहुत ही सम्मानित मंदिरों में एक है। यह शक्तिपंथ से संबंधित है जो माता देवी के आर्य-पूर्व पंथ से जुड़ा है। यह मंदिर, जो कि वास्तव में एक प्राकृतिक गुफा मंदिर है, जम्मू से 45 किलोमीटर दूर त्रिकूट पर्वत पर स्थित है। इसके सबसे नजदीक का कस्बा 'कटरा' है जहां से श्रद्धालु 6 हजार फीट की यह ऊंचाई चढ़ते हैं। इस पवित्र गुफा में तीन पिंड्स मौजूद हैं—तीन मूर्तियां, जो तीन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं—बुद्धि की देवी 'महासरस्वती' का, धन की देवी 'महालक्ष्मी' का, और मनोरंजन की देवी 'महाकाली' का।

मंदिर के प्रबंध और परिसर के आसपास की स्थिति में सुधार के लिए एक कानून बनाया गया है। इसके तहत माता वैष्णो देवी मंदिर बोर्ड के नाम से एक स्वायत्त बोर्ड का गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष राज्यपाल होते हैं। मंदिर और इसके आसपास के परिसर का पूरा प्रबंध इस बोर्ड को सौंप दिया गया है। बोर्ड के कोष में जो दान-दक्षिणा जमा होती है, उसे मानवीय और विकास योजनाओं पर खर्च किया जाता है।

इस मंदिर-कोष से वहां तीव्र सुधार किए गए। बहुत ही कम समय में पूरा 14 किलोमीटर का मार्ग चौड़ा किया गया, उसे पक्का बनाया गया, उस पर टाइल्स लगाए गए तथा मार्ग में करीब एक हजार सोडियम-वेपर लैम्प लगाए गए। 10 लाख से अधिक टाइल्स लगाए गए; लगभग 5 हजार मुंडेर-दीवारों का निर्माण किया गया; खतरनाक स्थानों पर करीब दो हजार मीटर रेल (रेलिंग) लगाई गई; 26 'शरणस्थल सह कैफेटेरिया' इकाईयां स्थापित की गई; हजारों फ्लश शौचालयों, वैक्यूम क्लीनरों, फोगिंग मशीनों तथा झाड़ुओं सहित सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। इसके अलावा हजारों कम्बलों का भी इंतजाम किया गया जो ड्राईक्लीनिंग संयंत्रों से धोए जाते हैं। सैकड़ों नए विश्रामघर, दुकानें, कियोस्क, बनाए गए। परिसर में व्यापक वृक्षारोपण के अलावा

फूलों और झाड़ियों वाले 60 हरित क्षेत्र बनाए गए। चिकित्सालय, स्कूल और कार्यकेन्द्र खोलकर आसपास के गांवों और छोटे शहरों में रहने वाले लोगों को मानवीय सेवा प्रदान की गई। इधर-उधर बिखरे इतिहास के कुछ उपेक्षित अवशेषों, जैसे कि बाबा जीट्टो और जनरल जोरावर सिंह के स्मारकों को पुनरुज्जीवित किया गया।

अब वैष्णो देवी मंदिर अपने आप में एक सुधारात्मक भावना का रूप, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का प्रतीक, तथा प्रशासन में सृजनात्मक तथा गतिशीलता का आदर्श बन गया है। यह परिस्थिति हमारे जन-साधारण और आध्यात्मिक जीवन की तलाश करने वाले उस व्यक्ति को भी प्रभावित करती है जो आधुनिक विज्ञान द्वारा उपलब्ध कराई गई आंतरिक और बाह्य दृष्टि की अवधारणा से सामंजस्य स्थापित कर सकता है। मंदिर कोष का 50 से 60 करोड़ रुपया प्रतिवर्ष क्षेत्र के आसपास रहने वालों के आर्थिक विकास और पर्यावरण उन्नति पर खर्च किया जाता है। इसका असर भी पड़ा है। तीर्थयात्रियों की संख्या वार्षिक दस लाख से बढ़कर 50 लाख पर पहुंच गई है। रोजगार के अवसर तथा स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं का लाभ ज्यादातर स्थानीय आबादी को मिला है। इतिहास और विरासत को भी संरक्षित किया गया है और उसे मजबूत आधार प्रदान किया गया है। विकास और संरक्षण की आवश्यकताओं में प्रभावशाली तरीके से सामंजस्य बिठाया गया है। भौतिक और आध्यात्मिक बंजरभूमि के स्थान पर अब इस मंदिर परिसर के आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में हरियाली ला दी गई है।

अजंता-एलोरा गुफाएं

अजंता-एलोरा गुफाएं प्राचीन हैं। इन्हें पहाड़ियां काट कर बनाया गया है तथा इनमें उत्तम चित्रकारी और रेखांकन है। इन्हें दुनिया की महत्वपूर्ण अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों में गिना जाता है और यह भारत की समृद्ध कला का शक्तिशाली प्रतीक भी है। इन गुफाओं को 'विश्व-विरासत स्मारक' घोषित किया गया है।

अजंता में तीस गुफाएं हैं जिनमें से एक अधूरी है। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी के बीच इन गुफाओं का निर्माण हुआ। इनके अंदर की चित्रकारी का विषय बुद्ध और जातक हैं। जो चित्र उकेरे गए हैं, उनकी गहन मानवीयता और चित्रकार की संवेदनशीलता इन चित्रों को अद्वितीय बनाती है। वास्तव में यह भारत में पहली विकसित चित्रकारी का प्रमाण है जो बौद्ध धर्म के विस्तार के साथ ही हिमालय क्षेत्र में फैल गई और वहां से सिल्क मार्ग से होते हुए मध्य एशिया और फिर चीन तथा वहां से जापान और कोरिया तक पहुंच गई। एलोरा में 34 गुफाएं हैं और इनका अपना ही महत्व है। ये भारत की उत्कृष्ट कलात्मक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं जो तीन महत्वपूर्ण विश्वासों—बौद्ध धर्म, ब्राह्मवाद और जैन धर्म से जुड़ा है। पहाड़ी काटकर बनाया गया मंदिर 'कैलाश' खासतौर से उल्लेखनीय है क्योंकि इसका जो अनुपात है, इसमें जिस कारीगरी का इस्तेमाल किया गया है और इसमें जिस तरह के वास्तुशिल्प का प्रयोग किया गया है वह और कहीं देखने को नहीं मिलती।

संरक्षण और विकास के दोहरे लक्ष्य के लिए और उस पुराने समय को फिर से हासिल करने के लिए, जब आध्यात्मिक शांति थी, सहयाद्री पहाड़ी के आसपास घना जंगल था और वाघोरा उपनदी में पानी का शोर था, जापान के अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता बैंक की वित्तीय सहायता से जीर्णोद्वार के लिए एक व्यापक योजना बनाई गई। अब इसे तेजी से लागू किया जा रहा है। निकट के हवाई अड्डे तथा औरंगाबाद से गुफास्थल तक की पूरी 160 किलोमीटर लंबी सड़क को उन्नत बनाया जा रहा है और आसपास की 730 हेक्टेयर भूमि में पेड़ लगाए जा रहे हैं। आसपास की पहाड़ियों को मनोरम दृश्य से सुसज्जित किया जा रहा है। चित्रों का संरक्षण किया जा रहा है और गुफाओं में आप्टिक फाइबर की हल्की रोशनी की जा रही है। गुफाओं से दो किलोमीटर दूर एक पर्यटक-केन्द्र बनाया जा रहा है जिसमें सभी तरह की आधुनिक सुविधाएं और वाहनों की पार्किंग की व्यवस्था है। इसके आसपास काफी हरियाली भी है। एक व्यावसायिक-केन्द्र भी विकसित किया जा रहा है। ये दुकानें स्थानीय लोगों को आवंटित की जाएंगी। इस केन्द्र के विकास और प्रबंध से जो रोजगार संभावनाएं पैदा होंगी, उनमें कुछ अन्य सदस्यों को भी जगह दी जाएगी। इस स्थल पर एक द्विभाषी-सह-सूचना केन्द्र भी बनाया जा रहा है। इस केन्द्र से पर्यटक विद्युत ट्राली के जरिए ही गुफाओं में जा सकेंगे जिससे एक बेहतर पर्यावरण का विकास होगा और पर्यटकों को प्रकृति की अनूठी अनुभूति मिल सकेगी। साथ ही वे कला तथा मानवीय कौशल का संदेश भी प्राप्त कर सकेंगे। यह पूरा काम अगले दो से तीन महीनों में पूरा हो जाने की संभावना है।

अन्य परियोजनाएं

इस व्यापक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए बड़ी संख्या में अन्य परियोजनाएं भी शुरू की गई हैं और आशा है कि पर्यावरण पर्यटन के क्षेत्र में जल्द ही यह भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन जाएगी। ❑

(श्री जगमोहन केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री हैं। यह लेख फरवरी, 2002 में मालदीव में एशिया-प्रशांत मंत्री स्तरीय सम्मेलन में दिए गए उनके भाषण पर आधारित है।)

G.S.

(हिन्दी माध्यम)

IAS TUTORIALS

Mains + Prelims + Essay + English

(राजस्थान, छत्तीसगढ़, M.P. PSC के लिए विशेष)

By **R. Kumar & Team**

Mr. R. Kumar (B.E.)
Dr. P.N. Singh (Ex. HOD, Economics)
(B.U., इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय)
Dr. A.K. Khanna (पुरातत्व विभाग)

"इनकी विशेषता इनके बड़े होने में नहीं, हिन्दी माध्यम से UPSC Oriented होने में है।"

⇒ GS निर्णायक होते हुए भी केवल 250 अंक क्यों? 350 से 400 अंक क्यों नहीं!

हम इस चुनौती को स्वीकार करते हैं क्योंकि हम तथाकथित भाग्य विधाताओं से अलग हैं–

तथाकथित भाग्य विधाता

- वे IAS बनाने का दावा करते हैं।
- वे 30 से 40 क्लास में कोर्स (Mains cum Pre.) पूरा करा देते हैं।
- पूरे कोचिंग के दौरान पढ़ने वाले 5 प्रश्न का उत्तर भी लिखकर चेक नहीं करा पाते।
- क्लास खत्म होने के बाद उनसे आपका कोई संबंध नहीं रह जाता।
- उनके पास समयाभाव, साथ ही लड़कों से जुड़ने की इच्छा भी नहीं।

R. Kumar & Team

- हम IAS बनने योग्य तैयार करते हैं।
- हम 100 से 120 क्लास तक कमांडो टाईप ट्रेनिंग देते हैं।
- क्लास टेस्ट के अलावा प्रतिदिन 2 से 3 प्रश्न लिखकर लाने की बाध्यता सभी R. Kumar द्वारा व्यक्तिगत रूप से जांच एवं सुझाव।
- जब तक आप अपना लक्ष्य पा न जाय तब तक दुबारा क्लास करने या अन्य किसी समस्या के समाधान के लिए पूर्ण स्वतंत्र।
- R. Kumar का व्यवहार, परिश्रम एवं लड़कों से स्वभाविक जुड़ाव सबसे बड़ी विशेषता।

नोट – *वर्तमान कठिन प्रतियोगिता की स्थिति में कोचिंग से जुड़ना अपरिहार्य है, लेकिन कोचिंग के चुनाव का निर्णय यदि गलत हुआ तो आप अपने लक्ष्य से दूर भी हो सकते हैं और यदि यह सही हुआ तो आप अपना लक्ष्य पा सकते हैं।*

इतिहास (मुख्य परीक्षा) बिल्कुल अनौपचारिक तरीके से पठन–पाठन "हम सर्वज्ञ बनाने का दावा नहीं करते। लेकिन अधिकतम अंक मंगवाने का दावा अवश्य करते है।" *इसके निम्न दो तरीके हैं–*

- इतिहास के सभी अध्याय से बनने वाले सभी संभावित प्रश्नों के उत्तर का ढाँचा बनाना अर्थात् शुरुआत बीच एवं निष्कर्ष क्या?
- ढाँचा बनने के बाद पूरे इतिहास को निरंतरता एवं परिवर्तनीयता की दृष्टि से अध्ययन करते हुए तथ्यों को याद करना।

नामांकन जारी

IAS TUTORIALS

103, Jaina House, Behind Safal Mother Dairy, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9 Ph. : (O) 011-7651392, Mob. : 9810664003 (R) 7252444

पर्यावरण-पर्यटन
समस्याएं और संभावनाएं

○ संतोष यादव

विश्व के कुल भू-भाग के दस प्रतिशत हिस्से में पर्वत हैं, जहां कुल आबादी का मात्र चार प्रतिशत लोग रहते हैं। किन्तु वे तराई में रहने वाले 40 प्रतिशत लोगों के भाग्य का फैसला करते हैं, यह तथ्य कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि पर्यटन ढांचे की आयोजना और विकास, उसके परवर्ती परिचालन और उसके विपणन में पर्यावरण, तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिरता के मापदंडों पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणाली के विश्वव्यापी महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने और पर्वतीय लोगों की कठिनाइयों एवं चुनौतियों को उजागर करने तथा दीर्घावधि ठोस उपाय करने के बड़े अभियान के तहत संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2002 को 'अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष' घोषित किया। अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मनाने में एक बड़ी चुनौती और अवसर, दोनों ही मौजूद हैं। 1992 में रिओ डी जेनेरो में हुए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन में कार्य सूची 21 के अध्याय-13 में पर्वत श्रेणियों पर ध्यान केन्द्रित किया गया था और उन्हें स्थाई विकास का आधार बताया गया था। इससे पर्वतीय मुद्दों के समाधान के लिए एक पर्वतीय संस्कृति का विकास हुआ। अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष इसी क्रम को आगे बढ़ाने का अभूतपूर्व अवसर प्रदान करता है। यह वास्तव में 1992 में रिओ डी जेनेरो में हुए पृथ्वी सम्मेलन से आरंभ हुई दीर्घकालीन प्रक्रिया के भीतर एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका लक्ष्य स्थाई पर्वतीय विकास को मूर्त रूप देने की ठोस कार्यवाही के बारे में जन-जागरूकता पैदा करना, और उसके लिए समुचित राजनीतिक, संस्थागत और वित्तीय प्रतिबद्धता सुनिश्चित करना है। अनेक स्थानों पर पर्वतीय लोग दुनिया के निर्धनतम और सर्वाधिक अभावग्रस्त लोगों में हैं। उन्हें विकास मार्ग में बड़ी बाधाओ का सामना करना पड़ता है, जैसे ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र, संचार एवं परिवहन प्रणालियों का अभाव, राजनीतिक पृथक्करण और शिक्षा तथा पूंजी तक सीमित पहुंच। इन परिस्थितियों में अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष का लक्ष्य इस बात की पुख्ता व्यवस्था करना है कि पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के स्थाई विकास को बढ़ावा देकर पर्वतीय लोगों को खुशहाल बनाया जाए। किसी राष्ट्र द्वारा यह लक्ष्य हासिल करने के लिए शांति और खाद्य सुरक्षा दो पूर्वापेक्षाएं हैं। वास्तव में आज जब हम अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मना रहे हैं, लक्ष्य हासिल करने की दिशा में एकमात्र बड़ी रुकावट संघर्ष है। शांति के बिना हम गरीबी दूर नहीं कर सकते। शांति के बिना हम सुरक्षित खाद्यापूर्ति की गारंटी नहीं दे सकते। इतना ही नहीं, शांति के बिना हम स्थाई विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। तथ्य यह है कि सशस्त्र-संघर्ष और भुखमरी सबसे बड़ी बाधाएं हैं। उदाहरण के लिए 1999 में दुनिया के 27 प्रमुख सशस्त्र संघर्षों में 23 ऐसे थे जो पर्वतीय क्षेत्रों में हुए। आज विश्व भर में कुपोषणग्रस्त करीब 80 करोड़ लोग पर्वतीय क्षेत्रों में रह रहे हैं।

नई सहस्राब्दि के आगमन के साथ पृथ्वी के परिमित, परस्पर-सम्बद्ध और अनमोल स्वरूप के बारे में हमारी जागरूकता निरंतर बढ़ रही है। इसी तरह इस जागरूकता की अभिव्यक्ति के रूप में पर्यटन निरंतर लोकप्रिय हो रहा है। परिवहन और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ धरती के अधिकाधिक दूर-दराज के क्षेत्र यात्रियों की पहुंच के दायरे में आ रहे हैं। वास्तव में पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग

है और प्राकृतिक पर्यटन इसका सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिस्सा है।

वर्ष 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण-पर्यटन वर्ष भी घोषित किया गया है। चूंकि अधिकतर पर्यटन गतिविधियां पर्वतीय क्षेत्रों में होती हैं, इसलिए यह वर्ष पर्वत और पर्यटन संबंधी सहक्रियाओं से लाभ उठाने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। इस लेख में पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण-पर्यटन के नए पहलुओं और स्थानीय समुदाय की भागीदारी के माध्यम से पर्वतीय विकास के स्थायी कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

पर्यावरण-पर्यटन की अवधारणा

पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग है (34 खरब डालर वार्षिक) और पर्यावरण-पर्यटन इस उद्योग का सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिस्सा है। कोस्टा रिका और बेलिज़ जैसे देशों में विदेशी मुद्रा अर्जित करने का सबसे बड़ा स्रोत पर्यटन ही है जबकि गुवाटेमाला में इसका स्थान दूसरा है। समूचे विकासशील उष्णकटिबंधी क्षेत्रों में संरक्षित क्षेत्र प्रबंधकों और स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के बीच संतुलन कायम करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्यावरण-पर्यटन भी इस महत्वपूर्ण संतुलन का एक पक्ष है। सुनियोजित पर्यावरण-पर्यटन से संरक्षित क्षेत्रों और उनके आस-पास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए दीर्घावधि जैव-विविधता संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच संबंध कायम करना होगा।

सामान्य शब्दों में पर्यावरण-पर्यटन का अर्थ है पर्यटन और प्रकृति-संरक्षण का प्रबंध इस ढंग से करना कि एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी हों और दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार—नए कौशल, आय और महिलाओं के लिए बेहतर स्तर सुनिश्चित किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण-पर्यटन वर्ष के रूप में मनाए जाने से पर्यावरण-पर्यटन के विश्वव्यापी महत्व, उसके लाभों और प्रभावों को मान्यता दी गई है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण-पर्यटन वर्ष हमें विश्व स्तर पर पर्यावरण-पर्यटन की समीक्षा का अवसर प्रदान करता है ताकि भविष्य में इसका स्थायी विकास सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त साधनों और संस्थागत ढांचे को मजबूत किया जा सके। इसका अर्थ है कि पर्यावरण-पर्यटन की खामियां और नकारात्मक प्रभाव दूर करते हुए इससे अधिकतम आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ प्राप्त किए जा सकें।

पर्यावरण-पर्यटन को अब सब रोगों की औषधि के रूप में देखा जा रहा है जिससे भारी मात्रा में पर्यटन राजस्व मिलता है और पारिस्थितिकी प्रणाली को कोई क्षति नहीं पहुंचती क्योंकि इसमें वन-संसाधनों का दोहन नहीं किया जाता। एक अवधारणा के रूप में पर्यावरण पर्यटन को भारत में हाल ही में बल मिला है, लेकिन एक जीवन पद्धति के रूप में भारतीय सदियों से इस अवधारणा पर अमल कर रहे हैं। पर्यावरण-पर्यटन को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है। इंटरनेशनल इको-टूरिज्म सोसायटी ने 1991 में इसकी परिभाषा इस प्रकार की थी: ''पर्यावरण-पर्यटन प्राकृतिक क्षेत्रों की वह दायित्वपूर्ण यात्रा है जिससे पर्यावरण संरक्षण होता है और स्थानीय लोगों की खुशहाली बढ़ती है।''

विश्व पर्यटन संगठन (डब्यूटीओ) द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार ''पर्यावरण-पर्यटन के अंतर्गत अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रों की ऐसी यात्रा शामिल है जिसका निर्दिष्ट लक्ष्य प्रकृति का अध्ययन और समादर करना तथा वनस्पति और जीव-जंतुओं के दर्शन का लाभ उठाना तथा साथ ही इन क्षेत्रों से संबद्ध सांस्कृतिक पहलुओं (अतीत और वर्तमान, दोनों) का अध्ययन करना है।'' वर्ल्ड कंजर्वेशन यूनियन (आईयूसीएन, 1996) के अनुसार पर्यावरण-पर्यटन का अर्थ है ''प्राकृतिक क्षेत्रों की पर्यावरण-अनुकूल यात्रा ताकि प्रकृति की (साथ ही अतीत और वर्तमान की सांस्कृतिक विशेषताओं की) प्रशंसा की जा सके और उनका आनंद उठाया जा सके, जिससे संरक्षण को प्रोत्साहन मिले, पर्यटकों का असर कम पड़े और स्थानीय लोगों की सक्रिय सामाजिक-आर्थिक भागीदारी का लाभ उठाया जा सके।'' संक्षेप में, इसकी परिभाषाओं में तीन पहलुओं को रेखांकित किया गया है—प्रकृति, पर्यटन और स्थानीय समुदाय। सार्वजनिक पर्यटन से इसका अर्थ भिन्न है, जिसका लक्ष्य प्रकृति का दोहन है। संरक्षण, स्थिरता और जैव-विविधता पर्यावरण पर्यटन के तीन परस्पर संबद्ध पहलू हैं। विकास के एक साधन के रूप में पर्यावरण पर्यटन 'जैव विविधता समझौते' के इन तीन बुनियादी लक्ष्यों को हासिल करने में मदद दे सकता है :-

- संरक्षित क्षेत्र प्रबंध प्रणालियां (सार्वजनिक या निजी) मजबूत बनाकर और सुदृढ़ पारिस्थितिकी प्रणालियों का योगदान बढ़ाकर जैव-विविधता (और सांस्कृतिक विविधता)का संरक्षण।
- पर्यावरण पर्यटन और संबद्ध व्यापार नेटवर्क में आमदनी, रोजगार और व्यापार के अवसर पैदा करके जैव-विविधता के स्थायी इस्तेमाल को प्रोत्साहन, और
- स्थानीय समुदायों और जनजातीय लोगों को पर्यावरण-पर्यटन गतिविधियों के लाभ में समान रूप से भागीदार बनाना और इसके लिए पर्यावरण-पर्यटन व्यापार की आयोजना और प्रबंध में उनकी पूर्ण सहमति एवं भागीदारी प्राप्त करना।

पर्यावरण-पर्यटन का जबरदस्त सिद्धांतों,

दिशा-निर्देशों और स्थिरता मानदंडों पर आधारित) प्रमाणन की ओर अभिमुख होना इसे पर्यटन क्षेत्र में असाधारण स्थान प्रदान करता है। पहली बार इस धारणा को परिभाषित किए जाने के बाद के वर्षों में पर्यावरण-पर्यटन के अनिवार्य बुनियादी तत्वों के बारे में आम सहमति बनी है जो इस प्रकार है: भली-भांति संरक्षित पारिस्थितिकी-प्रणाली पर्यटकों को आकर्षित करती है, विभिन्न सांस्कृतिक और साहसिक गतिविधियों के दौरान एक कर्त्तव्यनिष्ठ, कम असर डालने वाला पर्यटक-व्यवहार, पुनर्भरण न हो सकने वाले संसाधनों की कम से कम खपत, स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी, जो प्रकृति, संस्कृति अपनी जातीय परंपराओं के बारे में पर्यटकों को प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं और अंत में स्थानीय लोगों को पर्यावरण-पर्यटन का प्रबंध करने के अधिकार प्रदान करना ताकि वे जीविका के वैकल्पिक अवसर अपनाकर संरक्षण सुनिश्चित कर सकें तथा पर्यटक और स्थानीय समुदाय—दोनों के लिए शैक्षिक घटक शामिल कर सकें।

पर्यावरण-अनुकूल गतिविधि होने के कारण पर्यावरण-पर्यटन का लक्ष्य पर्यावरण मूल्यों और शिष्टाचार को प्रोत्साहित करना तथा निर्बाध रूप में प्रकृति का संरक्षण करना है। इस तरह यह पारिस्थिति-विषयक अखंडता में योगदान करके वन्य जीवों और प्रकृति को लाभ पहुंचाता है। स्थानीय लोगों की भागीदारी उनके लिए आर्थिक लाभ सुनिश्चित करती है जो आगे चलकर उन्हें बेहतर स्तर और आसान जीवन उपलब्ध कराती है।

जब क्षेत्र में परिस्थितियां (जैसे व्यवहार्यता, स्थानीय स्तर पर प्रबंध-क्षमता और पर्यावरण-पर्यटन विकास तथा संरक्षण के बीच स्पष्ट एवं नियंत्रित संपर्क) सही हों तो सुनियोजित एवं व्यवस्थित पर्यावरण-पर्यटन दीर्घावधि जैव-विविधता संरक्षण के सर्वाधिक कारगर उपकरणों में एक सिद्ध होता है।

विश्व परिदृश्य

पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियां बेजोड़ रचनाएं हैं जिनमें एक साथ कई विशिष्टताएं होती हैं। उन्हें ईश्वर का वास, शांति, स्थिरता और संयम के प्रतीक तथा सभ्यताओं के पालने के रूप में देखा जाता है। पर्वतश्रेणियां सूक्ष्म पारिस्थितिकी प्रणालियां हैं और धरती पर जल-गुंबदों, समृद्ध जैव-विविधता, खनिजों और वन भंडारों, मनोरंजन के लक्षित क्षेत्रों और सांस्कृतिक एकता तथा विरासत के केंद्रों के रूप में विश्वभर में उनका महत्व है। विश्व के भू-तल क्षेत्र के पांचवें हिस्से में पर्वत हैं, जो मानव मात्र की कुल आबादी के दसवें भाग को प्रत्यक्ष जीविका प्रदान करते हैं। पर्वतों पर समृद्धतम मानव सभ्यताओं का वास रहा है। धरती पर सभी प्रकार के जीवन के लिए पर्वतों का महत्व है। वे ताजा जल का अनिवार्य स्रोत भी हैं। 3 अरब से अधिक लोग ऐसे हैं जो खाद्य फसलें उगाने, बिजली पैदा करने, उद्योगों को स्थिरता प्रदान करने और सबसे महत्वपूर्ण, पेय जल के लिए पर्वतों पर निर्भर हैं। पर्वत आज भी एक तंत्र प्रदान करते हैं जिससे वैश्विक संचरण से बारिश करते हैं जिससे वैश्विक संचरण से बारिश होती है। किंतु, पारिस्थितिकी ह्रास के कारण क्षेत्रीय जलीय चक्र गंभीर रूप से दुष्प्रभावित हो रहा है

पर्वतीय जगत आज संकटपूर्ण पारिस्थितक अवस्था में है

और इससे जल-गुंबदों के रूप में पर्वतों की भूमिका निरंतर समाप्त होती जा रही है। पर्वतीय क्षेत्रों में ''ग्रीन हाउस इफेक्ट'' के गंभीर दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे। जून 1992 में रिओडी जेनेरोमें संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एवं विकास सम्मेलन में विचारित पर्वतीय कार्यसूची में कहा गया था, ''हिमनदों (ग्लेशियर्स) और बर्फ की चोटियों को आधार प्रदान वाले पर्वतीय क्षेत्रों में ताप वृद्धि से न केवल बर्फ रेखा की ऊंचाई बढ़ेगी, बल्कि पिघलती बर्फ और हिम से जल-प्रवाह भी बढ़ेगा। हिमनद अपने में जलाशय हैं, अगर वे पिघल गए तो भविष्य में जलप्रवाह में नाटकीय बदलाव आएगा और पानी की भारी किल्लत हो सकती है।''

फिर भी, आज पर्वतीय जगत संकटपूर्ण पारिस्थितिकी अवस्था में है। मानव की गतिविधियों के कारण जैव-भौतिक और सामाजिक-आर्थिक संसाधनों का आधार खतरनाक रूप में क्षीण होता जा रहा है। इंटरनेशनल सेंटर फार इंटेग्रेटिड माउंटेन डिवेलपमेंट (आईसीआईएमओडी), काठमांडू, नेपाल, द्वारा कराए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि पर्वत श्रेणियां अस्थिरता की स्थिति में हैं। निचले क्षेत्रों के पर्यावरण की तुलना में पर्वतीय क्षेत्रों की स्थिति अधिक नाजुक है। दुनिया भर में अस्थिर वानिकी और कृषि पद्धतियों की वजह से अनेक पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों का ह्रास हो रहा है जो अक्सर गरीबी, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या का नतीजा है। वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि पर्वत धरती का तापमान बढ़ने का संकेत देने वाले बैरोमीटर हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमनद, जो विश्व की अधिकतर नदी-प्रणालियों का जल स्रोत हैं, अभूतपूर्व तेजी से पिघल रहे हैं।

भारत की स्थिति

भारत में सात प्रमुख पर्वतश्रेणियां हैं और उनमें सबसे महत्वपूर्ण है हिमालय पर्वतश्रेणी। भारत को वैभवशाली हिमालयी पर्वतश्रेणी विरासत में मिली है जो देश के समूचे उत्तरी भाग को भोजन प्रदान करती है। यह पर्वतमाला स्थिरता और शांति का पर्याय बन चुकी है। 2500 किलोमीटर से अधिक लंबी हिमालय पर्वतमाला भारतीय उपमहाद्वीप के शिखर से गुजरती है। इस पर्वतमाला के 5 से 6 करोड़ वर्ष पहले अस्तित्व में आने का अनुमान है। शिवालिक पर्वतश्रेणी सबसे बाद में अस्तित्व में आई, जिसे निचली गिरिपीठ कहा जाता है। शिवालिक से ऊपर निम्न हिमालय श्रेणी है, जिस पर शिमला, डलहौजी, मसूरी, नैनीताल और दार्जिलिंग जैसे भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय पर्वतीय सैरगाह हैं, जो समुद्र तल से 4 से 8 हजार फुट की ऊंचाई पर हैं। निम्न हिमालय से ऊपर बृहत् हिमालय श्रेणी या हिमाद्री पर्वतमाला है।

हिमाद्री में एवरेस्ट और अन्नपूर्णा चोटियां हैं जो नेपाल राज्य की सीमा में आती हैं, और कंचनजंगा, नंगा पर्वत और नंदा देवी चोटियां भारतीय सीमा में हैं। अरावली पर्वतमाता विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत श्रेणी है जो दक्षिण-पश्चिम में दिल्ली और गुजरात के बीच फैली है। इसकी चोटियां कभी बर्फ से ढंकी रहती थी, जो आज नहीं है, लेकिन इस पर्वत श्रेणी पर एक पर्वतीय सैरगाह 'माउंट आबू' और एक चोटी 'गुरु शिखर' आज भी मौजूद हैं जो 6000 फुट से अधिक ऊंचे हैं।

विंध्य पर्वतमाला उत्तर भारत के विस्तृत गंगा मैदान को देश के दक्षिणी भाग से अलग करती है। इसकी लंबाई करीब 1000 कि.मी. और औसत ऊंचाई 974 फुट है। विंध्य श्रेणी के दक्षिण में सतपुड़ा पर्वतमाला है जो उसके समानांतर फैली है। सतपुड़ा का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है, 'सत्' का अर्थ है 'सात' और 'पुड़ा' का अर्थ है 'मोड़', यानी सात पंक्तियों वाली पर्वतमाला है, सतपुड़ा। इस पर्वत श्रेणी में एक पर्वतीय सैरगाह है, पचमढ़ी, जो इस शृंखला में सर्वाधिक ऊंचाई वाले बिंदु, धूपगढ़ के निकट स्थित है, जिसकी ऊंचाई

भारत के पर्वतीय स्थल

राज्य	पर्वतीय स्थलों के नाम
हिमाचल प्रदेश	चैल, चंबा, डलहौज़ी, धर्मशाला, कसौली, कांगड़ा, कुल्लू, मनाली, नाल्डेरा, परवानू, शिमला
जम्मू-कश्मीर	गुलमर्ग, जम्मू, पटनीटाप, सोनमर्ग, श्रीनगर
झारखंड	रांची
केरल	मन्नार, नेल्लियामपथि, वायनाड, देविकुलम, पीरुमाड, पोन्मुडी, तिरुवनंतपुरम, इडुक्की, पालक्काड, कन्नूर
उत्तरांचल	अल्मोड़ा, देहरादून, कौसानी, मसूरी, नैनीताल, पिथौरागढ़
मध्यप्रदेश	भेड़ाघाट
राजस्थान	माउंट आबू
महाराष्ट्र	महाबलेश्वर, पंचगनी, लोनावला, खांडला-कार्ला, माथेरान, अम्बोली, जवाहर, पन्हाला, चिखल्दरा
सिक्किम	गंगटोक
तमिलनाडु	कोडईकनाल, येरकाड, कोट्टाल्लिम, उधगमंडलम
पश्चिम बंगाल	दार्जिलिंग

4429 फुट है। सहयाद्रि पश्चिम की ओर से मानसून की बारिश ग्रहण करती है। इस क्षेत्र में एक पर्वतीय सैरगाह ऊटकमंड या ऊटी है, जिसे अब उधगमंडलम कहा जाने लगा है। यह सैरगाह 8615 फुट ऊंचाई वाले डोडाबेट्टा शिखर के निचले भाग में स्थित है। यह शिखर नीलगिरि (जिसका शाब्दिक अर्थ है नीला पर्वत) श्रेणी में स्थित है। नीलगिरि से ऊपर अन्नामलाई या ऐलिफेंट हिल्स पर्वत श्रेणी है, जिसका शिखर हाथी के मस्तक जैसा कहा जाता है। सुप्रसिद्ध पर्वतीय सैरगाह कोडाइकनाल पलानी पर्वत श्रेणी में स्थित है। पूर्वीघाट, जो सहयाद्रि श्रेणी की विपरीत दिशा में फैला है, वहां 3200 फुट ऊंचे शिखर हैं लेकिन कोई पर्वतीय सैरगाह नहीं है। इसके दक्षिण-पूर्व में शेवरोय पर्वतमाला और येर्काड पर्यटक-स्थल है। पूर्वांचल, या पूर्वी पर्वतमाला भारत की अंतिम बृहत पर्वत श्रेणी है जो देश के उत्तर-पूर्व में भारत-म्यांमार सीमा पर स्थित है।

दुर्भाग्य से भारत में पर्वत शृंखलाओं पर स्थानीय जीवन-निर्वाह के लिए संसाधनों का आधार निरंतर घट रहा है और पहले से कमजोर पर्यावरण का और ह्रास हुआ है। इसका नतीजा भूस्खलन, जलग्रहण क्षेत्रों का ह्रास और हिमालय क्षेत्र के दक्षिण में सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र थाले में घनी आबादी वाले मैदानी भाग में बार-बार बाढ़ के रूप में सामने आया है। कुमांऊ हिमालय में पिछले कुछ दशकों में मानव आबादी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है और तदनुरूप विकास गतिविधियां, जिनमें आवास, उद्योग, कृषि, खनन और संचार शामिल हैं, भी तेजी से बढ़ी हैं। नतीजतन प्राकृतिक वास और वनों का आकार तेजी से सिकुड़ रहा है।

पर्यटन उद्योग की वजह से भी वन-कटाई जैसी गतिविधियों को बल मिला है। साथ ही सड़क और भवन निर्माण और भारी वाहनों की आवाजाही से पहले से कमजोर पर्वत श्रेणियों पर अपकर्षक दबाव बढ़ा है। उत्साही युवाओं में ट्रैकिंग का नया चाव देखने को मिला है। उनके लिए ट्रैकिंग का अर्थ है जोखिम भरे पर्वतीय क्षेत्रों में चढ़ना-उतरना तथा बुनियादी नागरिक तथा स्वच्छता नियमों का पालन न करना, जो इस खेल के साथ जुड़े हैं। इस तरह ट्रैकिंग के उत्साही लोग पर्वतीय क्षेत्रों में ढेर सारा कचरा और पारिस्थितिकी को क्षति पहुंचाने वाली अन्य सामग्री छोड़ देते हैं। यही वजह है कि यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और गौमुख जैसे दूर-दराज के स्थान भी पर्यावरण ह्रास की चपेट में आ रहे हैं।

पर्यटन विकास के किसी भी कार्यक्रम का अंतर्निहित लक्ष्य चुनिंदा क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक और भौतिक वातावरण पर रचनात्मक प्रभाव डालना और नकारात्मक प्रभावों को कम से कम करना होना चाहिए और इस विकास से संरक्षण और स्थानीय समुदायों के लाभ के महत्वपूर्ण अवसर पैदा होने चाहिए।

इन तीर्थस्थानों की पवित्रता दिन-ब-दिन नष्ट की जा रही है।

पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण-पर्यटन

पर्यावरण-पर्यटन का सार चूंकि प्रकृति की प्रशंसा और बाहरी मनोरंजन है, अत: इसके अंतर्गत ट्रैकिंग, हाइकिंग, पर्वतारोहण, पक्षी-पर्यवेक्षण, नौकायन, राफ्टिंग, जैव-वैज्ञानिक खोज, और वन्य-जीव अभयारण्यों की यात्रा जैसी व्यापक गतिविधियां शामिल हैं। एक तरह से यह साहसिक पर्यटन के सदृश है लेकिन उससे भिन्न इस दृष्टि से है कि साहसिक पर्यटन में जहां रोमांच की प्रमुखता होती है, वहीं पर्यावरण-पर्यटन में संतुष्टि पर बल दिया जाता है। इसका प्रेरणात्मक और भावनात्मक पहलू मूल्यवान है क्योंकि इसका लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास करना नहीं है।

भारत विश्व में जैव-विविधता संपन्न उन सात देशों में एक है जिनकी सांस्कृतिक विरासत समृद्धतम है। भारत में पर्यावरण-पर्यटन की व्यापक संभावनाएं हैं जिनका दोहन आर्थिक लाभ, स्वास्थ्य परिरक्षण और प्रकृति संरक्षण के लिए किया जाना चाहिए। पर्यावरण-पर्यटन के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष में सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा पर्यावरण-पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्वपूर्ण फैसले किए गए हैं। उदाहरणार्थ हिमाचल प्रदेश सरकार ने पर्यावरण-पर्यटन विकास नीति घोषित की है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया गया है। इसी तरह कर्नाटक, सिक्किम, राजस्थान और आंध्र प्रदेश के वन एवं पर्यटन विभागों ने अधिकारी मनोनीत किए हैं जो इन गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करेंगे। केरल द्वारा स्थापित 'तेन्माला' इको-टूरिज्म प्रमोशन सोसायटी पर्यावरण-पर्यटन का एक मॉडल तैयार करेगी। निजी क्षेत्र में भी पर्यावरण-अनुकूल सैरगाहों और होटलों की धारणा जोर पकड़ रही है।

स्पष्ट है कि समुचित आयोजना और प्रबंध के अभाव में संवेदनशील प्राकृतिक क्षेत्रों का पर्यटन पारिस्थितिकी प्रणाली और स्थानीय संस्कृति, दोनों की अखंडता के प्रति खतरा बन सकता है। पारिस्थितिकी की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में अधिक संख्या में पर्यटकों के जाने से पर्यावरण-ह्रास का गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसी तरह स्थानीय समुदायों और देशी संस्कृतियों को विदेशी पर्यटकों और धन के अंतर-प्रवाह से कई तरह का नुकसान हो सकता है।

पर्यटन-प्रोत्साहन और पर्यटन संबंधी

ढांचा-विकास गतिविधियों का प्राकृतिक आवास पर सामाजिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, भौतिक और पर्यावरण विषयक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है और विकास संबंधी फैसले करने से पहले वैज्ञानिक पद्धतियां अपनाते हुए इन प्रभावों का व्यवस्थित मूल्यांकन जरूरी है। इस तरह पर्यटन विकास के किसी भी कार्यक्रम का अंतर्निहित लक्ष्य चुनिंदा क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक और भौतिक वातावरण पर रचनात्मक प्रभाव डालना और नकारात्मक प्रभावों को कम से कम करना होना चाहिए और इस विकास से संरक्षण और स्थानीय समुदायों के लाभ के महत्वपूर्ण अवसर पैदा होने चाहिए।

पर्यावरण-पर्यटन से राष्ट्रीय उद्यानों और अन्य प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण के लिए अत्यावश्यक धन प्राप्त किया जा सकता है जो अन्य किसी स्रोत से संभव नहीं है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के निम्न आय वाले देशों में आज जो पुरातत्वीय और ऐतिहासिक संरक्षण किया जा रहा है, उसे आर्थिक दृष्टि से युक्तिसंगत बनाया जा सकता है क्योंकि इन देशों में पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण उपलब्ध हैं। श्रीलंका जैसे कुछ देशों में प्रवेश-शुल्क से एकत्र धन का इस्तेमाल प्रत्यक्ष रूप से पुरातत्वीय अनुसंधान और संरक्षण के लिए किया जाता है।

इतना ही नहीं, पर्यावरण-पर्यटन कुछ अन्य आमदनी विकल्पों के साथ स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास का व्यवहार्य विकल्प उपलब्ध करा सकता है। पर्यावरण-पर्यटन पर्यटकों में शिक्षा और सक्रियता का स्तर बढ़ा सकता है और उन्हें संरक्षण का अधिक उत्साही और प्रभावकारी एजेंट बना सकता है। परंपरागत कलाओं, हस्तशिल्पों, नृत्य, संगीत, नाटक, रीतिरिवाज, और उत्सव का संरक्षण और नवीनीकरण, तथा परंपरागत जीवनशैलियों के कुछ पहलू सीधे पर्यटन से जोड़े जा सकते हैं।

भारत में पर्यावरण-पर्यटन उद्योग को नीतिगत व्यापार योजनाओं के अभाव प्रशिक्षित स्थानीय प्राकृतिक गाइडों की कमी, उपयुक्त विपणन तकनीकों (पर्यटन और स्थानीय कामगार, दोनों के लिए) का अभाव, विकास परियोजनाओं में सामुदायिक सहमति प्राप्त करने के तरीकों का अभाव; और बुनियादी ढांचे का अभाव, आदि चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन विकास के लिए जिन क्षेत्रों पर मुख्य रूप से बल दिया गया और जिनका प्रभाव पर्यटन के वृहत और लघु संदर्भ में भौतिक आयोजना पर पड़ा, वे इस प्रकार हैं :

संरक्षण और आर्थिक विकास के साधन के रूप में पर्यावरण-पर्यटन की क्षमताओं को पहचानने के लिए नए और अधिक समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें स्थानीय क्षमता-निर्माण और स्थानीय स्तर पर लाभों में बढ़ोतरी पर अधिक बल दिया जा सके।

1. सीमित संसाधनों को बड़ी संख्या में सर्किटों/केन्द्रों पर खर्च करने की बजाय चुने हुए पर्यटक-सर्किटों और केन्द्रों का विकास, जो पर्यटकों में लोकप्रिय थे।
2. परंपरागत दर्शनीय-स्थलों (मुख्य रूप से सांस्कृतिक स्थलों) की यात्रा-केन्द्रित पर्यटन में विविधता लाते हुए पर्यटन-परियोजनाओं के सौंदर्यपरक, पर्यावरण विषयक और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति पूर्ण सजग रहते हुह देश के वातावरणीय फ्रेमवर्क के भीतर तेजी से बढ़ते हुए पर्यटन बाजार में प्रवेश करना।
3. गैर-परंपरागत क्षेत्रों, जैसे, (क) ट्रेकिंग; (ख) शीतकालीन खेल (विंटर स्पोर्ट्स); (ग) वन्यजीव पर्यटन, और (घ) समुद्रतट-सैरगाह पर्यटन का विकास, ताकि हिमालय के पर्यटन संसाधनों, रेतीले समुद्रतटों सहित विस्तृत तट रेखा और प्रचुर धूप तथा वन्यजीव संबंधी पर्यटन संसाधनों का दोहन करके अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके और देश में उनके प्रवास की अवधि लंबी की जा सके।
4. सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और दोनों ही प्रकार की पर्यटन महत्व की राष्ट्रीय विरासत परियोजनाओं की बहाली और संतुलित विकास ताकि सांस्कृतिक पर्यटन क्षेत्र के रूप में भारत को बेजोड़ स्थान बनाकर लाभ उठाए जा सकें और राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण में पर्यटन का एक प्रमुख शक्ति के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

पर्वतीय क्षेत्रों और प्राकृतिक वास की पर्यटन योजना के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए निम्नांकित से संबंधित विश्लेषणात्मक अध्ययन आवश्यक है :

1. स्थानीय पर्यावरण और पर्वतीय आबादी पर पड़ने वाले विकास के संभावित प्रभाव।
2. पर्यटक संसाधनों और बुनियादी-ढांचा जरूरतों का मूल्यांकन।
3. क्षेत्र की वहन क्षमता और ऐसे ही अन्य पहलुओं के अनुरूप विकास के विभिन्न द्वार कायम करना।

भारत में स्थाई पर्यावरण-पर्यटन कार्यक्रम से संबंधित नीति में निम्नांकित लक्ष्य अवश्य शामिल किए जाने चाहिए :

— भारत के लिए स्थाई विकास-नीति के फ्रेमवर्क में पर्यावरण-पर्यटन की भूमिका परिभाषित करना। पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण-पर्यटन के लिए पूर्व शर्तें

(निरंतर गतिशीलता, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक भू-परिदृश्यों आदि का संरक्षण और प्रबंध) निर्धारित करना।

— भारत में पर्वतीय पर्यावरण-पर्यटन में सर्वोत्कृष्ट पद्धतियों की पहचान।

— नीतियों का विकास : वैश्विक, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर पर्वतीय पर्यावरण-पर्यटन की नीतियां निर्धारित करना।

— जोखिम में पड़े ऐसे पर्यटक-स्थलों पर अनियंत्रित पर्यटन विकास से उत्पन्न खतरे कम करना, जिनके संरक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही हो।

— संरक्षित क्षेत्र में स्थित पर्यटक-स्थलों के संरक्षण के लिए दीर्घावधि वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना।

अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण-पर्यटन वर्ष मनाने के अवसर पर हमें सही अर्थों में कुछ लक्ष्य तय कर लेने चाहिए :-

- अगर हम प्रतिकूल प्रभावों को नियंत्रित करना चाहते हैं तो हमें पर्यटन के प्रभावों पर निगरानी के लिए एक पद्धति विकसित करनी होगी।
- समुदाय आधारित पर्यावरण-पर्यटन उद्यमों सहित स्थानीय समुदायों के साथ संयुक्त पर्यावरण-पर्यटन नीतियां विकसित करने के लिए भागीदारों को प्रशिक्षित करना।
- पर्यावरण-पर्यटन की आयोजना और प्रबंध में समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए दिशा-निर्देशों को प्रोत्साहित करना।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण-पर्यटन नीति लागू करने के लिए गैर-सरकारी संगठनों की सहायता करना और उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित करना।
- पर्यावरण-पर्यटन आयोजना, व्यवहार्यता मूल्यांकन और जहां उचित हो, व्यापार आयोजना के बारे में दिशा-निर्देश तैयार करना।
- आदर्श पर्यावरण-पर्यटन कार्यक्रम और यात्रावृत्तांत विकसित करने में सहायता करना, ताकि स्थल-संरक्षण साझीदारों और स्थानीय समुदायों को लाभ हो सके।

निष्कर्ष

संरक्षण और आर्थिक विकास के साधन के रूप में पर्यावरण-पर्यटन की क्षमताओं को पहचानने के लिए नए और अधिक समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें स्थानीय क्षमता-निर्माण और स्थानीय स्तर पर लाभों में बढ़ोतरी पर अधिक बल दिया जा सके। ढांचागत विकास का समुचित मॉडल विकसित करने; टूर आपरेटरों-गैर सरकारी भागीदारों का मार्गदर्शन करने संबंधी फ्रेमवर्क तैयार करने, स्थानीय प्रकृति-गाइडों के लिए कारगर प्रशिक्षण कार्यक्रम; और भागीदार, समुदाय-आधारित पर्यावरण-पर्यटन आयोजना और विकास आदि के लिए पद्धतियां और कौशल विकसित करने की परम आवश्यकता है। साहस, परिश्रम, ईमानदारी और शीघ्र निर्णय लेने जैसे अंतर्निहित गुणों का विकास समुचित मानव जाति की पूंजी के रूप में होना चाहिए। विश्व भर में 10 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्र में कुल मानव आबादी का मात्र 4 प्रतिशत लोग रहते हैं, लेकिन वे तराई में रहने वाले 40 प्रतिशत लोगों के भाग्य का निर्धारण करते हैं, इसे कभी नहीं भुलाया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि पर्यटन ढांचे की आयोजना और विकास, इसका परवर्ती परिचालन, और इसका विपणन करते समय हमें पर्यावरण तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिरता के मानदंडों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

भारतीयों को पर्यावरण पर्यटन के क्षेत्र में मालदीव की प्रगति से प्रेरणा लेनी चाहिए। मालदीव में चूंकि पर्यटन ही प्रमुख उद्योग है, वे पूरी तरह इस पर निर्भर हैं और उन्होंने अपनी समुद्री-चट्टानों के संरक्षण के तौर-तरीके विकसित किए हैं। सभी सैरगाहों और होटलों के लिए यह अनिवार्य और अपरिहार्य है कि वे अपने कचरे का निपटान करें, जल का संरक्षण करें और अपशिष्ट को फिर से काम में लाने (री-साइक्लिंग) की व्यवस्था करें। इंडोनेशिया, फिलीपीन्स और नेपाल जैसे अन्य देशों ने अपने स्थानीय समुदायों के लाभ के लिए पर्यावरण-पर्यटन से प्राप्त आय के उपयोग के कारगर तरीके विकसित किए हैं। उदाहरण के लिए फिलीपीन्स में मछुआरों को इस बात के लिए राजी किया गया कि वे 'ब्लास्ट फिशिंग' की बजाय अधिक परंपरागत और सुरक्षित तरीके अपनाएं। इंडोनेशिया में दुर्लभ पक्षियों की संरक्षा के लिए 'बर्डवाच' नामक परियोजना शुरू की गई है।

अधिकतर संरक्षित क्षेत्रों और उनमें रहने वाले समुदायों के लिए पर्यावरण-पर्यटन ऐसी संभावना है जिसका दोहन अभी नहीं किया गया है, और पारिस्थितिकी विकास तथा संरक्षण के बीच संबंध ठीक से नहीं समझा गया गया है। कुछ इक्का-दुक्का सफलताओं के बावजूद पर्यावरण-पर्यटन विकास के प्रयास अक्सर सीमित रहे हैं और उनमें मात्र बुनियादी-ढांचा विकास पर बल दिया गया है। यही वजह है कि इन प्रयासों से अधिकतम लाभ नहीं उठाया जा सका है। इसके अतिरिक्त यह धारणा भी रही है कि स्थानीय क्षमता विकास का लक्ष्य स्वयं हासिल करने की बजाय अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी सहायता और संस्थागत समर्थन के विकल्प से प्राप्त किया जाए। उम्मीद की जानी चाहिए कि इस वर्ष के दौरान इन सभी मुद्दों और पर्वतीय विकास कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी ताकि भविष्य बेहतर और स्थाई बनाया जा सके। ❑

(पद्मश्री से सम्मानित श्रीमती संतोष यादव दो बार ऐवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर चुकी हैं; वे फिल्हाल 'सोसायटी फार एन्वायरमेंटल अवेयरनेस एण्ड रिहैबिलिटिशन ऑफ चाइल्ड एंड हैंडिकैप्ड (सर्च)' की उपाध्यक्ष हैं।)

लोक प्रशासन

By Atul Lohiya

(A person who believes in hard work and scientific approach)

लोक प्रशासन ही क्यों?

क्योंकि आप एक लोक प्रशासक बनने जा रहे हैं।

— परीक्षा की चुनौतियों एवं बदलती परिस्थितियों के अनुरूप विषय
— इसकी महत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि जारी
— भविष्य में सामान्य अध्ययन के अनिवार्य भाग के रूप में लोक प्रशासन को शामिल किए जाने की अधिकतम संभावना
— वर्तमान समय में भी **अंकों के खेल** में सबसे आगे –
आपका अध्ययन 600 अंकों के लिए, लेकिन आप हल कर सकेंगे एक हजार से अधिक अंकों के प्रश्न
(वैकल्पिक विषय - 600 + निबंध - 200 + G.S. (Polity) - 90 + G.S. (Social Problem) + G.S. Current Affairs + साक्षात्कार
— और अब **परिणाम में भी सबसे आगे** –
IAS 2001 के TOP-20 में सर्वाधिक (7) लोक प्रशासन से
— लोक प्रशासन न पढ़ें, तब भी उसका 60-70 प्रतिशत सिलेबस सामान्य अध्ययन के भाग के रूप में हर परीक्षार्थी के लिए पढ़ना अनिवार्य।
— प्रत्येक परीक्षार्थी द्वारा जिज्ञासावश भी अधिकांश सिलेबस का अध्ययन, जैसे - भर्ती, प्रशिक्षण, अलग कमेटी, वेतन एवं सेवा शर्तें आदि।

क्या है कोई विकल्प इससे बेहतर?

लोक प्रशासन का चयन - उचित निर्णय और व्यावसायिक दृष्टिकोण

तो आइये करें - लोक प्रशासन के अध्ययन की शुरूआत, 'अतुल लोहिया' के साथ।

अतुल लोहिया ही क्यों?

क्योंकि केवल हम कराते हैं लोक प्रशासन का सम्पूर्ण एवं समग्र अध्ययन।

— **अध्यापन की शैली** - विशिष्ट व वैज्ञानिक
(दो घंटे से लेकर 200 घंटे तक एक कड़ी के रूप में पढ़ाने का दावा)
— **नोट्स** - वैज्ञानिक तरीके से तैयार पूर्णतः संशोधित व परिमार्जित Pre. और Mains के लिए अलग-अलग। संदर्भ : 80 से 85 स्रोत।
— केवल हमारे नोट्स से UPSC (Pre.) और UPPCS (Pre.) 2001 एवं 2002 में लगभग 90 प्रतिशत प्रश्न आए।
— **Revision Notes** - चार्ट के रूप में उपलब्ध कराने वाले एकमात्र शिक्षक।
— हम देते हैं प्रत्येक क्लास का 40 प्रतिशत समय प्रश्न अभ्यास में और शेष समय **विषय की बेहतर समझ एवं छात्रों की परिपक्व सोच** के विकास में।
— मुख्य परीक्षा के पहले प्रत्येक छात्र के लिए व्यक्तिगत रूप से पूरे सिलेबस का रिवीजन
— इसके अतिरिक्त आप प्राप्त कर सकते हैं –
प्रतियोगी वातावरण, कुशल परिचर्चा समूह, और भी...

'अतुल लोहिया'

शिक्षक, मार्गदर्शक और मित्र भी

Admission going on

पत्राचार पाठ्यक्रम भी उपलब्ध

MAINS - 2,000/-

MAINS + PRE. - 3,000/-

M.P. P.S.C. (Mains) के लोक प्रशासन (द्वितीय प्रश्न पत्र) की निःशुल्क तैयारी

IAS TUTORIALS

103, Jaina House, Behind Safal Mother Dairy, Mukherjee Nagar, Delhi-9 Ph. : (0) 7651392 Cell.: 9810651005

पर्यावरण-पर्यटन और पर्वतमालाएं

○ उषा बंदे

पर्वतमालाएं समस्त प्राकृतिक सौंदर्य का प्रारंभ और अंत हैं।

—जॉन रस्किन

पृथ्वी हमें पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली है; इसे हमने अपने बच्चों से उधार लिया है।

—एक अमेरिकी कहावत

'इको-टूरिज्म' या पारिस्थितिकी-पर्यटन दो अलग-अलग अवधारणाओं यानी पारिस्थितिकी और पर्यटन का सम्मिश्रण हैं। किंतु इन्हें एक साथ रखकर पारिस्थितिकी-संरक्षण और पर्यटन-विकास दोनों का ही महत्व बढ़ जाता है। जहां एक ओर पर्यटन को राजस्व अर्जित करने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझा जा रहा है; वहीं धरती की पारिस्थितिकी प्रणाली के संरक्षण के लिए पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य को अनिवार्य माना जा रहा है। इस तरह पारिस्थितिकी-पर्यटन ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण और पर्यटन के विकास में रचनात्मक योगदानकर्ता के रूप में विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। पर्वतमालाएं अपनी भव्यता, प्राकृतिक सौंदर्य और बेजोड़ पारिस्थितिकी प्रणाली की दृष्टि से चूंकि पर्यटकों के आकर्षण का विशेष केंद्र हैं, अत: उन्हें पारिस्थितिकी-प्रेमी पर्यटक गतिविधियों के लिए स्वर्ग समझा जाता है। ये गतिविधियां सामान्यत: बाहरी और साहसिक होती हैं।

सामान्यत: पारिस्थितिकी-पर्यटन का अर्थ है पर्यटन का प्रबंध इस ढंग से करना कि मानव प्रकृति के आंतरिक संतुलन को क्षति पहुंचाए बिना उससे अधिकतम लाभ प्राप्त करे। इसका लक्ष्य प्रकृति के साथ मानव का रिश्ता फिर से जोड़ना और यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय समुदायों की जरूरतें पूरी हों, तथा उनकी स्थानीय संस्कृति और परम्पराएं अक्षुण्ण रहें। पारिस्थितिकी-पर्यटन, पर्यटन उद्योग के पूर्ण एकीकरण को मान्यता प्रदान करता है ताकि यात्रा और पर्यटन क्षेत्री लोगों की आय का स्रोत बनें, साथ ही स्थानीय लोग पृथ्वी की पारिस्थितिकी प्रणाली के संरक्षण, सुरक्षा और बहाली में योगदान करें। इस तरह पर्यावरण-संरक्षण स्थाई पर्यटन का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। यह महत्वपूर्ण बात है कि पारिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य और पर्यटन जरूरतें आपस में इस तरह जुड़ी हैं कि वे सौंदर्यपरक, आर्थिक और सामाजिक जरूरतें तो पूरी करती ही हैं, सांस्कृतिक एकता, अनिवार्य पारिस्थितिकी प्रक्रिया, जैव-विविधता और जीवन को स्थाई बनाने वाली प्रणालियां भी सुनिश्चित करती हैं।

पारिस्थितिकी-पर्यटन को कई तरह से परिभाषित किया गया है, जैसे ''एक आर्थिक प्रक्रिया, जिसमें दुर्लभ और सुन्दर पारिस्थितिकी प्रणालियों का विपणन किया जाता है'', अथवा ''वन्य जीवों और अविकसित प्राकृतिक क्षेत्र का आनंद उठाने के विशेष लक्ष्य के लिए पर्यटन'' अथवा ''पर्यावरण संस्कृति और उसके प्राकृतिक इतिहास को समझने और इस बात का ध्यान रखने के लिए प्राकृतिक क्षेत्रों की उद्देश्यपूर्ण यात्रा, कि पारिस्थितिकी प्रणाली की अखंडता में बदलाव न आए....''। इन परिभाषाओं से दो विशेष प्रवृत्तियों का पता चलता है :

विश्व के सर्वाधिक जैव-विविधता वाले सात राष्ट्रों में भारत भी एक है। इसकी समृद्ध और प्राचीन सांस्कृतिक विरासत पर्यटकों को आकर्षित करती है और यहां पारिस्थितिकी-पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएं हैं जिनके माध्यम से संरक्षण और आर्थिक विकास की योजनाएं बनाई जा सकती हैं।

पहली यह कि पारिस्थितिकी-पर्यटन को एक उपभोक्ता वस्तु माना गया है और दूसरी यह कि पारिस्थितिकी-पर्यटन एक संतुष्टि प्रदान करने वाला अनुभव है। विश्व पर्यटन संगठन (डब्ल्यूटीओ) द्वारा दी गई परिभाषा अधिक उपयुक्त एवं व्यापक है। इसके अनुसार ''पारिस्थितिकी-पर्यटन प्रकृति और उसके वन्य पौधों और जीव-जंतुओं तथा इन क्षेत्रों में विद्यमान सांस्कृतिक पहलुओं (अतीत और वर्तमान दोनों) के अध्ययन, प्रशंसा और आनंद उठाने के विशेष लक्ष्य से किया जाने वाला ऐसा पर्यटन है जिसमें अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्रा की जाती है।'' इस तरह पारिस्थितिकी-पर्यटन पर्यावरण-अनुकूल गतिविधि है, क्योंकि इसमें प्रकृति के प्रति उपभोक्तावादी दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाता। इससे पर्यावरण विषयक नैतिकता को बल मिलता है और इस बात की पुख्ता व्यवस्था होती है कि पारिस्थितिकी-पर्यटकों को एक प्रेरणात्मक और भावात्मक संतुष्टि प्राप्त हो क्योंकि इसका लक्ष्य वन्य जीवों और पर्यावरण को लाभ पहुंचाना है। अंततः इससे स्थानीय विकास को प्रोत्साहन मिलता है तथा स्थानीय समुदायों को अधिकार प्राप्त होते हैं।

पारिस्थितिकी-पर्यटन को उस समय लोकप्रियता मिली जब संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2002 को 'पारिस्थितिकी-पर्यटन और 'पर्वत-श्रेणियों के वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की। इसका लक्ष्य जन-अधिकारियों, निजी क्षेत्र और सभ्य समाज में इस बात की जागरूकता पैदा करना है कि पारिस्थितिकी-पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा में योगदान की विशेष क्षमता रखता है। इससे इन क्षेत्रों में जीवनस्तर सुधारने और पारिस्थितिकी-पर्यटन के नियोजन एवं प्रबंधन तकनीकों के सम्प्रेषण में मदद मिलती है। इतना ही नहीं, पर्वतश्रेणियों पर ध्यान केंद्रित करने के पीछे लक्ष्य यह है कि पर्वतीय क्षेत्रों में तेजी से हो रहे पर्यावरण ह्रास की ओर विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया जाए। अनियंत्रित ट्रैकिंग और पर्वतारोहण अभियानों से पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुंची है, जिससे घाटियां और पहाड़ कचरा डालने के स्थान बनते जा रहे हैं। शिविरों में ठहरने वाले लोगों के लिए ईंधन की व्यवस्था करने से वनों का तेजी से ह्रास हो रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय पारिस्थितिकी-पर्यटन वर्ष की घोषणा से विश्व स्तर पर पारिस्थितिकी-पर्यटन की समीक्षा करने और स्थाई विकास की दिशा में संगठित प्रयास करने का अवसर मिला है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2002 को

पारिस्थितिकी-पर्यटन को उस समय लोकप्रियता मिली जब संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2002 को 'पारिस्थितिकी-पर्यटन और पर्वत-श्रेणियों के वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की। इसका लक्ष्य जन-अधिकारियों, निजी क्षेत्र और सभ्य समाज में इस बात की जागरूकता पैदा करना है कि पारिस्थितिकी-पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा में योगदान की विशेष क्षमता रखता है।

अंतर्राष्ट्रीय पारिस्थितिकी-पर्यटन वर्ष घोषित करने का एक लक्ष्य ''विभिन्न देशों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करना और विभिन्न संस्कृतियों में अंतर्निहित मूल्यों को बेहतर ढंग से समझना और विश्व शांति में योगदान करना'' भी है। भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र घोषणा की भावना के अनुरूप एक नई पर्यटन-नीति तैयार की है, जिसका लक्ष्य ''लोगों के बीच बेहतर समझ को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर पैदा करना और समुदाय, खासकर भीतरी और दूरदराज के क्षेत्रों को सामाजिक-आर्थिक लाभ पहुंचाना, संतुलित एवं सतत विकास की दिशा में प्रयास करना और भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित, समृद्ध और प्रोत्साहित करना'' है। नई पर्यटन नीति के प्रारूप में इस कार्यक्रम में लोगों की भागीदारी बढ़ाने के महत्व को स्वीकार किया गया है और इसे एक साझा प्रयास बनाने की बात कही गई है ताकि केंद्र और राज्य सरकार की एजेंसियों के इतर एजेंसियां भी लक्ष्य प्राप्ति में मदद कर सकें।

पर्वतीय क्षेत्रों को पारिस्थितिकी-पर्यटन की संभावना वाले क्षेत्रों के रूप में विकसित करने के महत्व पर विचार करने से पहले यह उचित होगा कि हम उन गतिविधयों पर नजर डालें जो पारिस्थितिकी-पर्यटन की अवधारणा में शामिल हैं। इन गतिविधियों का दायरा अत्यंत व्यापक है, जिन्हें 'आउटडोर रिक्रिएशन' यानी 'बाहरी मनोरंजन' कहा जा सकता है जैसे ट्रेकिंग (भ्रमण), हाइकिंग (पैदल सैर), पर्वतारोहण, माउंटेन साइकलिंग, काइएकिंग, पक्षियों को निहारना, नौकायन, रीवर रॉफ्टिंग (नदी-नौकायन), स्कीइंग (बर्फ पर फिसलना), जैविक खोज और वन्य जीव अभयारण्यों की यात्रा। इनमें से अधिकतर गतिविधियों का संबंध पर्यटन से है लेकिन इसमें एक बड़ा अंतर यह है कि साहसिक पर्यटन में जोर प्रकृति के साथ रोमांच पर अधिक रहता है। राफ्टिंग का आनंद उठा रहे व्यक्ति में नदी के प्रति जागरूकता हो भी सकती है और नहीं भी, जबकि एक पारिस्थितिकी-पर्यटक के मन में प्राकृतिक शक्ति के प्रति भावात्मक आकर्षण दिखाई देगा। दूसरे शब्दों में, विलियम वड्र्सवर्थ द्वारा दी गई उपमा का इस्तेमाल करते हुए कहा जा सकता है कि राफ्टिंग प्राणि-बल विषयक रोमांचकारी अनुभव है जबकि पारिस्थितिकी-पर्यटन अधिक संवेदनात्मक और परिपक्व दृष्टिकोण है। इसके अलावा साहसिक पर्यटन में आमतौर पर युवा हिस्सा लेते हैं जबकि

पारिस्थितिकी-पर्यटन में बुजुर्ग और परिपक्व पर्यटक भी युवाओं का साथ दे सकते हैं। पारिस्थितिकी-पर्यटन से संतुष्टि सुनिश्चित होती है, और इसका आयोजन छोटे एकरूप समूहों के लिए किया जाता है। इसकी प्रेरणात्मक और भावात्मक दृष्टि मूल्यवान है क्योंकि इसका लक्ष्य प्रकृति को उपभोग्य वस्तु के रूप में देखना नहीं है बल्कि इसकी रक्षा के महत्व को समझना है। इतना ही नहीं पारिस्थितिकी-पर्यटन 'जन-पर्यटन' (मास टूरिज्म) अथवा अधिक सही शब्दों में कहें, तो सैरगाह पर्यटन (रिजॉर्ट टूरिज्म) से भी भिन्न है। सैरगाह पर्यटन में पर्यटक का मुख्य लक्ष्य सामान्य दिनचर्या से दूर रहना, अवकाश का आनंद लेना, ऐतिहासिक स्थानों या पर्यटक-स्थलों की यात्रा करना और एक अच्छी सैर की स्मृति लेकर लौटना होता है। इनमें अधिसंख्य पर्यटक ऐसे होते हैं जो यात्रा किए गए स्थानों के प्राकृतिक सौंदर्य अथवा उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता से अभिभूत या प्रेरित नहीं होते।

पर्वतीय क्षेत्र पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियों के संचालन के लिए एक प्रभावकारी कार्य-क्षेत्र उपलब्ध कराते हैं। पर्वतों की बेजोड़ पारिस्थितिकी प्रणाली, उनका उत्कर्ष और विस्मयकारी सुरम्य सौंदर्य नित्य आकर्षण का स्रोत हैं। वास्तव में ट्रेकिंग, हाइकिंग, पर्वतारोहण जैसी पारिस्थितिकी-पर्यटन की लगभग सभी गतिविधियां पर्वतीय इलाकों में आयोजित की जा सकती हैं। पर्वतीय पारिस्थितिकी-पर्यटन की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिन पर विचार करना इस संदर्भ में अनिवार्य होगा। पर्वतमालाएं हरियाली की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र हैं। यहां वृक्षों, जड़ी-बूटियों और फूलों की विविधता मन-मोह लेती है। ये हरित क्षेत्र कई मायनों में महत्वपूर्ण हैं, जैसे इनसे भू-परिदृश्य का सौंदर्य बढ़ता है, वे जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का प्राकृतिक वास हैं और पौधों, झाड़ियों और औषधीय गुणों से संपन्न जड़ी-बूटियों का खजाना हैं।

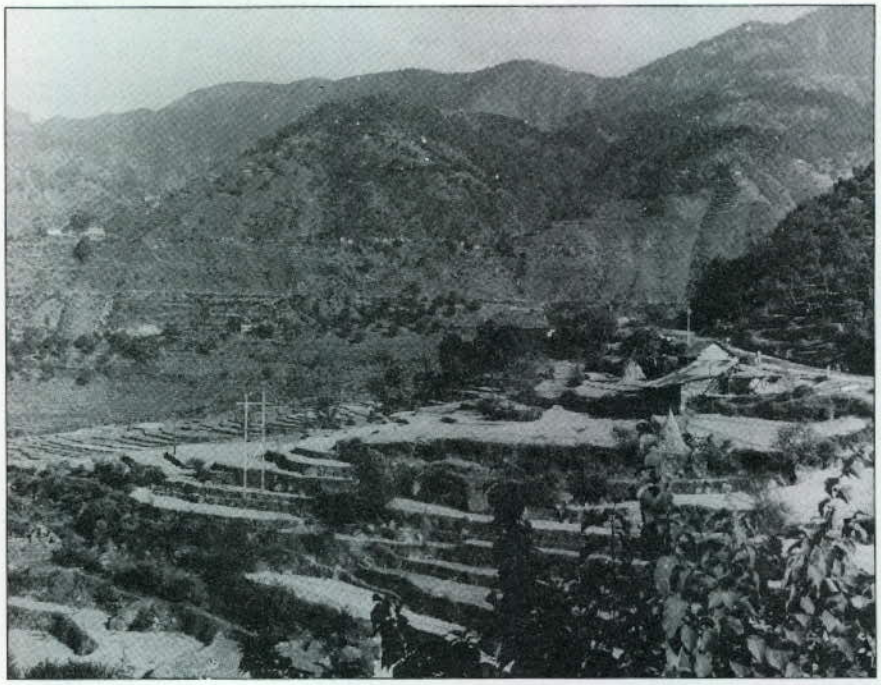

हरियाली की दृष्टि से पर्वतमालाएं अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है

स्थानीय निवासी इन हरित क्षेत्रों का सम्मान करते हैं और उन्हें पवित्र उपवन समझ कर परंपरागत रूप से उनका संरक्षण करते हैं। भारत में ऐसे हजारों पवित्र उपवन मैदानों और पर्वतीय क्षेत्रों में फैले हुए हैं। हिमालय में शिमला से करीब 12 कि.मी. दूर शिपिन में सबसे बड़ा देवदार उपवन है जहां सैकड़ों वर्ष पुराने वृक्ष मौजूद हैं। हिमालय क्षेत्र में ऐसे अनेक उपवन हैं जिनका उल्लेख हमारे प्राचीन धर्म-ग्रंथों में मिलता है। हिमालय हमारी प्राकृतिक और आध्यात्मिक विरासत है; यह हमारे सर्वोच्च आदर्शों और आकांक्षाओं का प्रतीक है। दुर्भाग्य से हिमालय की पारिस्थितिकी का तेजी से ह्रास हो रहा है। इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। मौजूदा हालात में पारिस्थितिकी-पर्यटन के साथ संरक्षण का समुचित प्रबंध करके पर्वतीय पारिस्थितिकी-प्रणाली में मदद की जा सकती है।

पर्वतीय क्षेत्रों में पशु-पक्षियों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। इन प्रजातियों को अभयारण्यों और सुरक्षित वन-क्षेत्रों में उनके प्राकृतिक वातावरण में देखना रोमांचकारी और शिक्षाप्रद अनुभव हो सकता है। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में चिखलदारा सतपुड़ा पर्वतश्रेणी में स्थित है। मिथकीय दृष्टि से देखें तो इसका संबंध *महाभारत* के कीचक वन से है। चिखलदारा बाघ अभयारण्य है जहां कुछ प्राचीन जन-जातियां पाई जाती हैं। पारिस्थितिकी-पर्यटन के लिए यह स्थान अत्यंत आदर्श है। यहां चट्टान श्रृंखलाएं, घने जंगल, बाघ और अन्य वन्य जीव तथा स्थानीय जनजातियां हैं जिनकी संस्कृति और परम्पराओं का अध्ययन किया जा सकता है। यही बात अन्य स्थानों के बारे में कही जा सकती है जो देश भर में बहुतायत में हैं। पश्चिम घाटों और केरल के पर्वतीय क्षेत्रों में धार्मिक उपवनों के विस्तृत भू-भाग हैं जहां मनोरंजनात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियों की व्यापक संभावनाएं हैं। पर्वतीय क्षेत्रों के इर्द-गिर्द संभावित पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियों को निम्नांकित समूहों में रखा जा सकता है :

- बाहरी गतिविधियां जैसे ट्रैकिंग, हाइकिंग, माउंटेन-साइक्लिंग, पर्वतारोहण, नदी नौकायन आदि छोटे समूहों के लिए।

- पवित्र वन या उपवनों और विरासत-स्थलों की यात्रा, खासकर इस बात के सजग प्रयासों के साथ कि स्थानीय लोगों के लिए उनका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व क्या है।
- वन्य जीव जंतुओं और पक्षी अभयारण्यों और राष्ट्रीय-उद्यानों की यात्रा।
- झीलों, घाटियों और जहां संभव हो बर्फीले पर्वत-शिविरों की यात्रा।
- स्थानीय समुदायों अथवा उनके पुरातन वातावरण में प्रवास, उनकी परंपराओं और संस्कृति का पर्यवेक्षण और समीक्षा।

अब सवाल यह है कि पारिस्थितिकी-पर्यटन को कारगर बनाने के लिए क्या कदम उठाए जाएं कि वह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी तीन कार्यों को पूरा कर सकें? पारिस्थितिकी-पर्यटन की सफलता के कुछ प्रमुख बिन्दु हैं, जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि पारिस्थितिकी-पर्यटन का आनंद उठाने के इच्छुक पर्यटकों को छोटे समूहों में ले जाया जा सके। उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने और उनमें पर्यावरण के प्रति अनुराग पैदा करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें प्रकृति की प्रशंसा करने के लिए प्रेरित किया जा सके। पारिस्थितिकी-पर्यटन के लिए चुने गए स्थानों को इस उद्देश्य के लिए अलग किया जाना चाहिए और उनके संरक्षण की अच्छी व्यवस्था की जानी चाहिए। गतिविधियां आयोजित करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि वे पारिस्थितिकी-अनुकूल हों। ये गतिविधियां स्थानीय संस्कृति के भी अनुकूल होनी चाहिए। उनका चयन करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे न तो आगन्तुकों की भावनाओं को और न ही स्थानीय लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली हों। स्थानीय लोगों को उनकी संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों की जानकारी के साथ इस उद्यम में प्रमुख कर्त्ताओं के रूप में शामिल किया जाना चाहिए ताकि उन्हें पूर्ण भागीदारी मिले और वे आगन्तुकों की जिज्ञासाएं संतुष्ट करने में सक्षम हों।

पर्वतीय क्षेत्रों में पारिस्थितिकी-पर्यटन के इस संदर्भ में नेपाल का उदाहरण दिया जा सकता है। पर्वतीय राज्य नेपाल को पर्यटकों, खासकर ऐवरेस्ट, अन्नपूर्णा और अन्य पर्वतशिखरों पर जाने वाले यात्रियों के निरंतर आगमन से उत्पन्न एक खास तरह की समस्या का सामना करना पड़ा था। पर्वतीय इलाकों में कैम्प लगाने वालों द्वारा फैलाए गए कचरे और ईंधन के लिए काटे गए वृक्ष एक दयनीय तस्वीर पेश कर रहे थे। इस गंदगी को दूर करने के लिए वहां की सरकार ने पारिस्थितिकी-पर्यटन उपायों का सहारा लिया ताकि पर्यटन में भी तेजी आए और पारिस्थितिकी-संतुलन भी कायम रखा जा सके। इस दिशा में किए गए उपायों में सफाई अभियान और संरक्षण प्रयास शामिल किए गए, जिसके लिए अधिकारियों ने ट्रैकिंग फीस से एकत्र धन का एक हिस्सा खर्च करने का फैसला किया। सरकार जानती थी कि स्थानीय लोग लामाओं का सम्मान करते हैं और लामा उसके आह्वान पर ध्यान देने को तैयार हैं। अत: उसने डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और तेंगबीच मठ के स्थानीय लामाओं की सहायता से खुम्बू दल का गठन किया और उसे पर्वतीय क्षेत्रों की स्वच्छता का काम सौंपा। अब यह क्षेत्र बड़ी तेजी से अपने मूल रूप में लौट रहा है। ऐवरेस्ट को 'टॉइलिट बोल' (शौचघर) कहकर उसका उपहास किया जाने लगा था और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के मिंगमा नोर्बू शेरपा के शब्दों में "हम यह सुन-सुन कर ऊब चुके थे कि ऐवरेस्ट एक 'टॉइलिट बोल' है।" आज अन्नपूर्णा संरक्षण क्षेत्र परियोजना पर हर वर्ष पर्यटक शुल्क में से 50,00,000 डॉलर से अधिक धन खर्च किया जा रहा है और इस धन का इस्तेमाल जैव-विविधता और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण के लिए किया जा रहा है। इसी तरह नामचे बाजार—जिसे ऐवरेस्ट का प्रवेश-द्वार कहा जाता है—अब आर्थिक दृष्टि से समृद्ध है और पारिस्थितिकी की दृष्टि से स्थिर। नेपाल सरकार भी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अनेक राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों का विकास कर रही है। माकूल-बरुन राष्ट्रीय उद्यान की अवस्थिति ऐसी है कि वहां एक ओर समुद्र तल से थोड़ी ऊंचाई पर उष्णकटिबंधी बरसाती जंगल हैं और साथ ही ऊंचे-ऊंचे पर्वत शिखर हैं। चूंकि यह उद्यान कई नृजातीय समूहों का निवास भी है, अत: वहां पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियों की व्यापक संभावनाएं हैं। किंतु हिमालय और उसकी जैव-विविधता को अगर बचाना है तो और उपाय करने होंगे। नेपाल सरकार को पर्यटकों और ट्रैकरों के अनियंत्रित आगमन का यह प्रवाह सीमित और नियंत्रित करना होगा।

जैव विविधता की दृष्टि से संपन्न मालदीव ने पारिस्थितिकी-पर्यटन को गंभीरता और कारगर ढंग से अपनाया है। यह लघु द्वीप-राष्ट्र भली-भांति समझता है कि उसे पर्यटन-संरक्षण तथा स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और आय के अवसर पैदा करने के बीच बेहतर संतुलन कायम करना है। मालद्वीव के लिए पर्यटन एक पूर्ण उद्योग है।

जैव विविधता की दृष्टि से संपन्न मालदीव ने पारिस्थितिकी-पर्यटन को गंभीरता और कारगर ढंग से अपनाया है। यह लघु द्वीप-राष्ट्र भली-भांति समझता है कि उसे पर्यटन-संरक्षण तथा स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और आय के अवसर पैदा करने के बीच बेहतर संतुलन कायम करना है। मालद्वीव के लिए पर्यटन एक पूर्ण उद्योग है और वह इससे प्राप्त राजस्व पर निर्भर है, किंतु साथ

ही उन्हें अनियोजित पर्यटन के खतरों की भी जानकारी है। उन्होंने अपनी प्रवालभित्तियों की सुरक्षा के लिए कड़े उपाय किए हैं और सभी सैरगाहों और होटलों के लिए यह अनिवार्य बना दिया है कि वे अपने कचरे का निपटान उसे जलाकर करें, जल संरक्षण करें और कूड़े-कचरे को फिर से काम में लाए जाने के उपाय करें। मालदीव के राष्ट्रपति का कहना है कि पर्यटन उनके लिए न केवल विकास, बल्कि अस्तित्व बचाव का भी साधन है।

अधिकतर देशों ने अपनी पारिस्थितिकी आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियां विकसित की हैं। फिलिपीन के ओलांगो द्वीप (पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग) का उदाहरण दिया जा सकता है, जहां मछुओं को 'लैंडब्लास्ट फिशिंग (यानी भूमि में विस्फोट करके मछली पकड़ने) की अनुमति नहीं है। उन्हें मछली पकड़ने के परंपरागत तरीके अपनाने के लिए बाध्य किया गया है और मछुआ समुदाय को प्रेरित किया गया है कि वे अभयारण्य के जीवनरक्षक मार्गदर्शकों की भूमिका निभाएं। वहां महिलाएं भोजन तैयार करने और पर्यटकों के प्रबंध में शामिल होती हैं। इस परियोजना से अनेक परिवारों को आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ है।

इंडोनेशिया में पक्षियों की तस्करी के कारण सेरम पैरट (तोता प्रजाति) का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था। उन्होंने 'बर्डवाच' नामक परियोजना आरंभ की। इसका लक्ष्य पक्षियों की तस्करी करने वालों को संरक्षण प्रयासों में शामिल करना और उन्हें मार्गदर्शकों में तब्दील करना है। जापान में 'फोरम फॉर ग्रीन ट्रांसफोर्मेशन ऑफ कल्चर' नामक पारिस्थितिकी संगठन की स्थापना की गई जबकि आस्ट्रेलिया में इको-टूरिज़्म एसोसिएशन प्रकृति-आधारित पर्यटन का प्रबंध करती है ताकि उपभोक्ताओं को जागरूक बनाया जा सके; पर्यावरण में सुधार और ब्लू माउंटेन क्षेत्र में स्थानीय समुदायों को सुदृढ़ बनाया जा सके। इस वर्ष जनवरी में सार्क देशों के क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें दक्षिण एशिया में अस्तित्व के खतरे से जूझ रही प्रजातियों के संरक्षण के बारे में समुदायों के साथ मिलकर काम करने की रणनीति पर विचार किया गया। सिक्किम इकोटूरिज़्म एंड कंजर्वेशन सोसायटी के अध्यक्ष ने सार्क देशों के बीच जागरूकता पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा, ''क्षेत्र में जागरूकता और उत्पाद विकास का एक स्तर है जो देशों को एक-दूसरे से सीखने का लाभ प्रदान कर सकता है।''

भारत में कई राज्यों ने अपने क्षेत्रों में पारिस्थितिकी-पर्यटन को प्रोत्साहित करने के उपाय सुझाए हैं। उदाहरण के लिए केरल ने तेंमाला इकोटूरिज़्म प्रोमोशन सोसायटी की स्थापना की है ताकि पारिस्थितिकी-पर्यटन के लिए मॉडल का विकास किया जा सके। हिमाचल प्रदेश ने पारिस्थितिकी-पर्यटन विकास की नीति घोषित की है जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया गया है। उत्तरांचल और पश्चिम बंगाल के वन निगमों ने पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियां शुरू की हैं जबकि कुछ राज्यों में पर्यटन विभाग और वन विभाग मिलकर पारिस्थितिकी-पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं।

पर्यावरण ह्रास का असर कम करने के लिए विभिन्न संगठनों ने हिमालय क्षेत्र में वनों की कटाई रोकने के उपाय किए हैं। इनमें एक उपाय है—पर्यटकों को कैंप में केरोसिन स्टोव या ईंधन-सक्षम लकड़ी के चूल्हे प्रदान कराना। इस बात पर भी बल दिया गया है कि ऐसे भोजन के इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया जाए जिसे पकाने की आवश्यकता न हो। जहां कहीं संभव हो, वैकल्पिक पन बिजली भी उपलब्ध कराई गई है। जहां तक पर्वतीय क्षेत्रों में कचरा डालने का सवाल है, पर्यटकों, कैंपवासियों आदि के लिए यह अनिवार्य बनाया गया है कि वे कचरा डालने के लिए गड्ढों का इस्तेमाल करें अथवा उसे पैक करके अधिक आबादी वाले केन्द्रों में निपटान के लिए भेजें। पर्वतीय राज्यों, खासकर हिमालय की गोद में बसे राज्यों को अपने संरक्षण उपायों में तेजी लाने तथा अपनी नीतियों को अधिक कारगर बनाने की आवश्यकता है ताकि अधिक संतोषजनक नतीजे और लाभ पर्वत श्रेणी वर्ष के दौरान प्राप्त किए जा सकें।

भारत दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता वाले सात बड़े राष्ट्रों में एक है। अपनी समृद्ध एवं प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के कारण यह पर्यटकों को आकर्षित करता है, और हमारे यहां पारिस्थितिकी-पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएं हैं जिनके माध्यम से संरक्षण और आर्थिक विकास की योजनाएं बनाई जा सकती हैं। किंतु आमतौर पर अत्यधिक पर्यटन और अनियंत्रित पर्यटक यातायात पर्वतीय क्षेत्रों की पहले से ह्रासमान और कमजोर पारिस्थितिकी-प्रणाली के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ है। इस क्षेत्र के अनुसंधानकर्ताओं की यह मान्यता गलत नहीं है कि कभी-कभी ''पर्यटन, पर्यटन को नष्ट कर देता है।'' किंतु पारिस्थितिकी-पर्यटन अपनाने से नष्ट होते सौंदर्य को फिर से हासिल किया जा सकता है। इससे स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकता है और उनकी संस्कृति की रक्षा की जा सकती है। केरल में परियार बांध संरक्षण परियोजना का एक उदाहरण दिया जा सकता है, जहां एक कार्यक्रम के अंतर्गत चोरी-छिपे शिकार खेलने वालों को मार्गदर्शक बनाने में सफलता प्राप्त की गई। नतीजतन वहां न केवल प्रजातियों के संरक्षण उपायों को बल मिला, बल्कि रोजगार भी उपलब्ध हुआ जिससे 40 परिवारों को लाभ पहुंचा।

वर्तमान स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। पहली बात यह है कि पारिस्थितिकी-पर्यटन के बारे में कुछ आशंकाएं हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। अनेक क्षेत्रों में स्थानीय निवासियों को बाहर से आने वाले लोगों से भय है कि वे उनकी संस्कृति पर असर डालेंगे, और वे

(शेष पृष्ठ 25 पर)

पर्यावरण-पर्यटन और हिमालय

○ एम.एस. कोहली

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सन 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष के रूप में ज्ञापित किया है। चूंकि पर्यटन क्षेत्र की अधिकांश गतिविधियां पर्वतीय क्षेत्रों में होती हैं, अत: पारिस्थितिक पर्यटन और हिमालय विश्व की धरोहर है, उसे महत्व देना बेहद जरूरी है। हिमालय में प्रवेश कर चुका पर्यावरणीय ह्रास एक आपदा है। ठीक इसी प्रकार की आपदाएं 'इंडिज' और उत्तरी अफ्रीका में देखी गई हैं। हालांकि पिछली शताब्दी में आल्प्स में विनाशकारी जलप्रवाह को संतुलित करने के लिए बड़े कदम उठाए गए, लेकिन नई पर्यावरणीय समस्याओं के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं।

यूरोपीय आल्प्स पर्वत पर लाखों की तादाद में आने वाले सैलानियों की वजह से होने वाले क्षरण की ओर हाल ही में पर्यावरणीय समूहों का ध्यान गया है। क्या हम लोगों को आल्प्स से सबक नहीं लेना चाहिए और उस समय तक इंतजार करना चाहिए जब तक विनाश प्रतिउत्तरवादी न हो जाए? पर्यावरणीय समस्याएं हिमालय जितनी गंभीर और कहीं भी नहीं हैं, क्योंकि यह वृहद पारिस्थितिक तंत्र एक भयावह खतरे से गुजर रहा है।

वैभवशाली हिमालय अपने अपार सौंदर्य और महत्व के लिए विख्यात है, जो इसकी स्थिरिता और भव्यता को प्रदर्शित करता है, लेकिन वास्तव में यह पृथ्वी का सबसे संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र है। चीन, भारत, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, बर्मा और रूस तक फैले हिमालय क्षेत्र में 3 करोड़ लोग रहते हैं, इसके अतिरिक्त 35 करोड़ लोग इसके नदी बेसिनों में रहते हैं। यह क्षेत्र सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और हांगहो-यांगसी का स्रोत है, जो विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक खनिज संपदाओं से भरा हुआ है। यह करोड़ों लोगों के हित के लिए महत्वपूर्ण है। 'देवताओं की धरती' के रूप में प्रसिद्ध हिमालय का कई संस्कृतियों और प्रजातियों के उत्थान और विकास में योगदान रहा है। इनमें से कुछ अलग-थलग हो गई और अन्य दूसरी लाखों के समूह में विकसित हुईं।

पिछले तीन दशकों से बर्फ और अनेकों वनस्पतियों से भरा यह पर्वत कई भू-गर्भिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। भूस्खलन एवं भू-क्षरण, जनसंख्या का दबाव और पर्वतों में प्रवास, वानस्पतिक एवं जैव परिवर्तन, पर्वतीय अभियान और पर्वतारोहणों की बढ़ती संख्या, आदि इसके कारण रहे हैं।

हिमालय क्षेत्र का कठोर संरक्षण ही इन समस्याओं का समाधान नहीं है। इसके विकास के लिए यहां के स्थानीय निवासियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना होगा और क्षेत्र के आर्थिक विकास पर ध्यान देना होगा। असीम सहयोग के इस युग में समाधान इसमें निहित है कि हिमालय के पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन लाए बिना यह कार्य किया जाए। यह स्थानीय निवासियों, वहां की सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय पर्वतारोहण समितियों के लिए श्रमसाध्य कार्य है।

49 वर्ष पूर्व जब सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोरगे माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचे थे, तब हिमालय में दर्जन भर से कम पर्वतारोहण और 100 से कम अभियान

हिमालय क्षेत्र का कठोर संरक्षण ही समाधान नहीं है। इसके विकास के लिए यहां के स्थानीय निवासियों के जीवन-स्तर को ऊपर उठाना होगा और क्षेत्र के आर्थिक विकास पर ध्यान देना होगा। असीम सहयोग के इस युग में समाधान इसी में निहित है कि हिमालय के पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन लाए बिना ऐसा किया जाए।

हुए थे। आज पांच लाख से अधिक अभियान और 1000 से अधिक रोमांचक पर्यटन सहित पर्वतारोहण हिमालय में तेजी से बढ़ रहा है।

इसके साथ ही 50 लाख तीर्थ यात्री जिनमें बौद्ध, हिन्दू और सिख शामिल हैं, वे हिमालय में फैले अपने तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं।

समेकित पर्वतीय विकास का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र—(आईसीमोड) : पर्वतीय पारिस्थितिक तंत्र के विकास पर विचार करने, अंतर्सहयोग बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को इन समस्याओं के समाधान में शामिल करने के उद्देश्य से मार्च 1979 में म्यूनिख में अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए जर्मन फाउंडेशन द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसका लक्ष्य था—पर्वतीय क्षेत्रों का सघन विकास और सम्पदा की विभिन्नता व संरक्षणात्मक कार्यों के बीच तालमेल बिठाना। कार्यशाला में एक स्वशासी अंतर्राष्ट्रीय संस्था बनाने का सुझाव आया जो वैज्ञानिक जानकारी एकत्र करने, बनाने, जांच करने और उपयोग करने से संबंधित कार्य करे। साथ ही यह संस्था पर्वतीय विकास के प्रयोगात्मक डाटा से संबंधित कार्य भी संपादित करे। इस प्रकार की संस्था एक क्लीयरिंग हाऊस जैसी हो, जो जानकारी उपलब्ध कराने के अलावा विशेषज्ञ सेवा भी उपलब्ध करा सके। एक मुख्य संस्थापक ने प्रस्ताव दिया कि नई संस्था की कम से कम तीन देशों में शाखाएं हों।

आईसीमोड के इतिहास में दूसरा मील का पत्थर साबित हुआ 'समेकित पर्यावरणीय शोध और प्रशिक्षण की आवश्यकता' पर आयोजित बैठक। यह क्षेत्रीय बैठक दक्षिण एशियाई पर्वतीय तंत्र, विशेष तौर पर हिमालय के हिन्दूकुश पर विचार करने के लिए यूनेस्को के कार्यक्रम 'मनुष्य और क्षोभ मंडल' के तहत रखी गई थी। इसमें महामहिम नेपाल सरकार ने पूरा सहयोग दिया। इस बैठक में विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें क्षोभ मंडल की समस्याओं और जागरूकता के प्रस्तावों, प्रशिक्षण कार्य और पुस्तकीकरण के इर्द-गिर्द विचार-विमर्श केन्द्रित रहा। समेकित शोध एवं प्रशिक्षण तथा तकनीकी सलाहकारीय सेवा के लिए संस्था की स्थापना की अनुशंसा की गई। प्रस्तावित संस्था के लिए नेपाल सरकार द्वारा जगह मुहैया कराने के प्रस्ताव का स्वागत किया गया। आईसीमोड ने हिमालय क्षेत्र के सभी देशों को इस कार्यक्रम में शामिल किया है। कुछ देशों के साथ सही सोच अथवा सहयोगी रवैया विकसित किया गया। आईसीमोड ने विश्व विज्ञान समुदाय की व्यापक रुचि भी आकर्षित की।

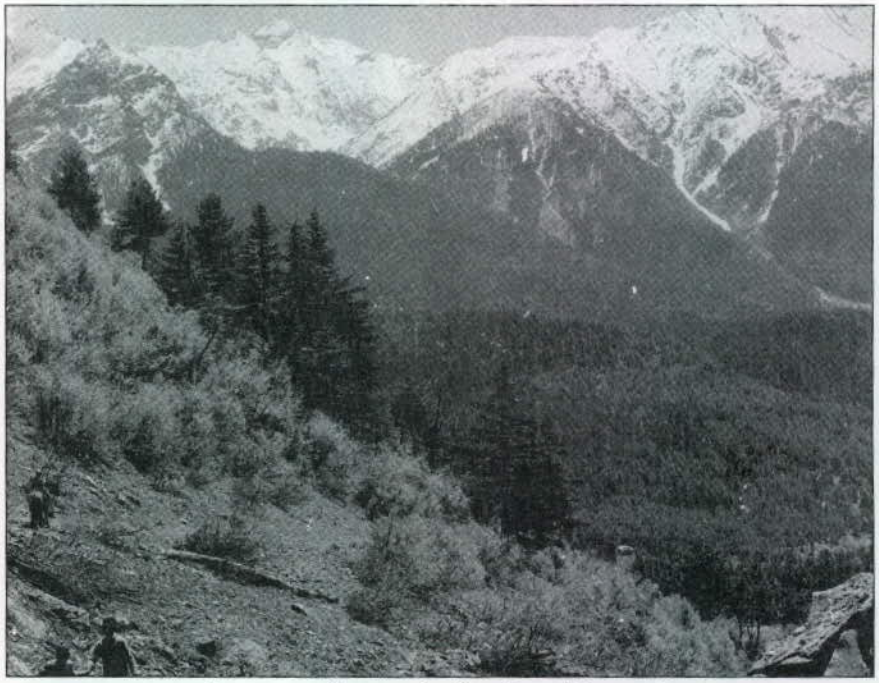

हिमालय : पृथ्वी का सबसे संवेदनशील पारिस्थितक तंत्र

अन्नपूर्णा संरक्षण क्षेत्र परियोजना: सन 1986 की अन्नपूर्णा संरक्षण क्षेत्र परियोजना एक रुचिकर विकास था। सरकार ने एक दर्जन राष्ट्रीय उद्यानों और अभ्यारण्यों में 7 प्रतिशत से ज्यादा क्षेत्र इसके लिए अलग कर दिया। 1000 वर्ग मील क्षेत्र की इस अन्नपूर्णा संरक्षण क्षेत्र परियोजना का प्रशासन किंग महेन्द्रा ट्रस्ट फॉर नेचर कंजर्वेशन और वित्तपोषण विश्व वन्यजीव कोष और निजी दानकर्ता द्वारा संपोषित है।

यह परियोजना सहयोग के नए जज्बात का एक बेहतरीन प्रयोग है। यह नवीनतम विचारों और पर्यावरणीय प्रबंधन का सम्मिश्रण है। एसीए परियोजना के वित्तपोषकों ने ग्राम्यवासियों को क्षेत्रीय संपदा के स्वामित्व का अधिकार सौंपा है।

पर्यटकों पर लगाए गए शुल्क से होने वाली आय का अधिकांश हिस्सा इसका प्रबंधन करने वाले ग्राम्यवासियों को दिया जाता है। वे लोग अभ्यारण्यों और आस-पास जलावन के लिए लकड़ी और केरोसिन डिपो के ईंधन के प्रयोग को वर्जित करते हैं। वनरक्षकों को पंगडंडियों की सफाई और मरम्मत, वातावरण को स्वच्छ रखने, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों के प्रयोग और भू-क्षरण के खतरे रोकने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

जनता अपनी जमीन की सुरक्षा और तात्कालिक लाभ पर भविष्य के लाभों को कितना महत्व देती है, इस बात पर एसीए परियोजना का भविष्य निर्भर करता है।

हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट (एचईटी): 1988 के अंत में मैंने अनुभव किया कि दो-दशक से मैं एयर इंडिया की ओर से विश्व भ्रमण कर रहा हूं। और अपनी पुस्तकों, अभियानों, रेडियो और टेलीविजन साक्षात्कारों के जरिए हिमालय को ख्याति दिला रहा हूं। साथ ही अल्पाइन क्लबों को भी संबोधित करता रहा हूं। इस दौरान मैंने महसूस किया कि यह हिमालय के लिए कुछ लेकर लौटने का बेहतरीन मौका है। मसलन इसकी समृद्धि को संरक्षित करने के लिए कोई परियोजना। मैंने भारत में न्यूजीलैंड के तत्कालीन उच्चायुक्त सर एडमंड हिलेरी से संपर्क किया। उनसे हिमालय रोमांच ट्रस्ट के गठन की योजना पर बात की। सर एडमंड ने मेरे विचार को पसंद किया। इस प्रकार हम लोगों ने संयुक्त प्रयास के जरिए पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण और नवीनीकरण का कार्य शुरू किया। विश्व के विभिन्न भागों के निकट मित्र, पर्वतारोही, नेता आदि पारिस्थितिक तंत्र को बचाने जैसे इस सुकार्य के लिए आमंत्रित किए जाने और ट्रस्ट में शामिल होने के प्रति उत्साहित दिखे।

यह ट्रस्ट मूल रूप से 17 जून 1988 को नई दिल्ली में पंजीकृत हुआ। इसका 14 अक्तूबर 1989 को हांगकांग में औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। बाद में इस ट्रस्ट का नाम बदल कर हिमालय पर्यावरणीय ट्रस्ट रखा गया जो 12 जून 1991 को भारतीय ट्रस्ट अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हुआ।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

1. पर्वतारोहियों, अभियानकर्ताओं, अल्पाइन क्लबों, पर्यटन अभियान संगठित करने वालों और हिमालय परिक्षेत्र की सरकारों के सहयोग से हिमालयी पर्यावरण को संरक्षित करना, इसकी वनस्पति, जीवों और प्राकृतिक संपदा को संगठित करना तथा स्थानीय निवासियों के रीति-रिवाजों तथा हितों का संरक्षण करना।
2. हिमालय क्षेत्र के पर्यटकों द्वारा यहां के पर्यावरण को व्यवस्थित रखने के लिए नियम और नैतिकता के मानक बनाना।
3. हिमालय के पर्यावरण की समस्याओं पर विचार-विमर्श तथा इन विषयों पर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, गोष्ठी और हिमालयी पर्यटन बैठक आयोजित करना।
4. स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच सूचना और सहयोग का आदान-प्रदान करना यथा—समेकित पर्वतीय विकास के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, काठमांडू और पर्वतीय संरक्षण आयोग यूआईएए के बीच सहयोग।

यह ट्रस्ट मूल रूप से 17 जून 1988 को नई दिल्ली में पंजीकृत हुआ। इसका 14 अक्तूबर 1989 को हांगकांग में औपचारिक रूप से उद्घाटन किया गया। बाद में इस ट्रस्ट का नाम बदल कर हिमालय पर्यावरणीय ट्रस्ट रखा गया जो 12 जून 1991 को भारतीय ट्रस्ट अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हुआ।

5. हिमालय के देशों से संबंधित रोमांचक पर्यटन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश तय करना। ख्यातिप्राप्त जगहों पर भीड़-भाड़ रोकना। अभियानकर्ताओं के उचित बिखराव के लिए कार्य करना, जो पूरे हिमालय क्षेत्र में हो।

अभियानकर्ता ट्रस्टी हिमालय में रोमांचक पर्यटन के अभूतपूर्व विकास के लिए उत्तरदायी हैं। वे विपरीत प्रभावों—मसलन हिमालय के कुछ मुख्य स्थानों के प्रदूषण, अभियान एजेंसियों के प्रदूषणविरोधी कार्यों की कमी, कुछ मुख्य स्थानों की भीड़ और पर्यावरणीय शिक्षा के अभाव के प्रति चिंतित थे।

ट्रस्ट ने हिमालय के पर्यावरणीय पहलुओं की विशेषज्ञता विकसित करने का निर्णय लिया ताकि हिमालय क्षेत्र की सरकारों तथा अन्य संस्थाओं को उनके श्रमसाध्य कार्य में सहायता मिल सके। ट्रस्ट का लक्ष्य है अभियानकर्ताओं में हिमालयी पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना और इस क्षेत्र की सुन्दरता बरकरार रखने के लिए उन्हें उत्साहित और शिक्षित करना। इस भव्य पर्वत के शताब्दियों तक संरक्षण के लिए एक उत्तेजनापूर्ण उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना भी इसके उद्देश्यों में एक है। ट्रस्टियों ने 1991 में टोक्यो में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सभी यात्रियों के लिए नियम बनाए जो विश्व भर में स्वीकृत और लागू हुए।

हिमालय पर्यावरणीय ट्रस्ट में स्वीकृत हुई हिमालयी नियमावली इस प्रकार है :—

(क) प्राकृतिक पर्यावरण को संरक्षित करना।

(ख) कैम्प क्षेत्र : ज्ञातव्य हो कि एक ही कैम्प क्षेत्र दूसरे दल द्वारा भी प्रयोग किया जाएगा, जब आपने उसे खाली कर दिया हो। अत: कैम्प को उससे भी ज्यादा स्वच्छ छोड़ें जैसा आपने उसे पाया था।

(ग) वन्यहरण को नियंत्रित करना : आग उत्पन्न न करें और दूसरों को ऐसे कार्यों से रोकें। जहां जलावन की लकड़ी की कमी हो, वहां कम से कम लकड़ी का उपयोग कर जल को गर्म करें। जब भी संभव हो, ऐसे निवास का चयन करें, जहां किरासिन का उपयोग हो अथवा ईंधन-रक्षक जलाव की लकड़ी का स्टोव हो। अपने साथ पौधे की कलम ले जाएं और गुजरे हुए स्थान पर रोप कर लक्ष्य की सहायता करें।

(घ) सूखे कागज और पैकेट को सुरक्षित स्थानों पर जलाएं : रद्दी कागजों और पारिस्थितिक क्षरण वाले वस्तुओं को जमीन में गाड़ें और पर्यावरण क्षरणीय

भोज्य पदार्थों सहित अन्य सामानों को वापस लाएं। उन कचरों को वापस लाएं जो पर्यावरण द्वारा क्षरणीय न हों। अन्य लोगों द्वारा फैलाई गई गंदगी देखें तो उसे साफ कर दें।

(ङ) स्थानीय जल स्वच्छ रखें और प्रदूषकों के प्रयोग से बचें : डिटर्जेंट का बहावों और स्रोतों में प्रयोग न करें। यदि शौचालय की सुविधा उपलब्ध न हो तो जल स्रोतों से कम से कम 30 मीटर दूर जाएं और उसे जमीन में गाड़ दें।

(च) पौधों को प्राकृतिक पर्यावरण में विकसित होने दें : कलमों, पौधों और जड़ों को हिमालय क्षेत्र के कई भागों से उखाड़ना गैर कानूनी है।

(छ) अपने पथ-प्रदर्शक और कुली को संरक्षण के कार्य में मदद करें : रसोईयों और कुलियों को प्रवाह अथवा नदी में कचड़ा फेंकने से मना करें।

(ज) हिमालय को स्वयं परिवर्तित होने दें, उसमें परिवर्तन न करें।

(झ) स्थानीय रिवाजों का आदर करें, स्थानीय संस्कृति का संरक्षण करें और स्थानीय गर्व कायम रखें।

(ञ) चित्र खींचते समय निजित्व का आदर करें : अनुमति लें और स्वयं को अनुशासित रखें।

(ट) पवित्र स्थानों का सम्मान करें। जो आप देखने आए हैं, उसका संरक्षण करें, धार्मिक वस्तुओं को कभी भी हटाए या छेड़े नहीं। मंदिरों में घूमने के दौरान जूते उतार दें।

(ठ) बच्चों को पैसे देने से बचें, क्योंकि यह भीख मांगने को प्रोत्साहित करता है : परियोजना, स्वास्थ्य केन्द्र और स्कूल को दान देना ज्यादा सकारात्मक सहयोग है।

(ड) स्थानीय तौर-तरीकों को सम्मान देने से आपको आदर मिलता है : ढीले और हल्के कपड़े पहने—छोटी पैंट, भड़काऊ टॉप और तंग कपड़ों को प्राथमिकता न दें। बांह में बांह डालकर चलना और खुलेआम चुम्बन स्थानीय लोग पसंद नहीं करते।

पिछले 13 वर्षों के दौरान हिमालय के पर्यावरण पर कई सम्मेलन आयोजित हुए। हिमालय के पर्यावरण पर हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 30-31 मार्च 1990 को नई दिल्ली में हुआ। उसी वर्ष अक्तूबर में यूआईएए की सामान्य सभा की बैठक नई दिल्ली में हुई और हिमालय के पर्यावरण पर केन्द्रित दिल्ली अधिघोषणा जारी की गई। हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट और भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित हिमालय पर्वतारोहण और पर्यटन सम्मेलन 21-22 सितम्बर को नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। उसी वर्ष 10-11 नवम्बर को जापान के हिमालय रोमांच ट्रस्ट ने हिमालय के पर्यावरण पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। इसमें विश्व भर के 2000 से ज्यादा प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

4 अप्रैल, 1992 को सर एडमंड हिलेरी की अध्यक्षता में नई दिल्ली में गंगोत्री के संरक्षण पर सेमिनार हुआ। इसके तुरंत बाद 8-9 मई को काठमांडू में यूआईएए के पर्वत संरक्षण आयोग की बैठक हुई। 21-22 सितम्बर, 1992 को नई दिल्ली में हिमालयी पर्वतारोहण और पर्यटन सम्मेलन हुआ, जिसमें हिमालयी पर्वतारोहण के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। जापान के मत्सुमतो में पर्वतीय संरक्षण पर एक माह बाद संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

सन 1994 में गंगोत्री संरक्षण परियोजना का उद्घाटन हुआ जो हिमालय पर्यावरणीय ट्रस्ट के लिए एक मील का पत्थर है। यह भारत सरकार, उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार और हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट की संयुक्त और समेकित परियोजना है। हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट कोष में अमेरिकी हिमालय फाउंडेशन का योगदान है। यह हम सभी का अनुभव है कि इसमें स्थानीय निवासियों का सहयोग जरूरी है। गंगोत्री संरक्षण परियोजना का कार्य सभी को साथ लेकर उद्देश्य प्राप्त करना है।

जनवरी 2000 में हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट ने नई दिल्ली में स्वर्ण जयंती मनाई। इन सभी सम्मेलनों का लक्ष्य हिमालयी पर्यावरण रहा है। इसके अलावा कई अल्पाइन क्लबों और पर्यटन व्यापार संस्थाओं ने भी अपने कार्यक्रमों में हिमालीय पर्यावरण के संरक्षण को शामिल किया है। हिमालयी पर्यावरण के लगभग सभी ट्रस्टियों का विश्वास है कि हिमालय के संरक्षण का संदेश विश्व भर में फैलाया जाए। ❑

(कैप्टेन एम.एस. कोहली 1965 के ऐतिहासिक ऐवरेस्ट अभियान दल के नेता थे; वर्तमान में हिमालयी पर्यावरणीय ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं।)

(पृष्ठ 21 का शेष)

हस्तक्षेप का प्रतिरोध करते हैं। अत: यह जरूरी है कि उनके संदेह दूर किए जाएं, उन्हें शिक्षित बनाया जाए तथा उनमें विश्वास पैदा किया जाए। दूसरे, यह भी जरूरी है कि संवदेनशील क्षेत्रों तक पहुंच को सार्थक ढंग से नियंत्रित किया जाए किंतु शुल्क ढांचे को भी युक्तिसंगत बनाया जाना चाहिए ताकि राजस्व अर्जित करने की अंतनिर्हित संभावनाओं का दोहन किया जा सके। तीसरे, इस बात की पुख्ता व्यवस्था हो कि पर्यटन से प्राप्त राजस्व लाभ फिर से संरक्षण और समुदाय विकास कार्यों में निवेश किया जाए। इंटरनेशनल इको-टूरिज्म सोसायटी की अध्यक्ष सुश्री मेगन ऐंप्लर वुड के शब्दों में "जरूरी यह है कि धन देने वाली और योजना बनाने वाली एजेंसियां इस बात को समझें कि पारिस्थितिकी-पर्यटन विकास का साधन है जो संवेदनशील प्राकृतिक क्षेत्रों के निकट रहने वाले निर्धन समुदायों के आर्थिक विकास में मददगार हो सकता है।" पारिस्थितिकी-पर्यटन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए इस तरह की समझ अनिवार्य है। ❑

(सुश्री उषा बंदे एक स्वतंत्र लेखिका हैं।)

पर्यावरण पर्यटन
भूमि का समुचित प्रबंध

○ मंदीप सिंह सोई

समझदार और संवेदनशील विकासकर्ता और डिजाइनकर्ता के नाते हम यह काम तो कर ही सकते हैं कि भूमि के सही-सच्चे प्रबंधक बनें। तभी हम अपने विनाश को टाल सकेंगे। हम धरती से जुड़ी जनजातियों और धरती मां के साथ उनके संबंधों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके इलाके का परिदृश्य उनकी भूमि के साथ एकाकार रहता है। कोई कारण नहीं कि पारिस्थितिक-पर्यटन सुविधाओं के रूपांकन में इन सिद्धांतों को काम में न लाया जाए।

हालांकि पर्यटन के प्रति चेतना निरंतर बढ़ रही है, फिर भी भारतीय पर्यटन उद्योग धुंआरहित उद्योग बनने से बहुत दूर है। व्यावसायिक स्तर पर इसका तकाजा है कि हम पर्यटन को बढ़ावा देने वाले मूल संसाधनों, जैसे, भौतिक और सांस्कृतिक परिवेश, सांस्कृतिक मूल्य, विरासत और जैव-विविधता की रक्षा करें।

एक बार प्रकृति के जटिल नियमों और धरती की नागरिकता के नियमों को समझ लेने के बाद न केवल हमें वित्तीय दृष्टि से लाभ होगा, बल्कि हम एक तरह से भूमंडल की सेवा भी कर सकेंगे। इससे हम एक अच्छा मानव बन सकेंगे। अगर ऐसा हुआ तो हम अपने सांस्कृतिक मर्म को स्पर्श कर सकेंगे और बेहतर मानवता के लिए जागरूकता पैदा कर सकेंगे।

यह जान लेना जरूरी है कि पारम्परिक सामूहिक पर्यटन अब भी पर्यटन उद्योग की मुख्य विशेषता है और इस बात की पूरी संभावना है कि यह स्थिति कुछ और समय के लिए बनी रहे। इस कारण यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम सामूहिक पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करें; इसे अधिक-पर्यावरण अनुकूल बनाने के उपाय करें और जैव-विविधता पर इसके नकारात्मक प्रभाव को कम से कम करें।

हमें पर्यावरण-पर्यटन के जैव-विविधता संरक्षण संबंधी पहलुओं पर ही नहीं, बल्कि सामूहिक पर्यटन के अन्य संबंधों, विशेष रूप से बड़े होटलों के प्रभाव पर भी विचार करना चाहिए और सोचना चाहिए कि कैसे इन होटलों का डिजाइन और उनका संचालन पर्यावरण के अधिक अनुकूल बनाया जा सकता है।

विश्वव्यापी स्तर पर कुछ पारिस्थितिक 'लाज' बना देने से खास अंतर नहीं आएगा। अंततः हमें पर्यटन उद्योग में व्यापक परिवर्तन लाना होगा। हमें सोचना होगा कि विभिन्न क्षेत्रों, जैसे, विमान सेवाओं, हवाई अड्डों, बड़े मनोरंजन और संगीत पार्कों, गोल्फ मैदानों और खेल-स्टेडियमों का पर्यावरण-रिकार्ड कैसे सुधारा जाए। इस सिलसिले में पर्यावरण-सहायक होटलों के डिजाइन-निर्माण, भवन-निर्माण और संचालन में निजी क्षेत्र की बड़ी जिम्मेदारी है।

पर्यटकों की संख्या बढ़ने से अब पर्यटन क्षेत्र की सभी एजेंसियों को ऐसे सरल दिशानिर्देशों के अनुसार काम करना होगा जिन्हें पर्यावरण-प्रबंधन प्रणालियों में शामिल किया जा सके, चाहे वे राष्ट्रीय या राज्य पर्यटन बोर्ड, सरकार, होटल, विमान सेवा, रेल, परिवहन चालक, गश्ती जहाज, पर्यटन चालक या सूचना माध्यम ही क्यों न हों।

पर्यटन संचालकों, होटल मालिकों और अन्य सम्बद्ध व्यक्तियों को टिकाऊ पर्यटन की जानकारी देना और तत्संबंधी सर्वोत्तम क्रियाकलापों की शिक्षा देना अत्यंत जरूरी है। सम्बद्ध कानून को मजबूत बनाने और संशोधित करने की आवश्यकता है ताकि इस नजरिए को अच्छी तरह समझा जा सके और इसका व्यापक प्रसार किया जा सके। पर्यावरण कानून को एक प्रेरक शक्ति के रूप में काम करना होगा और प्रमाणिकरण का आधार बनना होगा। इसके अलावा व्यापक शिक्षा अभियान तत्काल चलाना

जरूरी है ताकि पर्यटक पर्यावरणपरक सेवाओं की मांग कर सकें।

पारंपरिक पर्यटकों के लिए आचार-संहिता का प्रचार-प्रसार जरूरी है। इससे नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकेगा। सामूहिक पर्यटन प्रभावों के विश्लेषण के लिए नई पर्यटन संविधाओं और मौजूद संविधाओं—दोनों पर विचार करना होगा। पूर्ववर्ती मामले में नई पर्यावरण सेवाओं और सुविधाओं के निर्धारण के लिए न्यूनतम पर्यावरण मानक जरूरी हैं। परवर्ती मामले में कामकाज सुधारने और उसे अधिक पर्यावरण-अनुकूल बनाने के तौर-तरीके अपनाए जाने चाहिए। इसके लिए पुरानी टेक्नॉलाजी को आधुनिक बनाया जा सकता है या फिर अधिक उपयुक्त टेक्नॉलाजी काम में लाई जा सकती है। प्रत्येक मामले में पर्यटन क्षेत्र के लाभों को बाजार मांग, अर्थनीति और प्रभावी प्रबंधन की दृष्टि से आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

यह मामला प्रतिबंधों और दबावों का नहीं, बल्कि पर्यावरण पर्यटन को अधिक अनुकूल बनाने का है। उदाहरण के लिए कई पारंपरिक पुराने होटलों में पानी गरम करने का वर्तमान तरीका अकुशल और महंगा है। इसलिए वैकल्पिक ऊर्जा साधनों के व्यापक प्रयोग का मुख्य पर्यटन कार्य के रूप में स्वागत किया जाना चाहिए। बहुत से पारंपरिक तटीय पर्यटन-स्थलों में पर्यटक दोबारा नहीं जाते क्योंकि वहां पानी प्रदूषित होता है। इसलिए तटीय विश्रामस्थलों के मालिकों और संचालकों के लिए पर्यावरण-अनुकूल कदम उठाना निश्चित रूप से लाभकारी होगा।

पारिस्थितिक डिजाइन

अगर हमें पर्यावरणीय क्षति, तथा अधिक प्रदूषण और ऊर्जा संसाधनों का ह्रास रोकना है, तो न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण, बल्कि मानवीय गतिविधियों में भी स्थापत्य-कला और भौतिक सुविधाओं की आयोजना पर नया दृष्टिकोण अपनाना होगा। यह नया दृष्टिकोण पारिस्थितिक डिजाइन की परिकल्पना पर आधारित होना चाहिए। इसे इन शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है: 'कोई भी ऐसा डिजाइन जो आस-पास के परिवेश से तालमेल बिठाते हुए नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव को कम से कम करे।'

चूंकि पर्यटन सुविधाओं की व्यवस्था अक्सर बहुत खूबसूरत नजारों से भरपूर इलाकों और परिवेश की दृष्टि से महत्वपूर्ण इलाकों में की जाती है, इसलिए उनके डिजाइन विशेष तौर पर इस तरह के बनाए जाने चाहिए कि वे पर्यावरण-अनुकूल हों। कचरे के उपयोग के समुचित तौर-तरीकों और विशेष रूप से दूरदराज के इलाकों में वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों का उपयोग महत्वपूर्ण है। इन पर विचार करने की जरूरत है। भौतिक सुविधाएं प्रौद्योगिकीय दृष्टि से उत्कृष्ट और उपयुक्त, सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य और आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक होनी चाहिए। संयुक्त उद्यमों, संचार और वित्तीय संस्थाओं के साथ काम करके प्रौद्योगिक खर्च कम किया जा सकता है। भौतिक आयोजना और भवन निर्माण (विस्तार के लिए आयोजना) हमेशा दीर्घकालिक प्रयास के रूप में हाथ में लिए जाने चाहिए।

> ***भौतिक सुविधाएं प्रौद्योगिकीय दृष्टि से उत्कृष्ट और उपयुक्त, सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य और आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक होनी चाहिए। संयुक्त उद्यमों, संचार और वित्तीय संस्थाओं के साथ काम करके प्रौद्योगिक खर्च कम किया जा सकता है। भौतिक आयोजना और भवन निर्माण (विस्तार के लिए आयोजना) हमेशा दीर्घकालिक प्रयास के रूप में हाथ में लिए जाने चाहिए।***

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पर्यावरण-अनुकूल सुविधाओं और प्रौद्योगिकी से आर्थिक लाभ मिलता है। पारिस्थितिकी 'लाज' अक्सर वन्य और दूरदराज के इलाके में होते हैं। इसलिए वहां पारंपरिक बुनियादी ढांचा और सेवाएं कम ही मिलती हैं। इनमें पटरी वाले राजमार्ग, सार्वजनिक परिवहन सेवाएं, बिजली और टेलीफोन लाइनें, नलों से प्राप्त पेयजल, सार्वजनिक जल निकासी और कूड़ा-कचरा इकट्ठा करने और ठिकाने लगाने का प्रबंध, समीपवर्ती स्कूल, चिकित्सा सुविधाएं और बाजार आदि शामिल हैं। यही कारण है कि क्रियात्मकता, ऊर्जा और खाद्य-आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उच्चस्तरीय भौतिक आयोजना और उसके लिए बिल्कुल नया और अलग नजरिया अपनाना आवश्यक है। पारिस्थितिकीय लाज का डिजाइन बनाने और उसके निर्माण से पहले, अलगाव वाली खास बातों का सही-सही पता लगाना, बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक सेवाओं के कठिनाई से मिलने के कारणों का पता लगाना जरूरी है। साथ ही पहले साफ-साफ यह बताना जरूरी होगा कि आप आत्मनिर्भरता का कितना ऊंचा स्तर चाहते हैं, या प्राप्त करना आवश्यक समझते हैं।

बहुत से परिपक्व पर्यटक समृद्ध शहरों और तटीय विश्रामस्थलों में उपलब्ध सुविधाओं की उम्मीद किसी गरीब ग्रामीण क्षेत्र में नहीं करते। कुछ तो मुसीबतों का भी आनंद लेते हैं, भले ही थोड़े समय के लिए। वे सुविधाओं के लिए अधिक देने को भी तैयार रहते हैं लेकिन कुछ मानकों, विशेष रूप से सुरक्षा और मूल सफाई मानकों पर कभी समझौता नहीं हो सकता।

पर्यटन सुविधाओं को चारों तरफ के प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिवेश के साथ समन्वित करना हमेशा महत्वपूर्ण होता है। इसलिए दीर्घकालीन पर्यटक-सुविधा मानक

बढ़ते व्यवसायीकरण से पहाड़ों पर बदलता परिदृश्य

क्षेत्रीय वनस्पति और भू-संरचना के प्राकृतिक रूप के साथ समरूप होने चाहिए। जो भी पर्यटन नीति बनाई जाए, उसमें स्थान विशेष के महत्व का हमेशा ध्यान रखा जाए।

स्थल-आयोजना

स्थल-आयोजना और डिजाइन एक ऐसी प्रक्रिया है जो भूमि उपयोग, मानव प्रवाह, संरचना, सुविधा और उपयोगिता से संबंधित मामलों को प्राकृतिक और मानवीय पर्यावरण के साथ जोड़कर देखती है। पर्यटन-विकास और पर्यावरण-संरक्षण में सामंजस्य बढ़ाने के लिए जरूरी है कि मूल संरचना का डिजाइन संवेदनशील हो, और स्थल-डिजाइन और भू-परिदृश्य पर्यावरणीय और सामाजिक जरूरतों के अनुसार हों।

पर्यटन-स्थल की विशेषताओं की रक्षा के लिए स्थान विशेष की प्राकृतिक प्रणालियों की गहरी पैठ और पर्यावरण के अवसरों और कठिनाइयों के प्रति सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। हम पारंपरिक पर्यटन-सुविधाएं प्रदान करने के तौर-तरीकों को बदलना चाहते हैं। हम स्थल आयोजन और डिजाइन के संबंध में नई सोच चाहते हैं, ऐसी सोच जिसमें सभी बातें ध्यान में रखी जाएं। टिकाऊ स्थल-आयोजना और डिजाइन से पर्यटन-स्थल और परिवेश की सुविधाओं में बेहतर तालमेल बैठाया जा सकता है और डिजाइन के पर्यावरण-प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

पर्यटन-सुविधा की किसी भी स्थल-आयोजना और डिजाइन में साफ-साफ बताया जाना चाहिए कि भूखंड विशेष में मानव कार्यों और निर्माण का क्रम क्या होगा। स्थान, आम आकार और रूप बताने वाले ग्राफ के अलावा परियोजना-स्थल, आयोजना और डिजाइन के विभिन्न पहलुओं को संवारने के क्रम में यह भी बताया जाना चाहिए कि परियोजना के विभिन्न काम किस क्रम से और कितने अंतराल में पूरे किए जाएंगे। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि स्थल पर सभी मानव-गतिविधियों का प्राकृतिक और मानव-पर्यावरण पर कम से कम नकारात्मक प्रभाव पड़े।

पिछले दशक में निर्जन क्षेत्रों में बढ़ती यात्राओं और पारिस्थितिक प्रणालियों पर पड़ते उनके दुष्प्रभाव को ध्यान में रखते हुए यह विवेकपूर्ण होगा कि पारिस्थितिक पर्यटन के विकास के लिए ऐसे क्षेत्रों का चयन किया जाए जो आरक्षित प्राकृतिक स्थलों के बाहर हों, हालांकि यह हमेशा संभव नहीं होता क्योंकि कुछ आरक्षित क्षेत्र बहुत बड़े होते हैं। 'पारिस्थितिक लाज' क्या हैं ? चूंकि पारिस्थितिक लाज 1990 के दशक के पूर्वार्द्ध में सामने आए, इसलिए इनकी व्याख्या कई तरह से की जाती है। कुछ ऐसे मूल सिद्धांत हैं जिनके आधार पर 'पारिस्थितिक लाज' को पारंपरिक होटल से अलग माना जाता है। पारिस्थितिक लाज का डिजाइन और उसके अंदर की गतिविधियां प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण से गहन मेलमिलाप को बढ़ावा देती हैं। लॉज का वातावरण भी स्थल की विशिष्ट पृष्ठभूमि के अनुकूल होता है। यही वातावरण वह मुख्य तत्व है जो पारिस्थितिक लॉज को पारंपरिक होटल और उसकी सुविधाओं से अलग करता है। पारिस्थितिक लाजों के दस बुनियादी सिद्धांत हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता है :-

1. आस-पास के पेड़ पौधों और जीव-जंतुओं की रक्षा में सहायक हों।
2. निर्माण के समय प्राकृतिक परिवेश पर कम से कम असर डालते हों।
3. रूप-स्वरूप, भूदृश्य, रंग और स्थानीय स्थापत्य-कला के प्रयोग पर ध्यान देते हुए विशिष्ट भौतिक और सांस्कृति परिवेश से मेल खाते हों।
4. जलप्राप्ति के वैकल्पिक और टिकाऊ साधनों का प्रयोग करते हों और पानी की खपत कम करें।

अतीत के ज्ञान को वर्तमान की जानकारी और प्रौद्योगिकी से मिलाकर ऐसे पारिस्थितिक लॉज बनाए जा रहे हैं जिनमें प्रकृति का आनंद उठाने के लिए स्वस्थ और आरामदेह स्थल होते हैं। ऐसे भवन भी बनाए जा रहे हैं जो आस-पास के परिवेश से घुलमिल जाते हैं।

5. ठोस कचरे और मल-जल का ध्यान से निपटान करें।
6. ऊर्जा आवश्यकताएं नियंत्रित होने वाले डिजाइन और बारंबार उपयोग में लाए जाने वाले संसाधनों से पूरी की जाती हों।
7. जहां तक हो सके, परंपरागत आवास-टेक्नालोजी और सामग्री का प्रयोग करते हों और अधिक टिकाऊपन आधुनिक टेक्नालोजी और सामग्री के मिश्रण से किया जाता हो।
8. स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर काम का प्रयास करें।
9. कर्मचारियों और पर्यटकों को आसपास के प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण की जानकारी देने के लिए व्याख्यात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हों।
10. शिक्षा कार्यक्रम और अनुसंधान के जरिए टिकाऊ स्थानीय विकास में योगदान करते हों।

वर्तमान स्थिति

नौवें दशक के पूर्वार्द्ध में विश्वव्यापी मंदी से विकास में ठहराव आने के बाद विश्व के सभी कोनों में पारिस्थितिक लॉज स्थापित हो गए हैं और पर्यटन उद्योग इन लाजों के कारण फल-फूल रहा है। न्यूनताएं लाने वाले विकासकर्ता और डिजाइनर भूमि और स्थल आयोजना, स्थापत्य-डिजाइन और निर्माण की पारंपरिक और उच्च-प्रौद्योगिकीय अवधारणाओं को संश्लिस्ट कर रहे हैं; स्थानीय समुदायों की भागीदारी की योजनाएं बना रहे हैं, वर्तमान पारिस्थितिक प्रणाली के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता व्यक्त कर रहे हैं, और साथ ही वित्तीय लाभ भी कमा रहे हैं। अतीत के ज्ञान को वर्तमान की जानकारी और प्रौद्योगिकी से मिलाकर ऐसे पारिस्थितिक लॉज बनाए जा रहे हैं जिनमें प्रकृति का आनंद उठाने के लिए स्वस्थ और आरामदेह स्थल होते हैं। ऐसे भवन भी बनाए जा रहे हैं जो आस-पास के परिवेश से घुलमिल जाते हैं, निर्माण में संसाधनों को सुरक्षित रखते हैं, ऊर्जा और जल संसाधनों की बचत करते हैं और सबसे बढ़कर डिजाइन, निर्माण और संचालन कार्यों में स्थानीय लोगों को शामिल करते हैं।

विश्व में अधिकतर सरकारी एजेंसियों के पास इन लाजों के डिजाइन और विकास के लिए विशिष्ट नियम या न्यूनतम मानक नहीं हैं। इसलिए भू-दृश्य वास्तुकारों, वास्तुशिल्पियों और आंतरिक डिजाइनकर्ताओं पर यह दायित्व आ पड़ा है कि वे अपने डिजाइन-सिद्धांत और आचार-संहिता बनाएं जो पर्यावरण और समाज पर कम से कम प्रतिकूल प्रभाव डालें और भौतिक संरचना तथा आसपास के पर्यावरण के बीच टिकाऊ और सुव्यवस्थित संबंध बनाएं।

इस बात को लेकर आशा का भाव व्याप्त है कि पारिस्थितिक लाजों की संख्या बढ़ती जा रही है। कोई वास्तविक सर्वेक्षण तो नहीं किया गया जिससे वस्तुस्थिति का पता चल सके लेकिन हाल के वर्षों में हुए पारिस्थितिक सम्मेलनों में भारी उत्साह देखने को मिला है। यह सब पंख लगाकर उड़ते पारिस्थितिक पर्यटन उद्योग के लिए शुभ संकेत है।

पारिस्थितिक लॉज उद्योग के खिलाफ इस बात को लेकर बराबर उंगलियां उठाई जा रही हैं कि क्या वह पर्यावरण-सुरक्षा और सामुदायिक विकास में सहायक होगा और वास्तव में टिकाऊ बन पाएगा। अपने भविष्य को लेकर उसे गंभीर और कठिन विकल्पों का सामना करना पड़ रहा है। अगर हमें इन कठिनाइयों को निश्चित रूप से पार करना है तो लॉज-मालिकों और संचालकों को चुनौतियों का सामना करना होगा और आगंतुकों के लिए प्रदूषणरहित पर्यावरण और लगभग प्राकृतिक वातावरण का निर्माण करते रहना होगा।

अगर हमें एक ऐसी टिकाऊ दुनिया बनानी है जिसमें हम भावी मानव पीढ़ियों और सभी जीवित प्राणियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सही मायने में जिम्मेदार हों तो हमें यह कबूल करना होगा कि हमारी वर्तमान वास्तुकला, इंजीनियरिंग और निर्माण-कार्यों में गंभीर कमियां हैं। टिकाऊ संसार की रचना के लिए हमें ये खामियां दूर करनी होंगी। उत्पादों, भवनों और भू-दृश्यों के डिजाइनों को हमें परिवेश की गहरी पैठ के रंग से सजाना होगा। टिकाऊपन के मूल को हमें डिजाइन के सूक्ष्मतर ब्यौरे से मजबूत बनाना होगा।

इस समय मानव जनसंख्या पृथ्वी की वहन क्षमता से कहीं अधिक है। हम समझदार और संवेदनशील विकासकर्ता और डिजाइनकर्ता के नाते भूमि के सही-सच्चे प्रबंधक बन सकते हैं और अपने अस्तित्व को बनाए रख सकते हैं। विश्व के स्थान- विशेष की जनजातियों से और धरती मां के साथ उनके संबंधों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके भू-परिदृश्य वहां की भूमि से एकाकार हुए रहते हैं। कोई वजह नहीं कि हम पारिस्थितिक पर्यटन सुविधाओं के रूपांकन के लिए इन सिद्धांतों का उपयोग न कर सकें।

नई सहस्राब्दि में हम दो वर्ष आगे बढ़ चुके हैं। इस बात को लेकर आशा का भाव व्याप्त है कि पारिस्थितिक लाजों की संख्या बढ़ती जा रही है। कोई वास्तविक सर्वेक्षण तो नहीं किया गया जिससे वस्तुस्थिति का पता चल सके लेकिन हाल के वर्षों में हुए पारिस्थितिक सम्मेलनों में भारी उत्साह देखने को मिला है। यह सब पंख लगाकर उड़ते पारिस्थितिक पर्यटन उद्योग के लिए शुभ संकेत है। ❑

(श्री मंदीप सिंह एक पर्वतारोही एवं अन्वेषक हैं, और इंग्लैंड की 'रायल जिओग्राफिकल सोसाइटी' के अध्येता हैं।)

पर्यावरण-पर्यटन और पर्वत

○ महेश्वर राव

अपनी व्यापक भौगोलिक एवं वातावरणीय विविधता के कारण भारत में सचमुच वनस्पतियों और पुष्पों-पादपों की सबसे समृद्ध किस्में पाई जाती हैं। अफसोस है कि हमारी यह अकूत और अद्भुत प्राकृतिक संपदा मनुष्य के घातक उपभोग की शिकार बन रही है। यही समय है कि हम इस तथ्य का अहसास करके अपने पर्यावरण तथा परिवेश को पुरानी ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए अच्छे नागरिकों की तरह अधिकतम कोशिश करें।

पर्यटन सचमुच किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। हमारे जैसे विकासशील देश के लिए तो यह विशेषकर आवश्यक है। पर्यटन से राजस्व की बढ़िया आमद होती है। साथ ही विदेशी मुद्रा भी इससे बखूबी आती है। इसलिए यह बात दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि पर्यटन विकास के लिए सभी सुविधाएं दी जानी चाहिए।

इसके बावजूद यह भी सच है कि यदि पर्यटन व्यवस्थित न हो तो उससे पर्यावरण बिगड़ने तथा पारिवेशिक संतुलन डगमगाने का खतरा पैदा हो जाता है। इसी संदर्भ में हमारी आर्थिक वृद्धि को टिकाऊ बनाने तथा पारिवेशिक संतुलन को बरकरार रखने के लिए पर्यावरण-पर्यटन सबसे उपयुक्त दिखाई देता है। विडंबना यह है कि सभी पर्यटन-केंद्रों पर व्यापारिक गतिविधि को बढ़ावा देने वाली तेजी से बढ़ती पर्यटकों की तादाद पर्यावरण पर जो घातक वार कर रही है, उससे उबरने तथा बाद में उसे पुनर्जीवित करने के लिए बहुत बड़ी रकम की जरूरत पड़ेगी। इसलिए आज राजस्व का प्रमुख जरिया माने जाने वाले पर्यटन से यदि इस संभावित क्षय की रोकथाम के समुचित उपाय न किए गए तो इसके कारण होने वाला पर्यावरणीय क्षय कल यही पैसा बरबाद करने का बड़ा जरिया बन सकता है। अंधाधुंध व्यावसायिक पर्यटन के कारण या अन्य कारणों से हमारे पारिवेशिक संतुलन में गंभीर बाधा आना कोई नहीं बात नहीं है। पर्यावरण में क्षय का धीमा जहर हमारे देश में कम से कम पिछले चार-पांच दशक से दौड़ रहा है। लेकिन आज यह खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है, जिसने न सिर्फ हमारे देश बल्कि पूरी दुनिया की चेतना को झिंझोड़ डाला है। यह क्रूर व्यावसायिकरण और अंधाधुंध बढ़ती आबादी का प्राकृतिक दुष्परिणाम है। पर्यावरण के इस गंभीर क्षय का सिर्फ भारत ही शिकार नहीं है, यह काफी हद तक दुनिया भर की समस्या बन रहा है।

समस्या की इसी गंभीरता के मद्देनजर संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने पर्यावरण पर जोर देना शुरू कर दिया है, खासकर रियो-द-जनेरो में 5 जून, 1992 को पर्यावरण पर हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के बाद से पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। व्यावसायिक पर्यटन के पर्यावरण और परिवेश पर पड़ने वाले खराब असर, खासकर हमारी अधिकतर पर्वतीय सैरगाहों की हालत के मद्देनजर वर्ष 2002 को पर्यावरण-पर्यटन और पर्वतों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष सही ही घोषित किया गया है।

इसमें शक नहीं कि भारत (शायद किसी भी अधिक आबादी वाले विकासशील देश की तरह) पारिवेशिक क्षय के बुरी तरह शिकार देशों की जमात में शामिल है। हमारी पर्वतीय सैरगाहों पर सरसरी निगाह दौड़ाने भर से इस बात का आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है। तीन दशक पूर्व किसी पर्वतीय सैरगाह में घूमकर आनेवाले पर्यटकों को वहां दुबारा जाने पर यह अहसास आसानी से हो जाता है। हरे-भरे, घने पहाड़ी जंगलों की जगह पहाड़ी ढलानें अब पथरीली और

बद्नुमा इमारतों से घिरी दिखाई देती है। दशकों पहले आंखों को सुकून देनेवाले वहां के नजारे अब आंखों में चुभने लगे हैं। पहले के खूबसूरत हरियाली से भरे पिकनिक-स्थल, पहाड़ी चोटियां तथा अन्य नयनाभिराम स्थल आज दुकानों, होटलों तथा रेस्तरां आदि से पट गए हैं। हमारे देश में सफाई और नागर-व्यवहार की समझ की दुर्भाग्यपूर्ण कमी के कारण पहले के ऐसे तमाम खूबसूरत स्थल आज गंदगी और कूड़े के ढेर बन गए हैं। साफ और स्वच्छ पहाड़ी झरनों की जगह अब नाली का पानी झरता है। यह व्यावसायिकता तथा उसके कारण इमारतों की भीड़ और समुचित नियोजन के सर्वथा अभाव का अपरिहार्य परिणाम है।

अपने समूचे परिवेश के पूरी तरह खत्म हो जाने के इस आसन्न खतरे के प्रति सचेत हो जाने का यही मुनासिब समय है। इसमें शक नहीं कि कई आर्थिक बाधाएं और मजबूरियां व्यावसायिकता नियंत्रण की कोशिश में आड़े आ सकती है। इसके बावजूद यह बात अवश्यंभावी है कि हमें व्यावसायिकता और पारिवेशिक संतुलन के बीच लक्ष्मण-रेखा खींचनी होगी ताकि हमारे परिवेश और पर्यावरण पर यह घातक असर पूरी तरह खत्म हो जाए, साथ ही पर्यावरण-अनुकूल आर्थिक विकास के लिए पर्यटन को नियमित करने का कार्य भी हो सके। पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के 'इको' में यह अत्यंत जटिल संतुलन स्थापित करना और उसे बरकरार रखना सचमुच कठिन है जिसका अच्छे नागरिक होने के नाते हम सभी को सामूहिक प्रयास करना चाहिए। इतना तय है कि इस क्षेत्र में एक बार अधिकतम संतुलन स्थापित होने के बाद आनेवाले दशकों में उसे बरकरार रखना निश्चित तौर पर कहीं आसान कार्य होगा।

हमारे पुराने खूबसूरत पर्वतीय पर्यटन-स्थलों में से कई के आंखों का शूल बन जाने से अक्सर यह लगने लगता है कि उनकी बरबादी संवारना असंभव है। हमारे ऐसा महसूस करने के बावजूद परिस्थिति इतनी खराब नहीं है। जहां चाह, वहां राह। वक्त का तकाजा कदम-दर-कदम व्यवस्थित तरीका अपनाने की है, जिसका मकसद परिस्थिति को सुधारना एवं पर्यावरण तथा पारिवेशिक संतुलन पुनर्स्थापित करना होना चाहिए।

यह बात अबूझ लग सकती है और इस समय शायद किसी को समझ भी न आए की शुरूआत कहां से और कैसी की जाए? इस लिहाज से निम्नलिखित बुनियादी दिशानिर्देशों का पालन करके हम सुधारवादी पथ पर आरंभ से आगे बढ़ सकते हैं, जो हमें पारिवेशिक संतुलन की लंबी राह पर अग्रसर करेगा:

1. जंगलों की कटाई पर हमें कड़ी इच्छाशक्ति और निष्ठा के साथ रोक लगा देनी चाहिए। हमारी पर्वतीय सैरगाहों से सटे इलाकों और दूरदराज की पहाड़ियों पर यह नियम खासतौर पर लागू किया जाना चाहिए। यह पहला कदम पर्यावरण की हत्या रोकने के लिए न्यूनतम मगर सबसे जरूरी उपाय है।
2. इस सबसे महत्वपूर्ण कदम के बाद बरबाद हो चुके जंगलों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। बदशक्ल और खाली दिख रही पहाड़ी ढलानों की हरियाली पुनर्जीवित करने के लिए जबरदस्त वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। हमारी सभी पर्वतशृंखलाओं को बिना भेदभाव के इस पुनर्जीवन के प्रयास की आवश्यकता है। इन शृंखलाओं में हिमालय, उत्तर-पूर्व की विभिन्न पर्वत-शृंखलाएं, पूर्वी घाटियां, सतपुड़ा तथा विंध्याचल तथा अरावली आदि सभी शामिल हैं। हमारे पर्वतीय वनों के अंधाधुंध सफाये का वातावरण तथा वर्षा पर बहुत बुरा असर पड़ा है। साथ ही इससे भूस्खलन तथा अचानक बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा भी बढ़ गया है।

हमारे क्षितिज पर पारिवेशिक आपदा की सुनाई देती आहट के मद्देनजर वन महोत्सव की जबर्दस्त आवश्यकता आज पहले के मुकाबले ज्यादा शिद्दत से महसूस की जा रही है। इससे नयनाभिराम खूबसूरती लौटने के साथ ही पहाड़ों में बाढ़ और भूस्खलन से होने वाली तबाही

जंगलों की कटाई पर कड़ी रोक आवश्यक

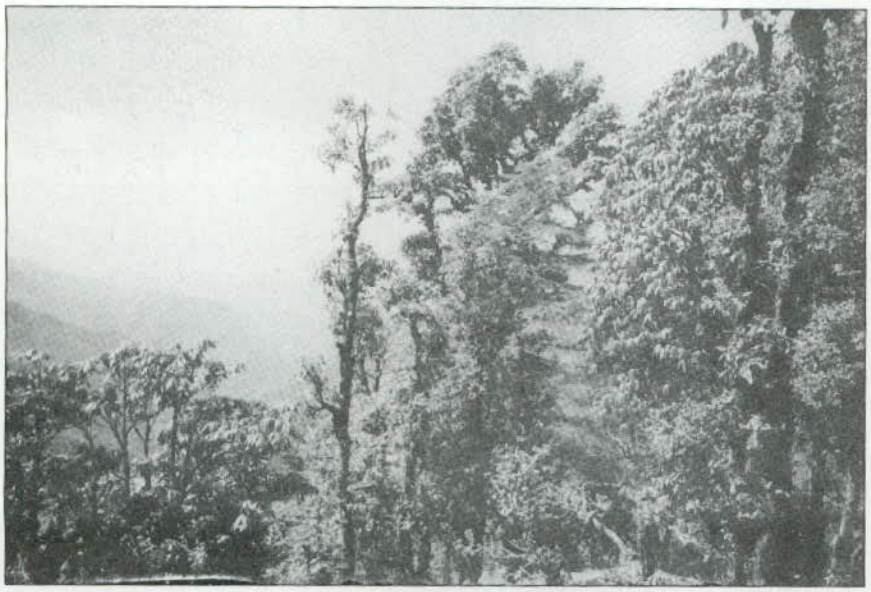

मसूरी के पूर्व में स्थित 'धनौल्टी' का एक खूबसूरत दृश्य

भी काफी हद तक रुक जाएगी।

3. इस प्रकार चिन्हित प्रस्तावित तथा वर्तमान हरित-पट्टियों में इमारतें खड़ी करने पर रोक न लग सके तो उसे न्यूनतम स्तर पर लाने की भारी आवश्यकता है। वरना अंधाधुंध निर्माण गतिविधि से पेड़ों की कटाई पर रोक के साथ ही बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाने का मकसद बेकार चला जाएगा। हमारी पर्वतीय सैरगाहों पर और उनके पड़ोस में एक सरसरी निगाह डालने भर से निर्माण गतिविधियों पर कड़ी रोक लगाने की आवश्यकता समझ में आ जाएगी। पहले से ही इमारती भीड़ की शिकार हमारी सभी बड़ी पर्वतीय सैरगाहों के आसपास व्यावसायिक इमारत-निर्माण गतिविधि पर संपूर्ण प्रतिबंध लगाना ही सबसे अच्छा होगा।
4. नई पर्वतीय सैरगाह के रूप में विकसित होने की गुंजाइश वाली नयनाभिराम जगहों में और उनके आसपास भी निर्माण गतिविधियों को सीमित और नियमित करने पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए। इसका मकसद हमारे पर्यावरण पर अनावश्यक अवैध कब्जे को पूरी तरह नकारना और साथ ही नियमित पर्यटन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे तथा सुविधाओं की स्थापना होना चाहिए। नयनाभिराम दृश्यों और एक खूबसूरत पर्वतीय सैरगाह के रूप में विकसित किए जाने की गुंजाइश का एक अच्छा उदाहरण मसूरी से 75 किमी. पूर्व में स्थित धनौल्टी है। इस सिलसिले में हमें ब्रिटेन से सबक लेना चाहिए। ब्रिटिश नागरिकों ने ही हमारे देश में कई पर्वतीय सैरगाहों की स्थापना की थी। समुचित नियोजित विकास तो किया ही गया था, साथ ही पर्यावरण तथा परिवेश पर भी कोई बुरा असर नहीं पड़ा। स्वतंत्रता-प्राप्ति काल के मुकाबले आज हालांकि आबादी तीन गुनी हो चुकी है, मगर गंभीर और निरन्तर प्रयासों के धीरे-धीरे सुपरिणाम आने लगेंगे।
5. व्यावसायिक गतिविधि को व्यवस्थित ढंग से नियमित करना होगा। पर्वतीय सैरगाहों में प्रोत्साहित आर्थिक गतिविधि के केंद्र में स्थानीय हस्तशिल्पों सहित स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की भावना होनी चाहिए। साथ ही पर्यटन को स्थानीय लोक कला तथा संस्कृति को जिंदा रखने तथा बढ़ावा देने का माध्यम बनाया जाना चाहिए। इससे पर्यटकों को समृद्ध लोककला और संस्कृति का आनंद भी मिल पाएगा। इस कार्य को सिद्ध करने के लिए सांस्कृतिक केंद्र बनाना मुनासिब होगा। ऐसे प्रयोगों से हमारे लोक कलाकारों तथा कारीगरों को बेहतर आजीविका भी हासिल हो पाएगी।
6. स्थानीय उत्पाद तथा स्थानीय संस्कृति, कला और शिल्प को बढ़ावा देने पर टिकी आर्थिक गतिविधि को अधिकतम सहारा दिया जाना चाहिए। साथ ही स्थानीय आर्थिक वृद्धि से कटी बाहरी आर्थिक गतिविधि को यदि रोका न भी जाए तो हतोत्साहित करने के उपाय तो किए ही जाने चाहिए। हमारी पर्वतीय सैरगाहों के जरूरत से ज्यादा व्यावसायीकरण (समुद्रतटीय रिजॉर्टों की तरह कई अन्य नयनाभिराम खूबसूरती वाली जगहों की तरह) का अक्सर स्थानीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि से कोई तालमेल नहीं होता। उदाहरण के लिए दशकों से चल रहे जंगल काटने के अंधाधुंध अभियान का न तो स्थानीय अर्थव्यवस्था से कोई सीधा रिश्ता है और न ही उससे आर्थिक स्थिति सुधारने में कोई मदद मिलती है। इसके बजाय जंगलों पर आश्रित स्थानीय जनता के पेट पर जंगल कटने से लात लग रही है। अधिक और गैरसंबद्ध व्यावसायिक गतिविधि के हाथों स्थानीय जनता के इसी अमानवीय शोषण के कारण उत्तरांचल में 'चिपको' आंदोलन तथा कर्नाटक में 'अप्पिको' आंदोलन जैसे विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हुआ। पर्वतीय सैरगाहों तथा पर्यटकों की दिलचस्पी वाले अन्य स्थानों पर इतनी बेमतलब व्यावसायिक गतिविधि देखकर आज बेहद निराशा और कुंठा होती है। नयनाभिराम खूबसूरती वाली जगहों में मॉल तथा कस्बे के भीतर ही नहीं बल्कि

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत वाले स्थानों पर भी बेहिसाब दुकानें तथा रेस्तरां खुल गए हैं। ऐसी लगभग सभी जगहों पर बिकने वाली वस्तुओं का स्थानीय उत्पादों के साथ कोई तालमेल नहीं है। पर्यटकों के अपने ही नगरों में मिलने वाली चीजें अब वहां भी बिकने लगी हैं। ऐसे में अपने घर के आसपास मिलने वाली चीजों को बहुतायत में खरीदने के लिए लोगों को पर्वतीय सैरगाहों, तटीय रिजॉर्टों तथा ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर जाने की क्या आवश्यकता है? यह दरअसल एक दुष्चक्र है जिसमें बेमतलब व्यापारिक गतिविधि पर्यटकों को प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद लेने के लिए सैर पर जाने को प्रेरित नहीं करती अपितु फिर अंधाधुंध खरीदारी करने के लिए प्रवृत्त करती है।

हमारे देश में नागर शिष्टाचार की भारी कमी के कारण होटलों और रेस्तरां की अंधाधुंध बढ़वार से चारों तरफ कूड़ा फैलने तथा पर्यावरण का दम घुटने की भी नौबत आ रही है। पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए हमें इस बेमतलब व्यावसायिकरण को जड़ से उखाड़ कर सिर्फ स्थानीय रूप से उपयोगी आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने के सख्त उपाय करने होंगे।

7. अंतिम मगर महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि हम सभी अच्छे नागरिक अपने भीतर नागर-शिष्टाचार पैदा करें और अपने आसपास के पर्यावरण पर ध्यान दें। यहां यह बात दोहराना बेमानी है कि पर्यटन-संवर्धन की सभी गतिविधियों में पर्यावरण और परिवेश के रखरखाव के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं की स्थापना का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। इस बात पर हमारी पर्यटन-संवर्धन संस्थाएं, आईटीडीसी तथा सभी राज्य पर्यटन विकास निगम खास ध्यान दे रही हैं। इसके बावजूद सिर्फ बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करा देने से समस्या हल नहीं हो पाएगी। इसका अंतिम उपाय हमारे द्वारा अच्छे नागरिक की तरह बुनियादी नागरिक सेवाओं का सही उपभोग किए जाने में ही निहित है। इस क्षेत्र में शुरूआत सही शिक्षा से ही होगी। यह बात अत्यंत दुखदायी है कि हमारे देश में समाज का आर्थिक रूप से संपन्न तबका, हमारे अभिजात और प्रबुद्ध वर्ग भी नागर-शिष्टाचार से वंचित हैं और सर्वश्रेष्ठ नागरिक सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद लापरवाही से पर्यावरण बिगाड़ता है। इसकी पुष्टि के लिए यह एक मिसाल ही काफी है कि पांव से दबाकर खोलने वाले कूड़ेदान उपलब्ध होने के बावजूद जनता अक्सर सड़ने वाली चीजें इधर-उधर फेंक देती है। इसमें शक नहीं कि प्रयास काफी कारगर सिद्ध हो सकते हैं, मगर साथ ही कानून और प्रशासनिक पाबंदियां भी आवश्यक हैं। हमारे लिए पर्यावरण को गंदा करना दंडनीय अपराध बनाना सिंगापुर की तरह ही आवश्यक हो जाएगा, लेकिन ऐसे उपाय प्रवर्तित करने से पहले जन स्वास्थ्य और सफाई के लिए आवश्यक सभी नागरिक सुविधाएं उपलब्ध करानी होंगी।

पर्वतीय सैरगाहों तथा पर्यटकों की दिलचस्पी वाले अन्य स्थानों पर इतनी बेमतलब व्यावसायिक गतिविधि देखकर आज बेहद निराशा और कुंठा होती है। नयनाभिराम खूबसूरती वाली जगहों में मॉल तथा कस्बे के भीतर ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत वाले स्थानों पर भी बेहिसाब दुकानें तथा रेस्तरां खुल गए हैं।

जन स्वास्थ्य और सफाई के मुद्दे से यह बात भी गहराई से जुड़ी है कि पर्यावरण के नजरिए से सड़ने वाली चीजों के प्रबंधन पर ध्यान दिया जाए। अपने आप सड़ने वाली चीजें वे हैं जो सूक्ष्मजैविकों द्वारा गलाई जाती हैं। पिछले चार-पांच दशक से चली कृत्रिम वस्तुओं की लहर और प्लास्टिक पोलीथीन संस्कृति की चपेट में आई पूरी दुनिया का पारिवेशिक संतुलन इस कारण गड़बड़ा रहा है। इसमें दिक्कत यह है कि मजबूत, सस्ती, टिकाऊ, पानी से बचाने वाली और सुविधाजनक होने के कारण पोलीथीन की थैलियों और डब्बे-टोकरियां, आदि बाजार पर छा गए हैं। इनका पत्ता साफ करना सचमुच टेढ़ी खीर साबित हो रहा है। पोलीथीन की चीजों को बाजार से खदेड़ने के लिए जैविक प्रक्रिया से नष्ट हो सकने वाली सामग्री तैयार करने के प्रयास काफी जोरशोर से चल रहे हैं। पोलीथीन पर्यावरण के लिए सबसे नुकसानदेह भले हों, मगर यह भी सच है कि टिन और बोतलों से भी पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इनके सस्ते विकल्पों की आवश्यकता सिर्फ पर्यावरण-पर्यटन के लिए ही नहीं, रोजमर्रा जीवन के लिए भी गहराई से महसूस की जा रही है। यह अच्छी बात है कि हम अपने आप सड़कर खत्म न होने वाली सामग्री से पर्यावरण को हर हाल में पहुंचने वाले खतरे के प्रति जागरूक तो हुए हैं।

पर्यावरण-पर्यटन के अलावा पर्वतारोहण और चढ़ाई जैसी रोमांचक गतिविधियों के पर्यावरणीय तथा पारिवेशक पहलुओं को उजागर करना भी आवश्यक है। हिलेरी और तेन्जिंग द्वारा 1953 में दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर 'सगरमाथा' यानी 'माउंट एवरेस्ट' पर पांव रखने के बाद से हिमालय में पर्वतारोहण के लिए जानेवालों जत्थों की तादाद लगातार बढ़ रही है। आम लोगों के बीच पर्वतारोहण, ट्रैकिंग तथा अन्य रोमांचक गतिविधियों के प्रति बढ़ता लगाव सचमुच हर्ष का विषय है। इसके बावजूद ऐसी

संपूर्ण और बढ़ावा देने योग्य गतिविधियों के भी पर्वतों के पर्यावरण तथा परिवेश पर कुछ दुष्प्रभाव पड़े हैं। इस विचित्र परिस्थिति से सिर्फ नागर-शिष्टाचार और पर्यावरण-जागरूकता द्वारा नहीं, बल्कि विभिन्न कार्यों के लिए सस्ते, जैविक प्रक्रिया से नष्ट होने वाले कंटेनर तैयार करके ही निपटा जा सकता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि हमारे हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (एचएमआई) दाजीलिंग, नेहरू पर्वतारोहण संस्थान (निम), उत्तरकाशी तथा पश्चिम हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (डब्लूएमएमआई), मनाली, जैसे संस्थान सिर्फ पर्वतारोहण तथा उससे संबंधित रोमांचक गतिविधियों के संवर्धन के लिए ही बेहतरीन कार्य नहीं कर रहे हैं, ये पर्यावरण तथा परिवेश के प्रति जागरूकता भी फैला रहे हैं। इन संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रमों के जरिए प्रशिक्षुओं की दिलचस्पी पहाड़ों में विभिन्न ऊंचाईयों पर उपलब्ध प्राकृतिक दृश्यों और वनस्पतियों में जगाने के साथ ही उन्हें पहाड़ों पर सफाई जैसी पर्यावरण की बुनियादी बातों का सबक भी दिया जाता है। इस सिलसिले में उन्हें यह बात खासतौर पर सिखाई जाती है कि वे अपनी गंदगी और कूड़े को मिट्टी में हमेशा अच्छी तरह से दबा दें। साथ ही शौचादि से निवृत्त होने के लिए अपने शिविर से नीचे की तरफ जाने की सीख भी दी जाती हैं। कारण यह है कि बरसात या भूस्खलन होने पर वही मल सड़कर मिट्टी बनने से पहले ही बहकर नीचे आ सकता है। फलों के छिलकों आदि सड़ने लायक कूड़े की अन्य किस्मों के निपटारे के लिए भी यही सिद्धांत काम आता है। पर्वतीय पर्यावरण के प्रति चेतना की ऐसी तमाम बुनियादी बातें प्रशिक्षुओं को रोमांच के प्रति लगाव के साथ सिखाई जाती हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि यदि व्यक्ति में आवश्यक नागर-शिष्टाचार और आसपास के प्रति लगाव हो तो सड़कर खत्म हो जाने वाले कूड़े का निपटारा कितना आसान, त्वरित और पर्यावरण को सुरक्षित करने वाला है। समस्या दरअसल सड़कर खत्म न हो सकने वाली सामग्रियों के निपटान की है। इसका अंतिम हल जैविक प्रक्रिया से सड़नशील चीजों के उत्पाद और प्रयोग में निहित है। इस मुहिम में हम सभी को योगदान करना चाहिए।

पर्यटन को हर प्रकार से पर्यावरण-अनुकूल बनाने के लिए उसके नियमन के साथ ही पर्वतारोहण, ट्रैकिंग तथा अन्य रोमांचक गतिविधियों के व्यवस्थित नियमन का सवाल भी मुंह बाये खड़ा है। सरकार एम एम आई, निम तथा डब्लूएचएमआई के सक्रिय सहयोग से इसे अंजाम दे रही है। पर्यटन और रोमांचक गतिविधि के नियमन के अंतर्गत बायोस्फेयर रिजर्व्स यानी जैवपरिधि उद्यान घोषित किए जा चुके स्थानों पर पर्यटन और ट्रैकिंग के लिए जत्थे ले जाने पर पाबंदियां लगाई गई हैं। ऐसा ही सबसे सुरक्षित बायोस्फेयर रिजर्व नंदादेवी जैवपरिधि उद्यान है। यह उद्यान नेदा देवी की चोटी के नीचे बर्फ की शुरुआत और आसपास की चोटियों से लेकर नीचे पहाड़ की ढलान तथा घाटी की कुछ कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों तक फैला है। इसके भीतर वनस्पतियों, और पुष्पों और पादपों की विभिन्न किस्में फल-फूल रही हैं। इस विशाल वास्पतिक और पुष्पों और पादपों की विविधता के संरक्षण को अक्षुण्ण रखने के लिए नंदा देवी और उनके आसपास की चोटियों पर पर्वतारोहियों के जत्थों की आवाजाही पर पाबंदियां लगा दी गई हैं। साथ ही उन्हें हर हाल में उद्यान के बाहर से चक्कर लगाकर चढ़ाई की इजाजत दी जाती है।

हिमालय और अन्य पर्वत श्रृंखलाओं के किनारे-किनारे अन्य जैव-परिधि उद्यानों का सीमांकन करके उन्हें अवैध घुसपैठ से बचाने के समान नियम लागू किए जाने से काफी मदद मिल सकती है। ऐसे उपायों से जैव-विविधता के हमारे विशाल खजानों को बचाने में काफी मदद मिलेगी। ये खजाने हमारा पारिस्थितिक संतुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कितने पास, मगर कितने दूर केरल की पश्चिमी घाटियों की गहराई में फलफूल रहे 'साइलेंट वैली' के जंगल भी प्राकृतिक जैव परिधि उद्यान घोषित किए गए हैं। इनमें भी वनस्पतियों और पुष्प तथा पादपों की कई किस्में मौजूद हैं। उष्ण कटिबंध तथा नीचाई पर जमे होने के कारण 'साइलेंट वैली' की वनस्पतियों और पुष्प तथा पादपों की किस्में नंदा देवी उद्यान से एकदम अलग हैं। साइलेंट वैली में वर्षा के वनों की नम वनस्पतियों, पुष्प तथा पादपों की विशाल तथा विशिष्ट जैव विविधता है। वहां से 2000 मील दूर नंदा देवी उद्यान में ठंडे और बर्फीले क्षेत्र की वनस्पतियों, पुष्प तथा पादपों की जैव विविधता है। दोनों में समानता बस यही है कि इनमें मौजूद वनस्पति और पुष्प तथा पादपों की आश्चर्यजनक किस्में जैव-विविधता का खजाना हैं।

अपनी विशाल भौगोलिक तथा जलवायु विविधता के साथ भारत में दुनिया की कुछ सबसे समृद्ध वनस्पतियां और पुष्प तथा पादपों की किस्में उपलब्ध हैं जिन्हें दुनिया की सर्वश्रेष्ठ किस्मों में शुमार किया जा सकता है। इसके बावजूद यह दुखद है कि हमारी भरपूर तथा विविध प्राकृतिक संपदा मनुष्य के घातक प्रहार से नष्ट हो रही है। इस यथार्थ को समझने का हम सब के लिए समय आ गया है कि अच्छे नागरिक के नाते पर्यावरण और परिवेश को संवार कर उसे पहले की तरह अक्षुण्ण बनाने की भरपूर कोशिश हमें करनी चाहिए। उसके बाद भी प्रकृति रूपी मां को संरक्षित और सुरक्षित करके उसकी पवित्रता स्थापित की जानी चाहिए। ❑

(लेखक ट्रैकिंग और भ्रमण के शौकीन हैं; वर्तमान में क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय में संयुक्त निदेशक पद पर कार्यरत हैं।)

परिवर्तित पाठ्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में क्रमबद्ध, सुव्यस्थित तथा सुनिश्चित अध्ययन की रणनीति के तहत तथ्यात्मक परख, संकल्पनात्मक दृष्टिकोण एवं अन्तर्क्रियात्मक वातावरण के विकास से सफलता की पराकाष्ठा की प्रशस्ति का सूत्रधार.....

IAS/PCS 2002-03

THE STUDY – AN INSTITUTE FOR IAS
BY MANIKANT SINGH

इतिहास
मणिकांत सिंह

सामान्य अध्ययन
सी.बी.पी. श्रीवास्तव
मणिकांत सिंह एवं अन्य

दर्शनशास्त्र
अविनाश तिवारी एवं अन्य (इलाहाबाद)

हिन्दी साहित्य - वि. प्रो. (D.U.)

HINDI & ENGLISH MEDIUM

नामांकन प्रारंभ

(Special Provision for SC/ST Candidates)

CORRESPONDENCE COURSES AVAILABLE

THE STUDY
AN INSTITUTE FOR IAS

NORTH DELHI : 37-39, Ansal Building, Basement-6, (Behind Mother Dairy), Mukherjee Nagar Delhi-9, Ph. : 7653672, 7652263, E-mail : thestudy@rediffmail.com

SOUTH DELHI : M-27 (Basement), Jia Sarai, New Delhi-16, Ph. : 6523319, 7652137

पर्वतारोहण, ट्रैकिंग और साहसिक खेलकूद

○ मनोहर सिंह गिल

हिमालय के साथ मेरा लगाव 1958 से है जब मैंने भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रवेश किया था और भारत दर्शन के लिए दार्जिलिंग गया था। वहां एवरेस्ट के हीरो तेनजिंग के साथ मुलाकात बड़ा यादगार अनुभव था और इसी से पहाड़ों के प्रति मेरे लगाव की शुरुआत हुई। पहाड़ों के बारे में मुझे जो भी पुस्तक मिलती मैं उसे पढ़ जाता था। मेरी नियुक्ति पंजाब में हुई थी और समूचा कांगड़ा और तिब्बत सीमा से लगे लाहौल स्पीती उस समय के पंजाब के ही हिस्से हुआ करते थे। मैं भारत का पहला आई.ए.एस. अधिकारी हूं जिसने दार्जिलिंग के हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान में प्रशिक्षण लेने का अनुरोध किया और तेनजिंग से प्रशिक्षण लिया। बाद में मैंने मनाली में पश्चिमी हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान की स्थापना में भी मदद दी। मेरे मन में यह बात बड़ी साफ है कि प्रशासकों को पर्वतारोहण और इसी तरह के साहसिक खेलकूद के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि देश को सीमावर्ती इलाकों के ऊंचे पहाड़ी जिलों के लिए निष्ठावान अधिकारी प्राप्त हो सकें। 1961 में मैं अपने अनुरोध पर लाहौल स्पीति का उपायुक्त बना। चीन से लड़ाई के समय मैं वहीं तैनात था। उस समय कुंआरे और युवा अधिकारी के रूप में मैंने 10 हजार से 20 हजार फुट तक की ऊंचाई पर स्थित घाटियों में पर्वतारोहण और ट्रैकिंग का आनंददायक अनुभव हासिल किया। मैंने लाहौल स्पीती में यात्राओं के बारे में अपनी पुस्तक *हिमालयन वंडरलैंड* में लिखा है: ''जो मेरे लिए कभी मौज मस्ती का काम हुआ करता था वह अब मेरी ड्यूटी का हिस्सा था।'' अपने समूचे सेवाकाल के दौरान मैंने पहाड़ों में अपनी दिलचस्पी बनाए रखी और लद्दाख से अरुणाचल प्रदेश तक व्यापक रूप से भ्रमण किया। तेनजिंग, हिलैरी और अन्य महान पर्वतारोहियों ने अपनी दोस्ती को मैं बड़ा महत्व देता हूं।

1953 में जब एवरेस्ट पर पहली बार मनुष्य के कदम पड़े तो पंडित जवाहरलाल नेहरू के मन में दार्जिलिंग में हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान की स्थापना का विचार आया। उन्होंने तेनजिंग को पर्वतारोहण प्रशिक्षण कार्यक्रम का निदेशक बनाया और भारतीय नौजवानों को ऊंचे दर्जे के पर्वतारोहण के लिए प्रेरित किया। पुराने जमाने में सदियों से भारत के लोग तीर्थयात्रा और तपस्या के मकसद से हिमालय की यात्राएं करते रहे थे। लेकिन स्वतंत्र भारत में खेलकूद के रूप में पर्वतारोहण को बढ़ावा देने की आवश्यकता थी ताकि नौजवानों में जोखिम उठाने और साहसिक कार्य करने की इच्छा उत्पन्न हो। इसी से अच्छे प्रशासक भी पैदा करने की उम्मीद की जा सकती थी। दार्जिलिंग के हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान ने हम तमाम प्रसिद्ध पर्वतारोहियों के लिए पहाड़ों पर चढ़ने की नर्सरी का कार्य किया। आमतौर पर ये पर्वतारोही सशस्त्र सेना के लोग होते थे। इस तरह भारतीयों का दुनिया की ऊंची

मनाली जैसी जगहों में मैदानी इलाकों के लोगों द्वारा चलाए जा रहे बड़े होटल कोई अच्छे विकल्प नहीं हैं। इनसे गंदगी फैलती है, पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है और प्राप्त आमदनी भी स्थानीय लोगों तक नहीं पहुंच पाती। दूसरी ओर स्थानीय लोगों के घरों में नाश्ता, सादा भोजन और आवास की सुविधा के साथ पर्यटकों को स्थानीय परिवारों के साथ रहने का जो मौका मिलता है। उससे उन्हें इन लोगों को समझने और उनकी संस्कृति को जानने का अवसर भी मिलता है।

हिमालय की उपेक्षा से उसके कुछ इलाके पहाड़ी रेगिस्तान में बदलते जा रहे हैं

चोटियों पर चढ़ने का सिलसिला शुरू हो गया। 1965 में नौ पर्वतारोहियों को एवरेस्ट पर चढ़ने में सफलता मिली। अन्य प्रमुख चोटियों जैसे अन्नपूर्णा, नंदा देवी, त्रिशूल आदि पर भी भारत के नौजवान पर्वतारोही तेजी से चढ़ाई करते जा रहे थे। इन उपलब्धियों से भारत के नौजवानों को बड़ी प्रेरणा मिली और प्रोत्साहन भी मिला।

हिमालयन क्लब की स्थापना अंग्रेजों ने 1928 में की थी। इसके वर्तमान अध्यक्ष के रूप में कार्य करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है। पिछले 74 साल से यह क्लब ऊंचे पहाड़ों पर साहसिक खेलकूद को बढ़ावा देने के साथ-साथ इस क्षेत्र के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों, भूगर्भ विज्ञान और संस्कृति के अध्ययन को भी बढ़ावा दे रहा है। 1957 के आसपास पं. नेहरू की प्रेरणा और कुछ प्रमुख प्रशासनिक अधिकारियों के प्रयासों से भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन का गठन किया गया। इसे भारत सरकार से खूब सहायता मिली और यह पहाड़ों की ऊंची चोटियों पर चढ़ने के भारतीय प्रयासों को बढ़ावा देने वाले संगठन के साथ-साथ नौजवान भारतीय पर्वतारोहियों को प्रशिक्षण देने वाली मुख्य संस्था के रूप में उभरकर सामने आया। पिछले दशकों में इसने देश भर में पर्वतारोहण और ट्रैकिंग के प्रसार के लिए जोरदार कार्य किया है। कई प्रशिक्षण संस्थान खोले गए हैं और कम से कम 5 तो इसी वक्त कार्य कर रहे हैं। देशभर में पर्वतारोहण और शिलारोहण क्लब खुले और नौजवानों ने अभियानों पर जाना प्रारंभ किया। शीघ्र ही एक भारतीय महिला भी एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल रही। भारत की नौजवान महिलाओं ने विभिन्न पर्वत शिखरों पर चढ़ने और पहाड़ों पर अन्य साहसिक अभियानों में शामिल होकर शानदार उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार पर्वतारोहण संस्थानों के माध्यम से युवाओं के प्रशिक्षण के कार्य में बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता प्रदान करती है। भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन भी हमारे पर्वतारोहियों के प्रशिक्षण और उनके कौशल में सुधार के कार्य पर बहुत बड़ी धनराशि खर्च करता है।

दुर्भाग्य से भारत की जनसंख्या जो आजादी के समय 30 करोड़ थी अब बढ़कर एक अरब हो गई है। हमारे शहरों का भी जरूरत से ज्यादा विस्तार हुआ है। नतीजा यह हुआ है कि हमारी आबादी को बड़ी कठिन स्थितियों में जीवन यापन करना पड़ रहा है। ऐसे में अब यह और भी जरूरी हो गया है कि मुंबई और कोलकाता जैसे बड़े नगरों के नौजवानों को गर्मियों के दौरान साहसिक अभियानों और आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए हिमालय के ठंडे स्थानों को भेजने की व्यवस्था की जाए। इधर पर्वतारोहण करने वालों और ट्रैकिंग करने वालों की संख्या भी बड़ी तेजी से बढ़ रही है।

मैं यहां यह भी कहना चाहूंगा कि पिछले 50 वर्षों में बढ़ती आबादी की वजह से हमारे पहाड़ों, नदियों, वनों और वन्य जीवों पर अनावश्यक बोझ पड़ा है। हमारी ये

तमाम धरोहरें समाप्त होती जा रही हैं। मुझे याद है कि मैंने 1961 में सिक्किम में घने जंगल से ढके पहाड़ों की चढ़ाई की थी। बाद में जब में वहां गया तो मुझे नंगे पहाड़ों के अलावा और कुछ नहीं मिला। अपने 40 वर्षों के प्रशासनिक जीवन के अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि हिमाचल प्रदेश से अरुणाचल प्रदेश तक जंगल कम हुए हैं और मध्य प्रदेश में शिवपुरी के जंगलों से तो बाघ पूरी तरह समाप्त ही हो गए हैं। वनों के नष्ट होने से हमारी नदियों पर भी बुरा असर पड़ा है। मैं अपने नौजवानों को आगाह करना चाहता हूं कि इस नई शताब्दी में दूसरे देशों के साथ और देश के भीतर ही पानी को लेकर लड़ाइयां लड़ी जाएंगी। लगभग प्रत्येक बड़े शहर में पानी का भारी संकट है और लोगों को इसकी न्यूनतम मात्रा से गुजारा करना पड़ रहा है। जंगलों के कम होने से नदियां सूखती जा रही हैं और नियंत्रणहीन कारखानों से निकलने वाले कचरे से प्रदूषित होती जा रही हैं। दिल्ली में यमुना गंदे नाले में बदल चुकी है और आगरा में ताजमहल तक नदी की हालत यही है। इसलिए जब हम आराम और स्वास्थ्य लाभ के लिए हिमालय के पहाड़ों पर जाएं तो हमें उनकी देखभाल और सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए। पहाड़ों के जंगल बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और मिट्टी का कटाव रोकने का एकमात्र तरीका हैं। हिमालय की उपेक्षा से इसके कुछ इलाके भी पहाड़ी रेगिस्तान में बदलते जा रहे हैं। भावी पीढ़ियों के लिए हमें इस पर रोक लगानी होगी। मैंने मसूरी और कुछ अन्य स्थानों पर पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण का काम देखा है। इस तरह के वृक्षारोपण कार्य को समूचे भारत में एक आंदोलन के रूप में चलाया जाना चाहिए। हमारे देश में पहाड़ और नदियां पवित्र माने जाते हैं और इन्हें आदर व सम्मान के साथ ही देखा जाना चाहिए।

1950 और 1960 के दशकों में हमने पर्वत शिखरों पर जीत का गौरव हासिल करने के उद्देश्य से यूरोप के देशों की तरह बड़े-बड़े अभियान दल भेजना शुरू किया। लेकिन हमारी सभ्यता पहाड़ों पर चढ़ने को विजय की तरह नहीं लेती क्योंकि हम पर्वतों में ईश्वर का पवित्र आवास मानते आए हैं। हम तो वहां केवल श्रद्धा-सुमन चढ़ाने ही जाते हैं। अब तो यूरोप के लोग भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो गए हैं। वे अब दो, चार या छह के छोटे समूहों में ही यात्रा करना पसंद करते हैं। पर्वतारोहण के समय वे इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि पेड़ों और पर्यावरण को किसी तरह का नुकसान न पहुंचे और पहाड़ों पर चढ़ते समय जो कूड़ा-कचरा पैदा हो उसे नष्ट करने के लिए साथ वापस लाया जाए। हमारे नौजवानों को भी नागरिकता का यह बुनियादी सबक याद रखना चाहिए।

मैं आशा करता हूं कि पर्वतीय राज्यों की सरकारें स्थानीय लोगों को आसान ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराकर उन्हें अपने घरों में आवास सुविधाओं में सुधार के लिए प्रेरित करेंगी ताकि वे गर्मियों में पर्यटकों को आवास सुविधा उपलब्ध कराने के साथ-साथ सर्दियों में खुद भी अपने मकान में बेहतर तरीके से रह सकें।

मैंने हिमालय और यूरोप के पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापक भ्रमण किया है। मैंने पाया है कि ऑस्ट्रिया और स्कॉटलैंड जैसे देशों में पहाड़ों और पर्यावरण की सुंदरता स्थानीय लोगों की आमदनी का बड़ा स्रोत है। बड़ी संख्या में पर्यटक पहाड़ों पर चढ़ने, ट्रैकिंग करने और रमणीक दृश्यों का आनंद उठाने जाते हैं। इन देशों में पर्यटकों के खाने-पीने और ठहरने की बड़ी अच्छी व्यवस्था है। पहाड़ों पर रहने वालों को सरकार की ओर से वित्तीय सहायता और अन्य सहायता दी जाती है ताकि वे अपने घरों में पर्यटकों को ठहराने के लिए स्नानागार जैसे विभिन्न सुविधाओं से युक्त कमरे उपलब्ध करा सकें। गर्मियों के मौसम में ये लोग पर्यटकों का स्वागत करते हैं और उन्हें आवास के साथ-साथ खाने-पीने की सुविधा भी उपलब्ध कराते हैं। इस तरह वे अच्छी खासी आमदनी भी कमा लेते हैं। कड़ाके की सर्दियों में जब पहाड़ों पर बर्फ गिरने के कारण वहां आना जाना संभव नहीं हो पाता तो ये लोग अपने घर का भरपूर उपयोग करते हैं और उनके पास खाने-पीने के लिए पर्याप्त धन भी होता है। मेरा ख्याल है कि हमें भी हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश जैसे अपने पर्वतीय राज्यों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इसी तरह की नीति अपनानी चाहिए। मनाली जैसी जगहों पर मैदानी इलाकों के लोगों के बड़े होटल अच्छे नहीं हैं। इनसे पर्यावरण प्रदूषित और नष्ट होता है। मनाली तो आज बहुत बुरी हालत में पहुंच चुका है और पर्यटन से जो आमदनी होती है वह भी स्थानीय लोगों को प्राप्त नहीं होती। दूसरी ओर स्थानीय लोगों के घरों में पर्यटकों को अगर भोजन और आवास की सुविधा उपलब्ध हो जाए तो पर्यटक खुशी-खुशी स्थानीय परिवारों के साथ ठहरना पसंद करेंगे। इससे एक तो पर्यटक स्थानीय संस्कृति को समझना सीखेंगे और दूसरे, पर्यटन से जो आमदनी होगी वह भी स्थानीय लोगों को ही मिलेगी। मुझे इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि पहाड़ों के लोगों के लिए आमदनी बढ़ाने का एक प्रमुख जरिया पारिस्थितिक पर्यटन है जिसमें बड़े-बड़े होटल खोलने की बजाय पर्यटकों के लिए स्थानीय लोगों के घरों में ही भोजन और

आवास की विकेंद्रित व्यवस्था की जाती है। इसलिए मैं आशा करता हूं कि पर्वतीय राज्यों की सरकारें अपने पर्यावरण की सुंदरता की रक्षा का ध्यान रखेंगी, बड़े-बड़े उद्योगों या होटलों से होने वाला प्रदूषण नहीं होने देंगी और स्थानीय लोगों को आसान ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराकर उन्हें अपने घरों में आवास सुविधाओं में सुधार के लिए प्रेरित करेंगी ताकि वे गर्मियों में पर्यटकों को आवास सुविधा उपलब्ध कराने के साथ-साथ सर्दियों में खुद भी अपने मकान में बेहतर तरीके से रह सकें। मनाली जैसे स्थानों में आवास और भोजन की सुविधा से युक्त घरों की सूची तैयार की जानी चाहिए, उनकी देखरेख होनी चाहिए, उन पर उचित नियंत्रण रखा जाना चाहिए और यूरोप की तरह ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे पर्यटकों को इनकी जानकारी मिलें। इससे पर्यटकों को अच्छे और सस्ते आवास के बारे में जानकारी दी जा सकेगी और मकानमालिकों को भी इससे अच्छी आमदनी हो जाएगी। निस्संदेह इससे कुछ अन्य सेवा उद्योगों, जैसे परिवहन, खान-पान, शिष्टाचार वाले पर्यटक गाइड आदि को बढ़ावा मिलेगा। इसलिए यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि पर्वतीय राज्यों की सरकारें पर्यावरण, वनों और नदियों को होने वाले किसी भी नुकसान को रोकने के लिए सुविचारित कानून बनाएं।

छह साल तक (1993-99) भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन के अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए मैंने भारतीय पर्वतारोहण अभियान दलों का आकार कम रखने और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने की बहुत कोशिश की। हमारी सशस्त्र सेनाएं और पुलिस अब भी कभी कभार बड़े भारी भरकम और प्रतिष्ठित पर्वतारोहण अभियान दल भेजती है जो कोई अच्छी बात नहीं है। हमने इन अभियानों को पर्यावरण संरक्षण पर केन्द्रित रखने की भरसक कोशिश की। हमारी सशस्त्र सेनाएं हिमालय के सीमावर्ती इलाकों में तैनात रहती हैं, जिस कारण पहाड़ों के दुर्लभ वनाच्छादित क्षेत्र पर जबरदस्त दबाव पड़ रहा है। हम सब पर इसकी हिफाजत की जिम्मेदारी है। यह साल इको-टूरिज्म और पर्वत वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है, इसलिए मैं इस बारे में राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता और जोरदार अभियान की आवश्यकता पर जोर देना चाहूंगा ताकि हिमालय और उससे निकलने वाली महान नदियों की रक्षा हो और मैदानों में भी हमारा जीवन सुचारु रूप से चलता रहे। ❑

(श्री एम.एस. गिल पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त हैं और भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। इस समय श्री गिल 'हिमालयन क्लब' के अध्यक्ष हैं।)

RAO IAS
THE MOST POPULAR INSTITUTE FOR IAS AND PCS
विशेषताएं - 96% सफलता IAS/PCS (Pre) में
56% FINAL SELECTION
• IAS/PCS (Pre & Main) बैच 20 अगस्त से प्रारम्भ
विषय : सामान्य अध्ययन, इतिहास, लोक प्रशासन, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, हिन्दी साहित्य, मानव शास्त्र, भूगोल, जन्तु विज्ञान।
ALLAHABAD हिन्दी माध्यम पत्राचार कोर्स एवं क्लास कोचिंग, छात्रावास उपलब्ध
• IAS/PCS (Pre/Main) का सम्पूर्ण पत्राचार कोर्स उपलब्ध
निकट हनुमान मन्दिर, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद फोनः 601624
नया पता - 14/1, स्टैनली रोड, (लोक सेवा आयोग के सामने), इलाहाबाद
LUCKNOW HINDI AND ENGLISH MEDIUM
• Pre and Pre cum Main Courses are Available • 18 months package for full course
36, Ravindra Garden, Aliganj, Lucknow. Ph. 331548 (Hostel Available for Boys & Girls)
VARANASI हिन्दी माध्यम
• छात्रावास एवं लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध • PCS (J) Course available
चित्रगुप्त होटल, निकट कैन्ट रेलवे स्टेशन, वाराणसी फोनः 208061 Mobile 9839087054
विवरण पुस्तिका हेतु रू० 50/- M.O. से भेजें
NOTE - We have branches at ALLAHABAD, LUCKNOW & VARANASI Only.
RAO IAS, भारत की हिन्दी माध्यम की सबसे पुरानी एवं प्रतिष्ठित संस्था है। कुछ लोग RAO IAS के नाम को तोड़ मरोड़कर अनावश्यक रूप से छात्रों को भ्रमित कर रहें है। कृपया उनसे सावधान रहें।

भारतीय हिमालय पर्वतमाला—एक नज़र

○ हरीश कपाड़िया

उत्तर दिशा में एक सुहृदय पर्वत हिमालय है। वह नगाधिराज है, जिसकी दो भुजाएं पूर्वी और पश्चिमी सागरों तक फैली हैं। पृथ्वी के मापदंड के रूप में वह अजेय खड़ा है।

—'कुमारसंभव' में कालीदास

भारतीयों ने सदैव ही हिमालय को बर्फ के घर के रूप में देखा है। प्रसिद्ध भारतीय कवि की उपर्युक्त सूक्ति की तरह ही अनंतकाल से हिमालय को विश्व का मणिमुकुट कहा जाता रहा है। इस पर्वत-शृंखला में कई हिंदू तीर्थ-देवालय हैं जहां भारी संख्या में श्रद्धालु दर्शनार्थ पहुंचते हैं। हिंदु पुराणों में हमेशा ही हिमाच्छादित पर्वतों को आध्यात्मिक शांति के साथ जोड़कर देखा गया है। वर्णन मिलता है कि भारतीय आदि गुरु शंकराचार्य 800 ईस्वी में बद्रीनाथ से माना दर्रे को पार कर तिब्बत के गुगे जिले में पहुंचे थे। यूरोप से जेसु पादरियों के माना दर्रा पार करके तिब्बत में जाने के रिकार्ड मिलते हैं। 1624 में पादरी एंटोनियो द अंद्रादे और ब्रदर मैनुएल मारक्वी इस दर्रे से होकर तिब्बत में त्सापारांग प्रांत में गुगे पहुंचे थे।

कई स्थानीय गांव वालों ने व्यापार के सिलसिले में इन पर्वतों को पार किया। लेकिन आधुनिक अर्थ में अन्वेषण और आरोहण का कार्य अंग्रेजों के आने के बाद ही शुरू हुआ। काराकोरम में 'महान शिकार' की जरूरतों को देखते हुए अन्वेषकों को इस पर्वतमाला में भेजा गया। इसके बाद सैनिकों ने पर्वतमाला में प्रवेश किया, जिनमें से सिक्किम को पार करके ल्हासा पहुंचने वाला फ्रांसिस यंगहस्बैंड अभियान अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद सर्वेक्षक वहां गए। तब अंग्रेज अफसरों के अधीन भारतीय सर्वेक्षण संगठन ने हरेक क्षेत्र के व्यवस्थित ढंग से मानचित्र बनाए जिनके परिणामस्वरूप विश्व के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर, एवरेस्ट की खोज हुई। अंत में आए पर्वतारोही। विश्व युद्ध से पूर्व के सभी एवरेस्ट अभियानों ने उत्तर की तरफ से सिक्किम होते हुए इस शिखर पर चढ़ने के प्रयास किए तथा कई शिखरों पर विजय भी प्राप्त की।

भारतीय हिमालय पर्वतशृंखला में आरोहण के लिए कोई 'ऐवरेस्ट' नहीं है, क्योंकि 8000 मीटर का एकमात्र पर्वत शिखर भारत में 'कंचनजंगा' है। लेकिन अगर किसी की छोटे शिखरों में दिलचस्पी हो तो 7000 मीटर से ऊंचे कई पर्वत शिखर हैं। और, अगर सामान्य में से कठिन मार्गों, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों और अछूती घाटियों की बात हो, तो भारतीय हिमालय में ऐसे कई आकर्षण मौजूद हैं। लेख में पिछले 100 वर्षों के भारतीय हिमालय के इतिहास का संक्षिप्त विवरण है, जो मेरे अवलोकन और मेरी यात्राओं पर आधारित है।

पर्वतमाला

हिमालय पर्वत शृंखला एशियाई महाद्वीप में दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम तक फैली हुई है। आम तौर से हिमालय, काराकोरम और हिंदुकुश की एक शृंखला के अंग के रूप में चर्चा की जाती है। जब हम 'भारतीय हिमालय' की बात करते हैं, तो हम हिमालय पर्वतशृंखला के उस भाग की बात करते हैं

हालांकि पिछली सहस्त्राब्दी में भारतीय हिमालय पर्वतमाला पर काफी कुछ कार्य किया गया है, फिर भी अभी काफी कुछ करना शेष है। युग-युगों से खड़े नगाधिराज हिमालय के लिए 1000 वर्ष मायने भी क्या रखते हैं। आज जब हम अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मना रहे हैं, हमें इस पर्वत-शृंखला के बारे में अधिक जानने तथा इसे संरक्षित करने का प्रण लेना चाहिए।

जो भारतीय क्षेत्र में पड़ता है। पूर्व से आरंभ होकर भारतीय हिमालय बर्मा-चीन और भारत के बीच एक गांठ से शुरू होता है। शृंखला भूटान की सीमा तक चलती है। उसके बाद सिक्किम आता है जो 1974 से भारत का एक पूर्ण राज्य है। इसमें कई शिखर हैं, जिनमें विश्व की तीसरी सबसे ऊंची चोटी कंचनजंगा भी शामिल है। इसके पूर्व में हिमालय की पर्वतमाला नेपाली क्षेत्र में पड़ती है, जो कुमाऊं और गढ़वाल सीमा तक चलती है। यहां से बिना किसी व्यवधान के भारतीय हिमालय शृंखला किन्नौर, स्पीती, लद्दाख और अंत में पूर्व कराकोरम तक चली जाती है। आगे के पश्चिम के इलाके पाकिस्तान और अफगानिस्तान के नियंत्रण में आते हैं।

आरंभिक वर्ष

शिमला में जाखू पहाड़ी के नीचे भूमि पर दो अधिकारी सैर कर रहे थे। उनकी इस सहज सैर से ही वहां आने वाले अंग्रेज पर्वतारोहियों की मदद के लिए 1928 में 'हिमालयन क्लब' का जन्म हुआ। क्लब का मुख्य उद्देश्य भारत में आने वाले पर्वतारोहण अभियानों की मदद करना था। यह अधिक संख्या में अन्वेषकों और आरोहियों के आगमन की शुरुआत थी। इस पर्वतमाला में हुए कुछ प्रसिद्ध आरंभिक पर्वतारोहणों में ह्यू रटलेज द्वारा कुमाऊं का अन्वेषण शामिल है। इसके अलावा 1905 और 1907 में आर्नोल्ड मम और चार्ल्स ब्रूस ने गढ़वाल में पांच महीने बिताए और उन्होंने कई शिखरों पर आरोहण किया। 7102 मीटर ऊंची त्रिशूल चोटी पर डा. लांगस्टाफ ने विजय हासिल की। यह चोटी कई वर्ष तक विश्व की सबसे ऊंची चोटी के नाम से विख्यात रही। फ्रैंक स्माइथ 1931 में कामेत शिखर पर पहुंचे और उन्होंने एक नया कीर्तिमान बनाया। इसके फौरन बाद 1936 में नंदा देवी पर विजय से रिकार्ड कायम हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध और 1947 में भारत की आजादी के बाद गंभीर संदेह व्यक्त किए गए कि रोमांचक खेल जारी भी रह पाएंगे या नहीं। जैक गिब्सन और जॉन मार्टिन जैसे 'यहीं रह गए' लोगों ने भारतीयों को पर्वतारोहण के लिए उत्साहित किया और यह खेल जारी रहा। उनके एक शिष्य, गुरदयाल सिंह ने 1951 में त्रिशूल शिखर पर जीत हासिल की। 1953 में एवरेस्ट को विजित किया गया। शिखर पर पहुंचने वालों में एक भारतीय, तेंजिंग भी थे। इस अवसर पर दार्जिलिंग में एक पर्वतारोहण संस्थान स्थापित किया गया जिसने कई भारतीयों को प्रशिक्षण दिया है। अब कम से कम तीन ऐसे संस्थान अपनी पूर्णक्षमता से कार्य कर रहे हैं और इससे इस रोमांचक खेल का विकास हुआ है। 1958 में भारतीय पर्वतारोहण संस्थान का जन्म हुआ और सरकार ने इसे इस खेल के लिए मान्यता प्रदान की। सरकारी नौकरशाहों और अन्य अधिकारियों की सदस्यता के अपने आधार से इसने प्रक्रियाएं विकसित कीं तथा 23 साल तक इसकी कमान एच.सी. सरीन के हाथों में रही। इन वर्षों में भारतीय पर्वतारोहण की जिम्मेदारी उन्हीं की थी। आज उनके प्रयासों के फलस्वरूप संस्थान का एक शानदार भवन खड़ा है और संस्थान की नींव मजबूत हो पाई है।

भारतीय हिमालय पर्वतशृंखला में आरोहण के लिए कोई 'ऐवरेस्ट' नहीं है, क्योंकि 8000 मीटर का एकमात्र पर्वत शिखर भारत में 'कंचनजंगा' है। लेकिन अगर किसी की छोटे शिखरों में दिलचस्पी हो तो 7000 मीटर से ऊंचे कई पर्वत शिखर हैं। और, अगर सामान्य में से कठिन मार्गों, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों और अछूती घाटियों की बात हो, तो भारतीय हिमालय में ऐसे कई आकर्षण मौजूद हैं।

कुमाऊं

अगर मुझसे पूछा जाए कि मुझे सबसे अच्छा भारतीय शिखर कौन-सा लगता है तो मेरा जवाब होगा — नंदा देवी। मैंने इसे लगभग हर दिशा और बड़े ही करीब से देखा है। दरअसल यह भारतीय हिमालय का केंद्रबिंदु है। इसके आधार तक के मार्गों की एरिक शिप्टन और बिल टिलमैन द्वारा 1934 में खोज, 1936 में इस पर आरोहण तथा बाद के सभी अभियान पर्वतारोहण के इतिहास का हिस्सा बन चुके हैं। इन गतिविधियों ने इतिहास पर अमिट छाप छोड़ी है। इसके पूर्व में मिलाम ग्लेशियर है। 1939 में जिन पोलैंडवासियों ने इस घाटी में आरोहण किया, उन्होंने नंदा देवी पूर्व से पहली बार चढ़ाई की, लेकिन दुर्भाग्यवश तिरसूली चोटी पर चढ़ते हुए उनमें से दो पर्वतारोही मारे गए। कुमाऊं में इसके आगे पूर्व में 'दीर्घायु पर्वत' — चिरिंगवे है जो कलबलंद ग्लेशियर पर स्थित है। 1979 में बंबई के मेरे दल ने चिरिंगवे पर पहली बार आरोहण किया और इसके बाद से इस पर चढ़ाई नहीं की गई है। कलबलंद ग्लेशियर में कई आकर्षक पर्वतशिखर हैं। इस सिलसिले में, अविजित 'सुईटिल्ला' का उल्लेख करना जरूरी है जिसे 'कुमाऊं का चांगाबांग' कहा जा सकता है।

नंदा देवी के पश्चिम में अभयारण्य के बाहरी छोर पर 'बेथारटोली हिमल' चोटियां हैं। 1970 में दक्षिणी चोटी पर चढ़ा, लेकिन एक हिमखंड के गिरने से हमारे चार पर्वतारोही मारे गए। उनमें से एक आंगकामी था, जो दार्जिलिंग का एक प्यारा सा इंसान था। बिल मुरे ने 1950 में पहली दफा इस मुख्य चोटी पर चढ़ने की कोशिश की थी। अंत में हमारे प्रयास के बाद इतालवी

पर्वतारोहियों ने इस पर विजय हासिल की। निकट ही 'त्रिशूल' पर्वत है जिसे 'लांग-स्टाफ पर्वत' भी कहते हैं। 1907 में लांगस्टाफ इस पर्वत शिखर पर बड़ी तेजी से चढ़े थे और एक लंबे समय तक यह उनका उच्चतम कीर्तिमान बना रहा। मेरे ख्याल से 1951 में जब गुरदयाल सिंह ने त्रिशूल पर्वत पर चढ़ाई की, तब भारतीयों के लिए पर्वतारोहण के युग की शुरुआत हुई। नंदा देवी के शिखर पर कोई परमाणु यंत्र रखा जा रहा था, जिसके दौरान भीतरी अभयारण्य को अभियानों के लिए बंद कर दिया गया था। इस अवधि के समाप्त होते ही 1974 में पहले अभियान ने इस क्षेत्र में कदम रखे। क्रिस बोनिंगटन और उनके भारत-ब्रिटिश दल ने भीतरी अभयारण्य के एकदम उत्तर के शिखर, चांगाबांग को विजय किया। किसी भी दृष्टि से देखा जाए तो यह एक असाधारण उपलब्धि थी। उपरोक्त विजय के कुछ ही दिनों की भीतर मेरे दल ने भीतरी अभयारण्य के एकदम दक्षिणी शिखर 'देवटोली' पर चढ़ाई की। शिखर से लौटते समय मैं एक खड्ड में गिर गया और मुझे 13 दिन तक कामचलाऊ स्ट्रेचर या कमर पर लादकर लाया गया, जिसके बाद मुझे हेलीकाप्टर से निकाला गया। तब आसमान से इस शिखर को देखते हुए मैंने लिखा था 'देवटोली, सम्मान अब बराबर है'।

1992 में भारतीय वायुसेना के दो बहादुर हेलीकाप्टर पायलटों ने पंचचुली-पंचक की ऊंचाई वाली ढलानों से घायल स्टीफन वेनेबल्स को निकाला। हेलीकाप्टर के रोटर से कुछ ही इंच की दूरी पर बर्फीली ढलान होने पर भी इन लोगों ने अपने हेलीकाप्टर को उसकी 'स्की' पर उतारा और वेनेबल्स को वहां से उठाकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इस भारतीय ब्रिटिश दल ने पंच चुली-2 को विजित कर लिया था और पंचम शिखर पर पहले आरोहण का प्रयास किया ही था कि यह दुर्घटना घटी और वेनेबल्स इसके शिकार हो गए। बर्फ में गाड़ी गई एक कील के ढीले हो जाने के कारण वे सैकड़ों फुट नीचे गिरते चले गए और उनके घुटने और टखने पर चोटें आईं। इस बहादुराना बचाव-प्रयास से ही उनके प्राण बच पाए।

सिक्किम

दो साल तक बैसाखियों के सहारे चलने के बाद मैं उस चोट से उबर पाया। तब मैं उत्तरी सिक्किम के लिए रवाना हुआ। 1974 में सिक्किम भारत का राज्य बन गया और हम वहां जाने की अनुमति पाने वाले पहले ट्रैकरों में से थे। ग्रीन लेक की अपनी यात्रा के दौरान जर्कसिस बोगा और मैं ऊंचे दर्रों से होकर ल्होनाक घाटी गए।

जैक गिब्सन और जॉन मार्टिन जैसे 'यहीं रह गए' लोगों ने भारतीयों को पर्वतारोहण के लिए उत्साहित किया और यह खेल जारी रहा। उनके एक शिष्य, गुरदयाल सिंह ने 1951 में त्रिशूल शिखर पर जीत हासिल की। 1953 में ऐवरेस्ट को विजित किया गया। शिखर पर पहुंचने वालों में एक भारतीय, तेंजिंग भी थे। इस अवसर पर दार्जिलिंग में एक पर्वतारोहण संस्थान स्थापित किया गया जिसने कई भारतीयों को प्रशिक्षण दिया है।

फ्रैशफील्ड ने लिखा है कि यहां के जुलाई के तूफान बड़े 'कुख्यात' होते हैं। एक नमूना हमने भी देखा। एक बार जब हम थांगु बोगा के पास पहुंचे, तो हम अचानक एक पुल के पास बैठ गए। नीचे की ढलान पर ढेरों पीले रोडेंड्रोन फूल खिले हुए थे। ये सिक्किम के अपने ही आनंद हैं। मैंने उनका एक फोटो खींच लिया। तब उसने दृढ़ता से मुझे रोकते हुए कहा, ''मेहरबानी करके और फोटो मत खींचो। हरीश, यह सौंदर्य केवल यादों में रहने दो।''

सिक्किम में ट्रैकिंग के दौरान अक्सर मुझे इस क्षेत्र के इतिहास की याद आ जाती थी। विश्व युद्ध से पहले एवरेस्ट के लिए अभियान उत्तर दिशा से होते थे जो सिक्किम से गुजरते थे। इस तरह विश्रामगृह के रजिस्टर में कई प्रसिद्ध नाम दर्ज दिखाई देते थे। कलकत्ता ब्रिटिश राज का मुख्यालय था। इसलिए सिकिम्म के लिए रास्ता आसान और जल्दी का था। कुक, हंट और केलस ने यहां कुछ शानदार पर्वतारोहण किया था। हिमालयन क्लब ने सेला दर्रे की तलहटी में एक कुटिया बनाई थी। इससे ट्रैकरों को बिना तंबू या अधिक भोजन साथ रखे लाचेन से लाचुंग घाटियों में जाने में सुविधा होती थी। जब मैं इस कुटिया में पहुंचा, तो यह खस्ताहाल थी। लेकिन चाय लाने के लिए खानसामाओं को मेम साहिबों की पुकार मेरे दिमाग में गूंज उठी थी।

कंचनजंगा सिक्किम-हिमालय का मुख्य आकर्षण है। पाल बेयर और उनके दल ने बार-बार इस पर चढ़ने की कोशिश की लेकिन उत्तर-पूर्वी नोकीली चट्टान ने हर बार उनका रास्ता रोक लिया। इसे वे पार ही नहीं कर पाए। आखिरकार 1977 में भारतीय सेना की एक टीम इस नोकीली चट्टान को पार कर इस ओर से शिखर पर पहुंचने में कामयाब रही। ज़ेमू ग्लेशियर से कंचनजंगा एकदम सीधी उठती है, इतनी सीधी कि दोपहर के अंतिम भाग से ही डूबता सूरज दिखाई देना बंद हो जाता है। डाउग फ्रैशफील्ड 1899 में यहां आए थे। उन्होंने 'पूर्वी सूर्यास्त' के बारे में जो लिखा था हम उसे कई साल बाद देख पाए थे। कंचनजंगा की सीधी चढ़ाई पश्चिमी क्षितिज को ढक लेती है और सूर्य उसके पीछे गायब हो जाता है। इस तरह दोपहर के

आरंभ में ही ग्लेशियर पर घनी परछाइयां उतरने लगती हैं। भूटान तक पूर्व, काफी देर तक काफी रोशन रहता है। इस बीच यह इस तरह रंग बदलता रहता है कि विचित्र-सा धोखा होने लगता है।

असम हिमालय

इससे आगे पूर्व में अरुणाचल प्रदेश की घने जंगल वाली घाटियों का विशेष अन्वेषण नहीं हुआ है। जिन क्षेत्रों में लोग आए हैं, वे अक्सर अपने मठ के लिए प्रसिद्ध त्वांग घाटी में स्थित हैं। तिलमैन इस इलाके में 1939 में आए और उन्होंने 'असम हिमालय अनविजिटिड' में अपने अनुभव लिखे। 1913 में एफ.एम. बेली और एच.टी. मोर्सहैड ने गोरीचेन की तलहटी में पहुंचने की कोशिश की थी। इस मार्ग का नाम 'बेली ट्रेल' पड़ा। 1962 में इस रास्ते से चीनी नीचे आए। युद्ध के बाद इस इलाके को नागरिकों के लिए निषिद्ध कर दिया गया। सेना ने इस इलाके की निगरानी के लिए 'एडवांस लैंडिंग ग्राउंड' का निर्माण किया। अधिक घनी घाटियों को इससे अलग रखा गया है। हाल के वर्षों में अलग-अलग मार्गों से गोरीचेन शिखर पर चढ़ाई की गई। कांग्तो और न्येगी कोंगसांग के रास्ते खोजे गए हैं। लेकिन अभी भी काफी कुछ करना बाकी है।

अरुणाचल प्रदेश में 1995 में न्येगी कांगसांग का अभियान विवादों में घिर गया था। कर्नल एम.पी. यादव के नेतृत्व में इस अभियान को भारतीय पर्वतारोहण प्रतिष्ठान ने प्रायोजित किया था। यह शिखर अज्ञात अरुणाचल प्रदेश और तिब्बत की सीमा पर पड़ता है। पर्वतारोही तिब्बत में चले गए और असली शिखर से लगभग 600 मीटर नीचे एक प्वाइंट पर पहुंच गए। साक्ष्यों और अध्ययनों के आधार पर अभियान दल के नेता और आरोहियों को इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा। अपने कार्यकाल में आरोहण की सत्यता का समर्थन करने वाले प्रतिष्ठान के अध्यक्ष, डा. एम.एस. गिल ने रिकार्डों को सही करने के भरसक प्रयास किए। लेकिन यह पिछली सहस्त्राब्दी में दूसरा सबसे बड़ा विवादास्पद मामला था जिससे मैं संबद्ध था।

विवाद

हरेक पर्वतमाला के अपने विवाद रहे हैं। भारतीय पर्वतारोही शायद अधिक विवादों में उलझे रहे हैं। न्येगी कांगसांग के बाद दूसरी 'मणि' (ज्वैल) का ब्यौरा मुझे देना ही होगा।

कर्नल एन. कुमार के नेतृत्व में पर्वतारोहण दल द्वारा 1961 में 'नीलकंठ' पर विजय का दावा सबसे अधिक कुप्रसिद्ध घटना है। इस अभियान को इस शिखर का और इसकी शिखर पहाड़ी का कोई अंदाजा नहीं था जिसे इन्होंने 'जेंटल ट्रज' (आसान पदयात्रा) कहा था। 13 जून को 'प्रथम आरोहण' का दावा किया गया था। जब हिमालयन क्लब के मानेय अध्यक्ष, जे.सी. नानावटी ने पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए तो नौकरशाही अपने बचाव में लग गई। भारतीय पर्वतारोहण प्रतिष्ठान के तत्कालीन अध्यक्ष, एच.सी. सरीन राजनीतिक दबाव में इन निष्कर्षों को स्वीकार न करने पर अड़े रहे। यहां तक कि हिमालयन जर्नल ने भी इस सुधार को दर्ज नहीं किया, जो बड़ी विचित्र-सी बात थी। लेकिन जब सत्तर के दशक के अंत में सोली मेहता और मैं संपादक बने, तब जाकर इस भूल को सुधारा गया। पिछले चार दशकों से दुनिया इसे सफल आरोहण नहीं मानती रही है, जबकि अधिकारिक रूप से यह अन्यथा बना रहा।

ध्यान रखना होगा कि उपरोक्त दोनों कुप्रसिद्ध मामलों में तथा अन्य कई मामलों में गलती सुधारने के लिए स्वयं भारत में ही पर्याप्त आंतरिक विशेषज्ञता तथा दिलचस्पी मौजूद थी।

गढ़वाल

वापिस मध्य भारतीय हिमालय चलते हैं। गंगोत्री ग्लेशियर एक ऐसी घाटी रही है, जहां काफी पदयात्रा और पर्वतारोहण किया गया है। सतोपंथ, चौखम्बा, सुदर्शन पर्वत, शिवलिंग और थाले सागर कुछ ऐसे शिखर हैं जो इस क्षेत्र के गौरव समझे जाते हैं। इस क्षेत्र का पर्वतारोहण इतिहास का एक पूरा पोथा बन सकता है। यहां मुझे एक कहानी याद आ रही है। गंगोत्री देवालय से बद्रीनाथ जाने के लिए नाममात्र का भोजन लिए चार अधनंग साधुओं ने कालिंदी खाल को पार किया। तभी प्रसिद्ध स्विस पर्वतारोही, आंद्रे रोश भी इसी इलाके में कई शिखरों पर चढ़ रहे थे। उनकी मुलाकात साधुओं की इस टोली से हुई और वे उनके इस कारनामे से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने साधुओं को एक आल्टी मीटर (ऊंचाई मापी यंत्र) भेंट किया। यह यंत्र, घड़ी की तरह, भारतीय पर्वतारोहियों की पीढ़ी दर पीढ़ी चलता चला आ रहा है। जब एक दल चढ़ाई बंद कर देता है, तो इसे अगले पर्वतारोही को देना होता है। इस तरह, एक लंबी यात्रा के बाद यह मुझ तक पहुंचा।

गढ़वाल में एक और विशिष्टता है कामेत, जो सरस्वती घाटी में गर्व से सीना ताने खड़ा है। यही वह घाटी थी जिसे हिंदु गुरू शंकराचार्य और स्पेनी पादरी, फादर अंद्रादे ने माना दर्रे से होकर तिब्बत जाने के लिए इस्तेमाल किया था। कामेत शिखर पर कई बार चढ़ने की कोशिश हुई लेकिन 1931 में जाकर फ्रैंक स्माइथ और एरिक शिप्टन ने कुछ अन्य के साथ इसे विजित किया। इनके साथ जाने वाले, आर.एल. होल्ड्सवर्थ ने शिखर पर पाइप पिया था। मैं समझता हूं सबसे अधिक ऊंचाई पर धूम्रपान करने का रिकार्ड होल्ड्सवर्थ का ही होगा (हां, अगर किसी ने एवरेस्ट पर ऐसा आनंद लिया हो, तो और बात है!)।

उत्तर गढ़वाल की ओर बढ़ते हुए पहले जाध गंगा घाटी पड़ती है जिसका जे.बी. आदेन ने सर्वेक्षण किया था। मैं 1990 में इस घाटी पर गया और हम लोग एक

खूबसूरत आकार वाले पर्वत शिखर, त्रिमुखी पर्वत-पूर्व पर चढ़े। मेरा नौजवान साथी, मोनेश तेंदुए के एक बच्चे को पकड़कर अपने स्लीपिंग बैग में गर्माहट में रखना चाहता था। आदेन ने भी ऐसा किया था। मुझे डर था कि उसकी मां को यह पसंद नहीं आएगा, क्योंकि यह उसका इलाका था, यानी हिम तेंदुओं की घाटी। सौभाग्य से अक्ल काम आ गई।

पश्चिमी गढ़वाल को 'गिब्सन क्षेत्र' कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने नौजवान भारतीय पर्वतारोहियों को प्रशिक्षित किया था। यहां कालानाग, स्वर्गारोहिणी में भारतीयों ने आरोहण के गुर सीखे। महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने हर-की-दून के पुष्पों, टोन्स घाटी के पक्षियों और गढ़वाल की संस्कृति का भी परिचय प्राप्त किया। गिब्सन का छोटे और मैत्रीपूर्ण अभियानों में पक्का विश्वास था और मैं कामना करता हूं कि हम भारतीय उसके दर्शन के अनुयायी बने रहेंगे।

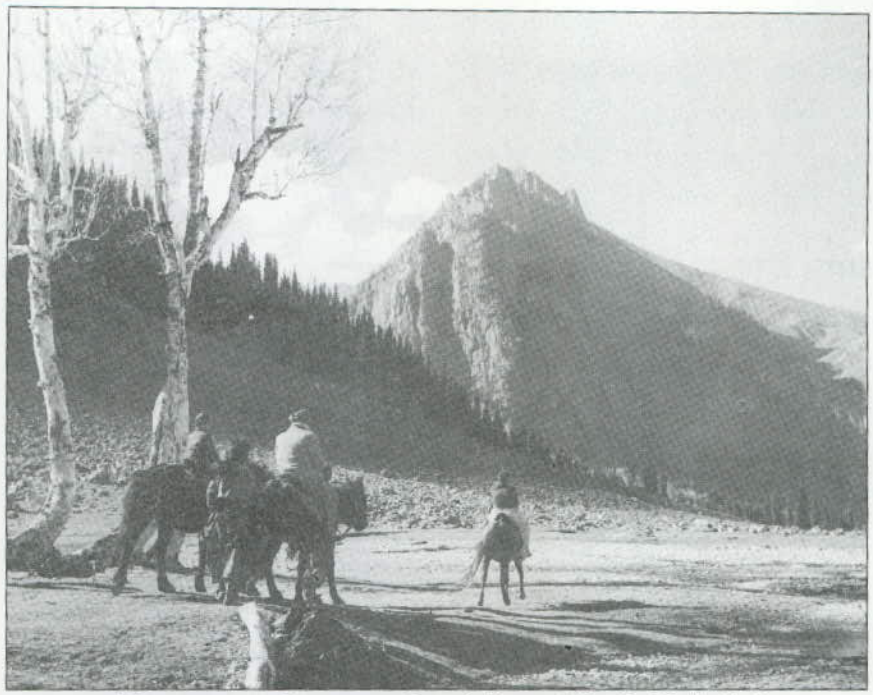

राजनीतिक उथल-पुथल के कारण कश्मीर घाटी में घट रही है पर्वतारोहियों की संख्या

किन्नौर

गढ़वाल से आगे हिमालय पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। यह मोटे तौर पर पश्चिमी हिमालय के नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है। एकदम उत्तर की ओर किन्नौर घाटी है। यहीं रुडयार्ड किपलिंग ने अपने प्रतिनिधि बेटे किम को, इसी शीर्षक की पुस्तक में भेजा था। हिंदुस्तान-तिब्बत मार्ग पर अब मोटर-गाड़ी से यात्रा की जा सकती है। इस पर यात्रा करते समय उसने आश्चर्यचकित होकर कहा था, ''यह स्थान तो आदमी के लिए है ही नहीं।'' काल्पा का बंगला लार्ड डलहौज़ी का प्रिय ठिकाना था। चीड़ के पेड़ों के नीचे जोर्कांदेन शिखर के सामने बैठकर उन्होंने भारतीय रेलों का नक्शा बनाया था। बंबई में किसी एक्सप्रेस गाड़ी में बैठकर क्या इस जगह की आप कल्पना भी कर सकते हैं। जब किन्नौर की बात चलती है, तब पर्वतारोहियों में मार्को पालिस की याद आ जाती है। 1933 में उन्होंने लियो पर्गियाल शिखर का आरोहण किया और एक शानदार पुस्तक 'पीक्स एंड लामाज' लिखी। जोर्कांदेन, गंगचुआ और राशो समूह की सबसे ऊंची रांगरिक रांग जैसी यहां की कई चोटियों ने पर्वतारोहियों को आकर्षित किया है। इसी अंतिम चोटी पर क्रिस बोनिंगटन ने अपना 60वां जन्मदिन मनाया था। भारत-ब्रिटिश अभियान का नेतृत्व क्रिस और मैंने किया था। शिखर पर एक खास अंदाज में आरोहण किया गया था तथा हरेक ने इस प्रयास का मजा लिया था। आधार-शिखिर में हमने क्रिकेट खेली। कहने की जरूरत नहीं कि हम भारतीयों ने अंग्रेजों को उन्हीं के खेल में मात दी, क्योंकि फील्डिंग के लिए हमारे पास कुली जो थे।

स्पीती

इसके उत्तर में स्पीती की नंगी घाटियां हैं या यूं कहें हिमालय-पार का क्षेत्र है। 1983 और 1987 में हमने तत्कालीन सबसे बड़ी अछूती घाटी, पूर्वी स्पीति की लिंग्ती घाटी का सर्वेक्षण किया। हमने कई शिखरों को विजित किया लेकिन शिखर 'ग्या' की तस्वीर खींचकर ही हमें संतुष्ट होना पड़ा।

शीघ्र ही ग्या एक कीमती लक्ष्य बन गया और पिछली सहस्त्राब्दी के अंत तक इसके चारों और एक प्रभामंडल सा बन गया। लिंग्ती घाटी से और उत्तर में चुमार से प्रयासों के फलस्वरूप शीघ्र ही इसके उत्तरी शिखर और ग्या सुम्पा (तीसरे शिखर) पर जीत हासिल हो गई। लेकिन मुख्य शिखर पर गलत-सलत दावे होते रहे तथा यह पर्वतारोहियों के लिए दुर्जेय बना रहा। आखिरकार भारतीय पर्वतारोहण प्रतिष्ठान की एक टीम ने 1999 में इस पर कदम रख ही दिए। और, शिखर पर इसे एक ध्वज और कील (पिटन) मिली! घटिया खबरों और फोटोग्राफों के बावजूद सेना के पर्वतारोहियों ने 1998 में ही इस शिखर को जीत लिया था। इस तरह 'ग्या' पर दो बार जीत दर्ज हुई। लेकिन इसकी भी कीमत चुकानी पड़ी। उन्हीं दिनों प्रथम विजेता होने के चक्कर में बंबई के एक पर्वतारोही को निचले शिखर

पर अपनी जान गंवानी पड़ी। अभी कई अविजित मार्गों के चलते ग्या इस सहस्त्राब्दी में भी पर्वतारोहियों की परीक्षा लेता रहेगा।

स्पीति की ओर पर्वतारोहियों का ध्यान जिमी राबर्ट और बाद में 1955 और 1956 में सर पीटर होम्स के रतांग और पिन के दो अभियानों ने खींचा। इन घाटियों में जाने वाले अगले व्यक्ति 1993 में काइवन और मैं थे। इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि ये घाटियां कितनी दुर्गम हैं।

स्पीती के साथ एक ही सांस में लाहौल की चर्चा की जाती है क्योंकि प्रशासनिक दृष्टि से ये दोनों जुड़ी हैं। इन दोनों का लाहौल में केलौंग में एक ही मुख्यालय है। लाहौल कुंजुम ला की पश्चिमी दिशा में है। इसका मध्यवर्ती क्षेत्र चंद्रभागा क्षेत्र है जिसमें 6000 मीटर से ऊंची कई चोटियां हैं और एक विस्तृत घाटी है। ये सभी पर्वतारोहियों के लिए स्वर्ग हैं। पदयात्री अक्सर चंद्रताल जाते हैं और अब तो मनाली-लेह राजमार्ग लाहौल से होकर गुजरता है। पश्चिमी लाहौल में पर्वतमाला के पीरपंजाल में मिलने से पूर्व मुल्किला और फाब्रांग जैसी कुछ आकर्षक चोटियां हैं।

चंद्रभागा बहती हुई किश्तवार में जाती है जहां यह चिनाब कहलाती है। किश्तवार एल्प्स पहाड़ियों का भारतीय संस्करण कहा जा सकता है। यहां के पर्वतशिखर एल्प्स से ऊंचे हैं। दुर्भाग्य से एक दशक से अब यह क्षेत्र कश्मीर की अन्य घाटियों की तरह राजनीतिक उथल-पुथल में घिरा हुआ है और पर्वतारोहियों को यहां न जाने की सलाह दी जाती है।

कुल्लू

रोहतांग के दक्षिण में कुल्लू घाटी पड़ती है। यह हिमालयी घाटी की सर्वाधिक दुर्गम घाटियों में गिनी जाती है। जब जनरल चार्ल्स ब्रूस धौलाधार से कुल्लू और वहां से रोहतांग के पार गए थे, तब से कई पर्वतारोही इन घाटियों में आ चुके हैं। इन पर्वतमालाओं में कई आरोहण और अन्वेषण बॉब पेटीग्रू के खाते में हैं। पाप्सुरा आरोहण के बाद वे गिर गए थे और उन्हें लादकर 13 दिन तक कई दर्रों से गुजार कर आपरेशन के लिए लाया गया था। मैंने उनके साथ अनुभवों का आदान-प्रदान किया, क्योंकि हम दोनों को ही एक तरह की चोट लगी थी। समान स्थितियों में दोनों ही के कूल्हे अपनी जगह से हट गए थे।

जांस्कार

कुल्लु घाटी में पहुंच की दृष्टि से सबसे अधिक सुविधाजनक जांस्कार घाटी है जहां अधिकांश पदयात्री आते हैं। कई तो शिंगोला को पार करके पदम और वहां से लेह जाने के लिए यहां पहुंचते हैं। मार्ग में इस क्षेत्र का आकर्षण फुकतल मठ पड़ता है। बहुत ऊंचाई पर लगभग एक गुफा में बने इस मठ का दूसरे मठों की तरह एक लंबा इतिहास है। हंगेरियाई विद्वान, सोमा द कोरोस यहां कई साल ठहरे। यहां आने वाले अतिथियों को सगर्व उनकी स्मृति में उत्कीर्ण शिला दिखाई जाती है।

नुन और कुन पर्वतशिखरों पर पर्वतारोहियों की नजर सबसे पहले 1889 में पड़ी। कुन पर 1913 में विजय प्राप्त की गई, जबकि नुन पर पहली चढ़ाई बर्नाड पियरे के दल ने 1953 में की। जांस्कार के लोग बड़े मेहनती हैं और कड़ी ठंड झेलते हैं, हालांकि उन दिनों सब तरफ से ये लोग कट जाते हैं। जब गर्मियां आने लगती हैं, तब ये पारंपरिक तौर पर नीमो के लिए जांस्कर नदी के साथ-साथ का रास्ता पकड़ते हैं। इस मार्ग में अब कई बार इनकी मुलाकात पदयात्रियों से भी हो जाती है।

लद्दाख

लेह एशिया का चौराहा है। लद्दाख का केंद्रस्थल होने के नाते और व्यापार मार्ग पर होने के कारण कारवां यहां मिलते रहे हैं। व्यापारी यहां सभी दिशाओं से आते थे। पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में कुल्लू से, पश्चिम में बाल्टी घाटियों से मुस्लिम और उत्तर से मध्य एशिया के कारवां यहां आते थे। आज भी विमान भरकर यात्री यहां उतरते हैं, और इसका जादू कम नहीं हुआ है। पदयात्रियों और पर्वतारोहियों की दिलचस्पी के यहां कई स्थान हैं। रूप्शू की दक्षिण-पूर्वी घाटी में कई शिखर हैं जिनमें सबसे ऊंचा लुंगसेर कांगड़ी है (6666 मीटर), जिस पर हम लोग 1995 में चढ़े थे। तीन अन्य ऊंचे शिखरों — पोलोगोंग्का, कुला और छमसेर कांगड़ी पर एक के बाद एक पर्वतारोही दलों ने चढ़ाई की। ये लोग अलग-अलग देशों के थे। चाकुला तथा ऐसी कई अन्य चोटियां अभी भी पर्वतारोहियों की प्रतीक्षा कर रही हैं। विस्तृत ऊसर घाटियां, त्सो मोरीरि झील का नीला जल, आकर्षक घुमक्कड़ (चंगपा) और अन्वेषक पदयात्रा-मार्ग, यही सब कुछ रूपशू के पास है देने को।

पूर्वी काराकोरम

लेह शहर की पीछे खारदुंग पर्वतमाला लगातार पश्चिम से पूर्व की ओर चली जाती है। शायोक और सिंधु नदी के संगम से और पूर्व की ओर बढ़ते हुए यह पर्वतमाला पांगोंग पर्वतश्रृंखला से मिलती है। इन दोनों पर्वतमालाओं के उत्तर में कराकोरम पड़ता है। भारतीय हिमालय की कुछेक सबसे ऊंची चोटियां इस क्षेत्र में पड़ती हैं। दुनिया का एक सबसे ऊंचाई वाला मोटर गाड़ियों वाला मार्ग खारदुंग ला को पार करके शायोक घाटी में प्रवेश करता है। सासेर कांगड़ी-II दर्रे से यह आसान दिखता है। इसके पश्चिम शिखर पर भारत-जापानी पर्वतारोहण दल ने विजय प्राप्त की थी, जबकि इतनी ही ऊंचाई वाली पूर्व चोटी (7518 मीटर) अभी भी अविजित है। सासेर पर्वत समूह का जिमी राबर्ट्स द्वारा अन्वेषण किया गया था और इसकी सभी प्रमुख चोटियां विजित कर ली गई हैं। बस सासेर कांगड़ी-1 पर पूर्वी और

पश्चिमी दोनों रास्तों से चढ़ाई हुई थी तथा इस पर आरोहणों का एक लंबा रिकार्ड है। सासेर कांगड़ी-3 पर पूर्व की ओर से एक भारतीय दल ने विजय पाई थी। 7287 मीटर ऊंचा शिखर जिसे राबर्ट्स ने 'पठारी पहाड़ी' का नाम दिया था, यहां का प्रमुख अविजित शिखर है।

आगे उत्तर की ओर मध्य एशिया व्यापार मार्ग है जो सासेर ला से होता हुआ इस पर्वतमाला को पार करता है। बदलती मौसमी स्थितियों के कारण बदलते स्वरूप वाले इस ऐतिहासिक दर्रे ने कई खच्चरों और कुछ व्यक्तियों की जान ली है। इस दर्रे में और आगे के रास्ते में अक्सर हड्डियां मिल जाती हैं, इसीलिए इसे 'स्केलेटन ट्रेल' यानि 'अस्थिपंजर मार्ग' भी कहा जाता है। इस मार्ग तथा इसके उपमार्गों पर खड़ा है मामोस्टोंग कांगड़ी शिखर, जिस पर सबसे पहले 1984 में विजय हासिल की गई थी और यहां एक बहुत ऊंचा पथरीला पिरामिड, 'अक ताश' भी है। मैंने दो बार सासेर को पार किया है और अपनी दूसरी यात्रा में हम शायोक में अज्ञात चोंग कुमदान ग्लेशियर गए थे। इस समूह के, 7071 मीटर वाले मुख्य शिविर समेत तीन शिखरों पर हम तथा कई अन्य लोग चढ़े थे। चोंग कुमदान शायोक पर बनाए गए अपने कई बांधों के लिए प्रसिद्ध है। बढ़ता हुआ चोंग कुमदान ग्लेशियर सर्दियों में शायोक को रोक देता है। गर्मियों में नदी के उफान से बांध टूट जाता है और इससे बाढ़ आती है तथा कई सौ किलोमीटर नीचे तक तबाही आ जाती है। रास्ता काराकोरम दर्रे तक और अंत में मध्य एशिया तक चला जाता है।

सियाचिन ग्लेशियर

वापिस नुब्रा घाटी और सासोमा चलें, जहां से रास्ता आरंभ हुआ था। उत्तर में है सियाचिन ग्लेशियर। यह दुनिया के सबसे लंबे ग्लेशियरों में से एक है। यह पर्वतारोहण का एक प्रमुख आधार भी है। इसका बड़ा लंबा इतिहास है। सर फ्रांसिस यंगहस्बैंड, बुलक वर्कमैंस और टॉम लांगस्टाफ पहले यात्री थे जो यहां आए और यहां की लंबाई, स्थिति और पर्वतों की जानकारी लेकर लौटे। इसकी पश्चिमी छोर पर साल्टोरो कांगड़ी-1, के-12, सिया कांगड़ी तथा अन्य चोटियों पर विभिन्न देशों के पर्वतारोहियों ने विजय प्राप्त की। 1970 के दशक में कई जापानी अभियान दलों ने पश्चिम में बिलाफोंड ला को पार किया, इस ग्लेशियर पर पहुंचे और तेराम कांगड़ी-1, अप्सरासास और सिंधी कांगड़ी पर आरोहण किया। पाकिस्तान की ओर से हुए इन आरोहणों ने भारतीय सेना को कार्रवाई करने के लिए मजबूर किया और 1984 में सेनाएं इस ग्लेशियर की ऊंचाइयों पर आकर जम गईं। यह 'ग्लेशियर युद्ध' की शुरुआत थी, जो आज भी जारी है। इससे पूर्व भारतीय सेना के कुछ अभियान दल इस ग्लेशियर पर चढ़ते रहे थे और उपरोक्त शिखरों पर कई बार उन्होंने चढ़ाई की। अब यह चढ़ाई भारत की ओर से हुई थी।

इस ग्लेशियर पर तथा साथ की घाटियों में भारत की तरफ से कई दलों को आरोहण की अनुमति दी गई। साथ की घाटी में पहला संयुक्त अभियान 1985 में रिमो शिखरों पर हुआ। दल का नेतृत्व मैंने किया और डेविड विल्किंसन रीमो-3 पर चढ़े तथा रीमो-1 पर चढ़ते-चढ़ते रह गए, जिस पर अगले वर्ष जापानी पर्वतारोही दल ने विजय प्राप्त की। एक भारत-अमरीकी टीम ने सिया कांगड़ी पर चढ़ाई की जो इस ग्लेशियर के शीर्ष पर थी। इसके बाद कई सालों तक कोई भी पर्वतारोही ऊपर ग्लेशियर में नहीं गया। 7705 मीटर ऊंचा साल्तोरो कांगड़ी-2 शिखर आज भी दुनिया के ऊंचे अविजित शिखरों में गिना जाता है। जब वहां स्थिति शांत हो, काफी पर्वतारोहण किया जा सकता है।

1998 में मेरा एक सपना पूरा हुआ, जब सियाचिन ग्लेशियर को पार करते हुए मैं इसके शीर्ष, इंदिरा कोल पर जा खड़ा हुआ। ऐतिहासिक पर्वतों और ऐतिहासिक महत्व के खास स्थलों को देखना एक भव्य अनुभूति थी। ग्लेशियर से जुड़ी वर्तमान लड़ाई के बावजूद यह ग्लेशियर पर्वतारोहियों के लिए भविष्य की पर्वतमाला है।

हालांकि भारतीय हिमालय में 8000 मीटर से ऊंची पर्वतचोटियां नहीं हैं, जिनके लिए प्रमुख पर्वतारोही दूसरी जगह अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं, फिर भी भारतीय हिमालय पर्वतमाला अपने बूते पर ही अलग खड़ी है। एवरेस्ट समेत सभी ऊंची चोटियों पर 100 से भी अधिक बार चढ़ाई हो चुकी है। एक बार उनमें दिलचस्पी खत्म हो गई, तब उम्मीद है भारत जैसी पर्वतमालाएं, पर्वतारोहियों की क्रीड़ास्थली बन जाएंगी।

यह भारतीय हिमालय में घटनाक्रम का संक्षिप्त व्यक्तिगत इतिहास है। पर्वतारोहण के अलावा भी इस पर्वतमाला के कई अन्य पहलू हैं। इस पर्वतमाला में दिलचस्पी रखने वाले पर्वतारोही के लिए मेरा एक सुझाव है। 'बे आफ पिग्स' की नाकामी के बाद कहा जाता है कि एक बार नार्मल मिलर ने राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी से मजाक में कहा था, ''बिना वहां के संगीत को समझे आपने एक देश पर हमला कर दिया।'' मैं भी यही बात कहूंगा कि अगर आप इसके समृद्ध इतिहास और विविधतापूर्ण संस्कृति को समझ पाएंगे, तो भारतीय हिमालय की आपकी यात्रा अधिक आनंददायक होगी। हालांकि पिछली सहस्त्राब्दी में भारतीय हिमालय पर्वतशृंखला में काफी कुछ किया गया है, फिर भी काफी कुछ करना अभी शेष है। युगों से खड़े नगाधिराज हिमालय के लिए 1000 वर्ष की अवधि क्या होती है। आज जब हम अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मना रहे हैं, हमें इस पर्वतमाला के बारे में अधिक जानने और इसे संरक्षित रखने की प्रतिज्ञा लेनी होगी। ❑

(लेखक श्री हरीश कपाड़िया एक अनुभवी पर्वतारोही हैं।)

स्थायी पर्वत विकास

○ गोपी एन. घोष

पर्वतीय क्षेत्रों और समुदायों के सामने उपस्थित समस्याएं उनके पर्यावरण की अनूठी विशिष्टताओं से उत्पन्न होती हैं। सबसे बड़ी चिंता इन पर्वतीय समुदायों को व्यापक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में समन्वित करने की है क्योंकि खुली अर्थव्यवस्था या विश्वव्यापीकरण की अवधारणाओं से उनके परिप्रेक्ष्य आसानी से मेल नहीं खाते।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (यूएनसीईडी) की कार्यसूची 21 के अध्याय 13 में स्थायी पर्वतीय विकास पर जोर दिया गया है। साथ ही इस दिशा में तत्काल कार्रवाई करने और दो कार्यक्रम क्षेत्रों को स्पष्ट करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है :

— पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के निरंतर विकास और पारिस्थितिकी का ज्ञान उत्पन्न करना और उसे मजबूत करना;
— समन्वित जलसंग्रह विकास और वैकल्पिक आजीविका अवसरों को प्रोत्साहन (सं. रा. 1992)। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन को अध्याय 13 का कार्य प्रबंधक नियुक्त किया गया।

पर्वतीय क्षेत्रों के महत्व के बारे में तेजी से बढ़ती जागरूकता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने नवम्बर 1998 में 2002 को अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मनाने की घोषणा की। अंतर्राष्ट्रीय पर्वत वर्ष मनाने के लिए खाद्य एवं कृषि संगठन को प्रमुख एजेंसी के रूप में चुना गया जिसे सरकारों, गैर सरकारी संगठनों, सामाजिक संस्थाओं तथा संयुक्त राष्ट्र के अन्य संगठनों, विशेषकर यूएनईजी, यूएनडीपी और यूनेस्को के सहयोग से इस वर्ष के सिलसिले में विशेष आयोजनों की व्यवस्था करनी थी। यह संगठन इस वर्ष को सम्बद्ध पर्वतीय मुद्दों के बारे में जन चेतना उत्पन्न करने और निरंतर पर्वतीय विकास पर अमल करने के बारे में ठोस कार्रवाई के लिए पर्याप्त राजनीतिक, संस्थागत और वित्तीय प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने के एक अवसर के रूप में देखता है।

पर्वतीय क्षेत्र जल, ऊर्जा और जैव विविधता के महत्वपूर्ण स्रोत तो हैं ही, इनसे कृषि और वनोत्पादों, खनिजों और मनोरंजन-स्थलों जैसे संसाधन भी उपलब्ध होते हैं। पर्वत पृथ्वी की एक-चौथाई भूमि में फैले हुए हैं और 10 में से 1 व्यक्ति इसमें रहता है, 60 से 80 प्रतिशत ताजा भूसतह जल इनसे मिलता है और जैव विविधता के 50 प्रतिशत हाट-स्पाटों को ये पोषित करते हैं। इसके अलावा पर्वत जलवायु परिवर्तन के मूल संकेतक भी होते हैं। विश्व भर में पर्वतों को संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान का केन्द्र माना जाता रहा है।

लेकिन पर्वतीय पर्यावरण अत्यंत ही नाजुक पारिस्थितिकी प्रणाली है। अपनी खड़ी ढालों और सीधे आकार-प्रकार की वजह से इनमें भू-क्षरण, भूस्खलन और पर्यावरण एवं जैव विविधता के क्षरण की संभावना बनी रहती है। पर्वत वहां रहने वाले निवासियों के लिए कड़ी चुनौतियां उत्पन्न करते हैं। कड़े भौतिक पर्यावरण, पृथक्करण, संचार की कमी, पर्वतीय समुदायों को ज्ञान व प्रौद्योगिकी प्रदान करने में अपेक्षाकृत विफलता, और नस्ली अल्पसंख्यकों की उपेक्षा की वजह से पर्वतवासियों में गरीबी व्याप्त है।

स्थायी पर्वत विकास के प्रमुख उद्देश्यों में मोटे तौर पर व्यापक स्थायी विकास के उद्देश्यों की झलक मिलती है। चुनौती

यह है कि पर्यावरण से समझौता किए बिना या प्रचलित सामाजिक या सांस्कृतिक मूल्यों को नुकसान पहुंचाए बिना आर्थिक विकास पर जोर देना है। लेकिन पर्वतीय क्षेत्रों में यह चुनौती उन निहित भौतिक दबावों की वजह से बढ़ जाती है जिनके चलते पर्वतीय समुदाय राष्ट्रीय, प्रादेशिक और विश्व आर्थिक विकास के दायरे से अक्सर बाहर रह जाते हैं तथा शोषण एवं उपेक्षा के शिकार बन जाते हैं। नीति-निर्माताओं के लिए चुनौती इस बात की है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में पर्वतीय समुदायों के सहज समन्वय के साथ ही पर्वतीय क्षेत्रों की विशेष परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा जाए।

मुद्दे एवं चुनौतियां

निरंतर पर्वतीय विकास में कई मूलभूत मुद्दे और प्राथमिकताएं अवरोध के रूप में उभरती हैं। सरोकारों के भी अलग-अलग स्वरूप हैं। उदाहरण के लिए विश्व स्तर के सरोकारों में जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता संरक्षण, ताजे पानी के संसाधन, पारिस्थितिकी पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत आदि शामिल हैं, जबकि प्रादेशिक मंच पर व्यापार, ऊपरी भूमि एवं निचली भूमि संपर्क, जलसंग्रह प्रबंध, प्रवजन, नदी थाला प्रबंध आदि पर मुख्य जोर है। राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षण और विकास के लिए नीति, कानून, राष्ट्रीय कार्य नीतियों, नियोजन और कार्यक्रम निर्माण के क्षेत्रों पर जोर दिया जा सकता है। स्थानीय जमीनी स्तर पर प्रमुख मुद्दों में लोग, लिंग, समुदाय, स्थानीय अर्थव्यवस्था, आजीविका, संस्कृति, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और विकास के मुद्दों पर महत्व दिया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में चर्चा नीचे की जा रही है।

पर्यावरण संबंधी मुद्दे

नाजुक पारिस्थितिकी प्रणालियां : भूस्खलनों के लिए जिम्मेदार कड़ी जलवायु स्थितियों और खड़ी ढलानें, पोषक तत्वों के भारी नुकसान और बड़े पैमाने पर भूक्षरण की वजह से पहाड़ों की पारिस्थितिकी प्रणालियां बड़ी ही नाजुक होती हैं। इसके अलावा ऊंचाइयों में तेजी से होने वाले परिवर्तनों से बड़ी संकरी पट्टियों में स्पष्ट पर्वतीय पर्यावास उत्पन्न होते हैं जो आसानी से बिगड़ या नष्ट हो सकते हैं। आजीविका के लिए खेती या अन्य संसाधनों के दोहन क्षेत्र सामान्यतया सीमित होते हैं और इस वजह से इनका जरूरत से अधिक इस्तेमाल किया जाता है।

जैव-विविधता के महत्वपूर्ण स्रोत हैं हमारे पर्वतीय क्षेत्र

बहुविध कार्यों का समर्थन : पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियां जल-चक्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि ये हवा से नमी सोखती हैं। एशिया के आर्द्र और अर्ध-आर्द्र क्षेत्रों में 90 प्रतिशत से अधिक नदियां पर्वतीय जल संग्रहण क्षेत्रों से निकलती हैं। ये प्रणालियां पनबिजली की स्रोत होती हैं। इनसे जलाऊ और इमारती लकड़ी, खनिज तथा अयस्क भी प्राप्त होते हैं और ये जैव-विविधता के महत्वपूर्ण भंडार होते हैं। पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों से पहाड़ों में बसने वाले लोगों को आजीविका के साधन भी उपलब्ध होते हैं।

इसलिए जरूरी है कि निरंतर पर्वतीय विकास परियोजनाओं से पारिस्थितिकी प्रणाली को नुकसान पहुंचाए बिना इन बहुविध कार्यों में मदद मिलती रहे। उदाहरण के लिए उत्खनन के कारण जमीन से हरियाली छिन गई है, गारे एवं कचरे के बड़े-बड़े क्षेत्र बन गए हैं और जलप्रवाह प्रदूषित हो गए हैं। औद्योगिक दृष्टि से वनों के उपयोग और चरागाहों तथा शिकारगाहों के लिए वन भूमि को साफ करने से जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और ढलवां भूमि के क्षरण की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

जैव-विविधता संरक्षण : पर्वतमालाओं के गलियारों का एक जाल सा बनाकर जैव क्षेत्रों के संरक्षण के लिए जैव विविधता के प्रबंध के वास्ते सीमापार के देशों के साथ सहयात्रा जरूरी है। सागरमाथा (माउंट एवरेस्ट) क्षेत्र के प्रबंध

के लिए नेपाल और चीन (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) के बीच भागीदारी इसका एक उदाहरण है। पहाड़ों में जैव-विविधता के संरक्षण और उसे बनाए रखने के लिए स्थानीय निवासियों का सहयोग भी अत्यंत आवश्यक होता है। पारंपरिक विधियों के साथ मेल खाने वाली नई कृषि प्रौद्योगीकियों पर अमल किया जा रहा है ताकि पारिस्थितिकी प्रणाली प्रबंध की निरंतरता सुनिश्चित की जा सके। इससे सीमापार पर्वत प्रणालियों के आसपास विकास और संरक्षण के लिए सद्भाव, सहयोग और शांति बनाए रखने में मदद मिलेगी।

आर्थिक मुद्दे

आजीविका अवसरों में सुधार : पर्वतीय निवासी दुनिया में सबसे गरीब लोगों की श्रेणी में आते हैं। इसलिए उन्हें आर्थिक विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए बड़े विकास-प्रयासों की जरूरत है। पर्वतीय इलाकों की ऊबड़-खाबड़ जमीन और दुर्गमता की वजह से इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास का स्तर और उपयोगिता प्रभावित होती है। बाहरी अर्थव्यवस्थाओं के साथ इनका सम्पर्क नहीं होता और ये खुले बाजारों में प्रतिस्पर्धा के लायक नहीं होते हैं। पर्वतीय समुदायों के लिए आजीविका स्रोतों का सुधार सूक्ष्म स्तर पर ऐसे बाजारों की पहचान पर निर्भर करता है जिनमें पर्वतीय उत्पाद प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से फायदेमंद स्थिति में हों। आजीविका अवसर बढ़ाने के लिए श्रम के रूप में पूंजी बढ़ाना और बुनियादी सुविधाओं को मजबूत बनाना भी जरूरी है। पर्वतों में रहने वाले समुदायों को अपने जीवन स्तर को सक्षम रूप से ऊंचा उठाने में मददगार कौशल और सुविधाएं उपलब्ध कराने की सख्त जरूरत है।

अंतर्राष्ट्रीय समन्वित पर्वतीय विकास केन्द्र : अंतर्राष्ट्रीय समन्वित पर्वतीय विकास केन्द्र के हिंदुकुश हिमालय के स्थायी विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग कार्यक्रम का एक प्रमुख अंग पर्वतीय निवासियों में व्याप्त गरीबी को कम करना और उनके आजीविका साधनों को बनाए रखना है। सम्पूर्ण पर्वतीय क्षेत्र में जीवन स्तर उन्नत बनाने के लिए प्रस्तावित गतिविधियों में छोटी-छोटी जोतों के लिए खेत में मृदा-जल-पोषक तत्व प्रबंध और सम्बद्ध प्रौद्योगिकी और प्रबंध विकल्पों में सुधार, उच्चमूल्य वस्तुओं और उद्यमों, आय एवं रोजगार अवसरों में विविधता और विस्तार तथा बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं का संतुलित विकास शामिल किया गया है।

उच्च भूमि/निम्न भूमि की परस्पर निर्भरता : पर्वतीय निवासियों के लिए आर्थिक अवसर बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके संसाधनों और उनकी सेवाओं के उपयोग का उन्हें उचित मेहनताना प्राप्त हो, पर्वतीय तथा निचले क्षेत्रों के बीच संसाधनों के आवागमन को समझना अत्यंत आवश्यक होता है। सामान्यतया सामानों और सेवाओं के अंतर्प्रवाह की तुलना में संसाधन और वस्तुओं का बाह्य प्रवाह कहीं अधिक होता है। खनिज अयस्क और इमारती लकड़ी जैसी खत्म होने वाली वस्तुओं के निर्यात का महत्व काफी होता है। इन वस्तुओं को बड़े पैमाने पर निकाला जाता है लेकिन स्थानीय लोगों को इनके बदले में प्रतिपूर्ति बहुत कम मिलती है। इसके विपरीत आने वाली वस्तुएं आमतौर पर मुख्य रूप से उपभोक्ता वस्तुओं के रूप में कम और सीमित होती हैं। हां, विशिष्ट बुनियादी संरचना और औद्योगिक विकास परियोजनाओं में निवेश जरूर अधिक मात्रा में होता है।

उच्च तथा निम्न भूमियों के बीच आर्थिक सम्पर्क और परस्पर निर्भरता की जरूरत मुख्यतया दोनों क्षेत्रों के अपने-अपने प्राकृतिक संसाधनों के भंडारों और इन अंतरों के कारण उत्पन्न व्यापार संभावनाओं के कारण पैदा होती है। परस्पर सम्बंध कई ढांचागत और संस्थागत व्यवस्थाओं तथा सम्बद्ध प्रौद्योगिक एवं मानव क्षमताओं से प्रभावित होते हैं। एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कम कीमत पर पर्वतीय इलाकों से मुख्यतया कच्चे माल का निर्यात होता है। इस प्रकार व्यापार की शर्तें पर्वतीय लोगों के पक्ष में नहीं होतीं और उनके संसाधनों के बड़े पैमाने पर दोहन से मिलने वाले आर्थिक लाभ अक्सर पर्वतीय समुदाय को नहीं मिल पाते। इस प्रकार एक सामान्य निष्कर्ष यह है कि निचली भूमियों में रहने वाले लोगों को सबसे अधिक फायदा होता है, जबकि पर्वतीय समुदायों को पर्यावरण का नुकसान और सामाजिक लागत झेलनी पड़ती है। यह बात सिंचाई और आदमी के इस्तेमाल के लिए ताजा पानी के उपयोग, दोमट मिट्टी की तलहट और पोषक तत्वों के प्रवाह तथा भरपाई न होने वाली अन्य पर्यावरण सेवाओं के प्रवाह के मामले में भी खरी उतरती है।

पर्वत विकास और संरक्षण में निवेश: ऐसा निवेश आमतौर से कम होता है और जब होता है तो यह केवल उच्च पूंजी प्रधान परियोजनाओं तक सीमित होता है। शुद्ध मूल्य के हिसाब से इन निवेशों से पर्वतीय समुदायों या उनके पर्यावरण को थोड़ा ही फायदा पहुंचता है। नियोजन और क्रियान्वयन से स्थानीय समुदायों को अक्सर अलग रखा जाता है जिनके द्वारा इस क्षेत्र को होने वाले नुकसानों की भरपाई या पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने पर कम ही ध्यान दिया जाता है।

पर्वतीय क्षेत्रों के विकास में उच्च जोखिम, निवेश झेलने की कम क्षमता,

निवेश के मुकाबले अवसरों के लिए मजबूत व्यवस्था का अभाव और निवेश पूंजी की कमी जैसी कई समस्याएं आड़े आती हैं जबकि निचले इलाकों में अतिरिक्त निवेश उपलब्ध होने की स्थिति में बेहतर अवसर उपलब्ध होते हैं। इसलिए पर्वतीय क्षेत्रों से पूंजी का प्रवाह होने लगता है। साथ ही लोगों का बाहर जाना भी जारी रहता है। इसलिए एक सबसे महत्वपूर्ण चुनौती पर्वतीय क्षेत्रों में इस प्रकार से निवेश जुटाने की है जिससे स्थानीय लोगों को लाभ पहुंचे और जो पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल व स्थायी हों।

खुली अर्थव्यवस्था और विश्व-व्यापीकरण : बाजार-प्रधान व्यवस्थाओं में अल्पावधि वाणिज्यीकरण पर जोर रहता है। इसकी वजह से कई पर्वतीय क्षेत्रों में पारंपरिक संस्कृतियों और सामाजिक रीति-रिवाजों की अक्सर उपेक्षा हुई है। नई संभावनाओं के उत्पन्न हुए बिना जहां पारंपरिक उत्पादन अवसरों को अवरुद्ध किया गया हो, वहां यह उपेक्षा और भी गंभीर हो गई है। बाजार-प्रेरित अर्थव्यवस्थाओं से उत्पन्न नए प्रोत्साहनों, प्रौद्योगिकियों, बुनियादी सुविधाओं और संस्थागत समर्थन से निम्न भूमियों में पर्वतीय सामानों के गहन उत्पादन को बढ़ावा मिल सकता है। परिणामस्वरूप पर्वतीय समुदायों को जो फायदे पहले मिलते थे वे कम हो जाते हैं। इमारती लकड़ी काटने के लाइसेंस मंजूर करने से पर्वतीय लोगों पर अपनी आजीविका कमाने के लिए स्थानीय वनों के इस्तेमाल पर रोक लग जाती है, जबकि पनबिजली के विकास से उनकी खेतिहर जमीनें पानी में डूब सकती हैं और उनके क्षेत्रों में राष्ट्रीय पार्कों, संरक्षित वनों और पर्यटन-स्थलों के विकास से उनकी आमदनी के पारंपरिक स्रोत छिन सकते हैं। निरंतर पर्वत विकास का उद्देश्य पर्वतीय अर्थव्यवस्थाओं को व्यापक क्षेत्रीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था प्रणालियों में समन्वित करना है ताकि पर्वतीय लोगों को आर्थिक लाभों और व्यापार अवसरों का समान हिस्सा उपलब्ध कराया जा सके।

सामाजिक-आर्थिक मुद्दे

दुर्गमता और पृथक्करण : पर्वतीय क्षेत्रों के दूरदराज और कठिन क्षेत्र होने के कारण इनके विकास में बाधा आती है। ढुलाई की उच्च लागत से व्यापार विकास में काफी अड़चन होती है तथा शीघ्र खराब हो जाने वाली वस्तुओं को बाजार पहुंचाने में लगने वाले अधिक समय से उनके निर्यात में रुकावट आ सकती है। इसी प्रकार इन इलाकों के दुर्गम व दूरदराज में होने के कारण पर्वतीय लोगों की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं या ग्रामीण विस्तार कार्यक्रमों से संबंधित राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में रुकावट आती है। इससे वे ज्ञान और नए-नए विचारों से वंचित रह जाते हैं तथा बाहरी दुनिया के साथ कारगर संवाद स्थापित करने की उनकी क्षमता भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। इसलिए उनका अलग-थलग पड़ जाना उनकी गरीबी बढ़ाने का एक प्रमुख कारण बन जाता है।

> ***निरंतर पर्वतीय विकास में ग्रामीण विस्तार के जरिए जीवन स्तर उन्नत बनाने तथा पर्वतीय समुदायों के द्वार पर ही स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सामाजिक सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए संसाधनों के बेहतर प्रबंध में स्त्रियों और नौजवानों की भूमिका पर जोर दिया जाता है।***

खाद्य सुरक्षा : पर्वतीय समुदायों को कुपोषण और खाद्य असुरक्षा का खासतौर पर खतरा अधिक रहता है। विशेषकर औरतों और बच्चों को यह खतरा काफी ज्यादा होता है। पर्वतीय क्षेत्र में कृष्य भूमि की सीमित सुलभता, घटिया मृदा स्तर और कठोर जलवायु स्थितियों की वजह से खाद्य उत्पादन गंभीर रूप से प्रतिबंधित हो जाता है। दूरदराज की स्थिति और उच्च परिवहन लागत भी अन्य क्षेत्रों से उत्पादों और प्रौद्योगिकी तथा खाद्य पदार्थों का आना सीमित कर देती है।

कठोर जीवन स्थिति से पर्वतीय क्षेत्रों में कुपोषण तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी का स्तर भी बढ़ जाता है। उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि वहां कम वजन, बौनेपन और बरबादी की समस्याएं गंभीर हैं। न केवल मात्रा में, बल्कि इष्टतम संगठन और गुणवत्ता के लिहाज से खाने की कमी है। सामान्य स्वास्थ्य सुविधाओं और प्रतिरक्षीकरण के अभाव में अधिक बीमारियां होती हैं जिनका परिणाम लोगों के निरंतर गिरते स्वास्थ्य के रूप में सामने आता है। पर्वतीय क्षेत्रों की विशेष पोषण समस्याओं में जन्म के समय कम भार, घटिया आहार, शिशु मृत्यु, आयोडीन की कमी से पैदा होने वाली बीमारियां, प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर मृत्यु, गलगंड और थायराइड के कारण शारीरिक व मानसिक अवरुद्धता, विटामिन 'ए' की कमी आदि प्रमुख हैं।

1996 में रोम में हुए विश्व खाद्य शिखर सम्मेलन ने खाद्य सुरक्षा को विश्व समुदाय के लिए एक उच्च प्राथमिकता मुद्दे के रूप में विचारार्थ रखा था। इसका अर्थ यह है कि निरंतर पर्वतीय विकास की दिशा में किए जाने वाले प्रयास भूख और

कुपोषण के उन्मूलन के लिए विश्व व्यवस्था का अभिन्न अंग बन जाएंगे, जो उन्नत खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन के समग्र उद्देश्यों के अनुरूप होंगे।

औरतों और बच्चों की स्थिति : कठोर भौगोलिक स्थितियों की वजह से पर्वतीय क्षेत्रों में स्त्रियों और बच्चों द्वारा झेले जाने वाली समस्याएं और गंभीर हो जाती हैं। निरंतर पर्वतीय विकास में ग्रामीण विस्तार के जरिए जीवन स्तर उन्नत बनाने तथा पर्वतीय समुदायों के द्वार पर ही स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सामाजिक सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए संसाधनों के बेहतर प्रबंध में स्त्रियों और नौजवानों की भूमिका पर जोर दिया जाता है।

आदमी तो लंबी अवधियों के लिए घर से दूर रहते हैं और खेतों और परिवारों की गुजर बसर का काम नौजवानों तथा औरतों के जिम्मे होता है। इसलिए वे निश्चित समयावधियों तथा स्थायी तौर पर दोनों ही स्थितियों में पर्वतों से पलायन से प्रभावित होते हैं। औरतों की जमा और ऋण सुविधाओं, कृषि विस्तार सेवाओं तथा अन्य सेवाओं तक पहुंच सीमित ही होती है। पर्वतों से पलायन की वजह से बच्चों को भी अतिरिक्त जिम्मेदारी उठानी पड़ सकती है। उदाहरण के लिए चरवाही तथा अन्य घरेलू काम उनके जिम्मे आ सकते हैं और इनका असर उनके शैक्षणिक अवसरों पर पड़ता है।

सांस्कृतिक मुद्दे

सांस्कृतिक अखंडता : पर्वतीय समुदायों ने ऐसी कृषि प्रणालियां और भू-उपयोग ढांचे तैयार किए हैं जो मौजूदा भौगोलिक स्थितियों के साथ मेल तो खाते ही हैं, उनके लिए स्थायी आजीविका के स्रोत भी उत्पन्न करते हैं। लंबे अरसे से और प्रवजन के जरिए ये प्रणालियां और ढांचे विशिष्ट पर्वतीय संस्कृति के रूप में बदल गए हैं। चुनौती अब इस बात की है कि लोककथा, संगीत, नृत्य, रीति रिवाजों और परंपराओं के रूप में उनकी संस्कृति के अनूठे ताने-बाने को नुकसान पहुंचाए बिना उन्हें व्यापक लक्ष्यों को पाने में सक्षम कैसे बनाया जाए। अभी हाल में बाहरी दुनिया के साथ अधिक संपर्क से ऐसे समुदायों की अपेक्षाएं बढ़ गई हैं और उन्हें परिवर्तन की मांग करने की प्रेरणा मिलने लगी है। सामान्य तौर पर इसके लिए संसाधनों के इस्तेमाल में क्रांतिकारी परिवर्तन, नए उत्पादों को अपनाने और संस्थागत ढांचों तथा जोखिम बंटवारा व्यवस्थाओं के दायरे में नवीनताओं पर गौर करना होगा।

पर्वतीय इलाकों और समुदायों की समस्याएं आमतौर पर उनके परिवेश की खास विशेषताओं की वजह से उत्पन्न होती हैं। सर्वप्रमुख सरोकार पर्वतीय अर्थव्यवस्थाओं को व्यापक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में मिलाने या समन्वित करने का है क्योंकि उनके परिप्रेक्ष्य आसानी से खुली अर्थव्यवस्थाओं और विश्वव्यापीकरण की अवधारणाओं से मेल नहीं खाते।

मौलिक जनाधिकारों की सुरक्षा : अब सबसे बड़ी चुनौती प्राचीन ज्ञान, तौर-तरीकों, दृष्टिकोणों और संस्कृति को बचाने की है जो मौखिक परंपराओं में जीवित है। मौलिक लोगों के अधिकारों को मान्यता देने और उनके पुरखों की जमीन, संस्कृति तथा परंपराओं से उन्हें आर्थिक लाभ उठाने के अधिकार देने की जरूरत है। इसके लिए एक विशेष कानून बनाने की जरूरत होगी जैसा कि फिलीपीन्स ने 1986 में बनाया था। इस कानून से वहां मानवाधिकार सरोकारों के एक नए युग का सूत्रपात हुआ था। इनमें विस्थापित मूल लोगों के अधिकार भी शामिल थे, जिनके संरक्षण के लिए राज्य की प्रशासनिक शक्तियों के जरिए व्यक्तियों, परिवारों और मूल समूहों के पूर्वजों के क्षेत्रों के वैध दावों को मान्यता देने, तथा प्रचलित ज्ञान, रीतिरिवाज और संस्कृति के अनुसार भूमि-प्रबंध के लिए ढांचा उपलब्ध कराने पर जोर दिया जाता है।

पावन पर्वत और पवित्र नदियां : पर्वत प्राचीन ज्ञान और असाधारण आध्यात्मिक परंपराओं के भंडार हैं। पर्वतों से कई पवित्र नदियां निकलती हैं और उनमें बहती हैं जिनका अपना खास ऐतिहासिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है। ऐसे खजानों को विकसित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने की जरूरत है और शायद उन्हें अनूठे उत्पादों और सेवाओं के रूप में बेचना भी जरूरी है ताकि स्थानीय लोगों को लाभ पहुंच सके।

पर्वतीय क्षेत्रों में लड़ाई : विश्व की अधिकांश लड़ाइयां पर्वतीय क्षेत्रों में होती हैं जहां भारी संख्या में विश्व के निर्धन और कुपोषित लोग रहते हैं। निरंतर पर्वतीय विकास की दिशा में सबसे बड़ी अकेली बाधा युद्ध और खाद्य सुरक्षा बनाए रखने की है। शांति न होने पर गरीबी कम करने या पर्याप्त खाद्य आपूर्ति की सुरक्षा या स्थायी विकास पर गौर करने की संभावना कम ही रहती है। 1999 में विश्व की 27 प्रमुख सशस्त्र लड़ाइयों में से 23 पर्वतीय क्षेत्रों में लड़ी गई थीं। एशिया-प्रशांत क्षेत्र के कुछ ही देश इस उथल-पुथल से अछूते रहे हैं और कई मामलों में इन लड़ाइयों में पर्वतीय मूल के लोग भी शामिल रहे हैं। उदाहरण के लिए हिमालय में सियाचिन ग्लेशियर विश्व

की सबसे लंबी चलने वाली लड़ाइयों में से एक का स्थल रहा है। सबसे ताजा उदाहरण अफगानिस्तान का है। इस बीच कई पर्वतीय क्षेत्रों में खास नस्ली समूहों वाली लड़ाइयां समय-समय पर चलती रही हैं।

निष्कर्ष

पर्वतीय इलाकों और समुदायों की समस्याएं आमतौर पर उनके परिवेश की खास विशेषताओं की वजह से उत्पन्न होती हैं। सर्वप्रमुख सरोकार पर्वतीय अर्थव्यवस्थाओं को व्यापक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में मिलाने या समन्वित करने का है क्योंकि उनके परिप्रेक्ष्य आसानी से खुली अर्थव्यवस्थाओं और विश्वव्यापीकरण की अवधारणाओं से मेल नहीं खाते।

सरकारों के लिए पर्वतीय विकास के वास्ते अनूकूल आर्थिक माहौल बनाना जरूरी है। साथ ही उनके लिए प्रतिस्पर्धी उत्पादों एवं बाजारों की पहचान और विकास (जैव उत्पाद, जड़ी बूटियां, चिकित्सीय पौधों, शहद, मसालों, मवेशियों, हस्तशिल्प) के लिए अनुसंधान के रूप में सहायता की जरूरत है जो संभवतया पर्वतीय उत्पादों में विविधता से संभव है। पर्वतीय उत्पादों का मूल्यवर्द्धक विधायन एक और संभावना भरा क्षेत्र है। पर्यटन के सही विपणन से (प्रकृति अन्वेषण, रोमांचक खेल और आध्यात्मिक प्रवास) भी उन्हें एक स्थान बनाने का अवसर मिल सकता है।

स्थानीय संसाधनों (विशेष कर कृषि) की उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप (जैव-प्रौद्योगिकी) तथा अनुकूल व्यापार शर्तों के विकास के लिए संस्थागत हस्तक्षेप की आवश्यकता पर जोर दिया जाना चाहिए। परिवहन और सेवा क्षेत्र की आधारभूत संरचना का निर्माण सहायता का एक सर्वाधिक त्वरित साधन है। सामुदायिक भागीदारी और विकेन्द्रित नियोजन का भी सहारा लिया जा सकता है। दूरदराज रहना एक सबसे नुकसानदेह बात है और इस कमी पर अगर काबू पा लिया गया तो यह गरीबी के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

नीति-निर्माताओं को भी बाहरी एजेंटों द्वारा पर्वतीय संसाधनों के दोहन की रोकथाम के लिए कदम उठाने होंगे क्योंकि ये लोग पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने तथा सामाजिक ढांचे को छिन्न-भिन्न करने का काम करते हैं। सरकारों को आमदनी के अधिक समानतापूर्ण वितरण के लिए राष्ट्रीय आर्थिक लक्ष्यों और स्थानीय समुदायों की मांगों एवं अधिकारों के बीच संतुलन बनाना होगा। ❑

(लेखक नई दिल्ली स्थित एफ ए ओ में नेशनल आफिसर हैं।)

IAS-BOOKS

भारत और विश्व :
बदलते परिदृश्य - सी.बी.पी. श्रीवास्तव

INDIA AND THE WORLD :
Changing Scenario - C.B.P. Srivastava

SCIENCE & TECHNOLOGY
Current Perspectives - C.B.P. Srivastava

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी :
वर्तमान संदर्भ - सी.बी.पी. श्रीवास्तव

लोक प्रशासन - M.P. Sharma, B.L. Sadana
समाजशास्त्र के सिद्धान्त - Vidya Bhushan, D.R. Sachdeva
भारतीय प्रशासन - होशियार सिंह
भारत की विदेश नीति - R.S. Yadav
हिन्दी भाषा और साहित्य - किरण बाला
हिन्दी भाषा - भोलानाथ तिवारी
सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा - रविन्द्र नाथ
भारत में समाज कल्याण प्रशासन - D.R. Sachdeva
भारत में नगरीय स्थानीय सरकार - Pardeep Sachdeva
भारतीय अर्थव्यवस्था - J.N. Mishra
भारतीय अर्थव्यवस्था नियोजन एवं विकास - B.B. Tripathi
जनसंख्या : समस्या एवं नीति - J.N. Mishra, Kamlesh Paliwal

किताब महल डिस्ट्रीब्यूटर्स
28, नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-2
फोन : 3273230, 3289285

पर्वतों का रहस्यवाद, रोमांस और निमंत्रण

पी.एम. दास

वनों और बर्फ के बीच काव्यात्मकता से ओतप्रोत वे पर्वत क्षेत्र होते हैं जहां ऊपर चढ़ते हुए आप सबसे पहले यह महसूस करते हैं कि आपके कंधों से दुनियावी चिंताओं का भार उतर गया है और आप अंततः अवसाद के दलदल के पार पहुंच गए हैं (बनयन)। आरंभिक महीनों में आप वहां घुटनों तक आने वाले ऐसे फूलों के बीच से होकर गुजरते हैं जहां हर फूल एक साकार कविता का अंश प्रतीत होता है।

मैं अक्सर सोचता हूं कि सगे-संबंधियों द्वारा खतरों के खिलाफ आगाह किए जाने के बावजूद ऐसी क्या बात है कि पर्वतारोही साल दर साल पर्वतों पर चढ़ने की कड़ी चुनौती स्वीकार कर लेता है जबकि वहां गिरने का, फिसलते हिमखंडों में फंस जाने का, चट्टानों से टकरा जाने का और रस्सी के खूंटे के ढीला हो जाने का जोखिम बना रहता है। 'मुकुट पर्वत' की चढ़ाई चढ़ते हुए अपने मन में उठे विचारों की मैं चर्चा करना चाहूंगा। दिन की रोशनी में अंतिम शिविर के नीचे तिरछी चढ़ाई चढ़ते समय टूटी चट्टानों और पत्थरों की वर्षा होती रही। ये सीटी की-सी आवाज में पास से तेजी से गुजरते। इस चढ़ाई के दौरान सबेरे ग्यारह बजे मुझे एक साथी मिला जो औरों से कुछ पीछे चल रहा था। चट्टानी पत्थरों को धड़ाधड़ गिरते देख मेरे साथी ने लौट चलने का विवेकपूर्ण सुझाव दिया। लेकिन मेरी अंतरात्मा ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, शायद यह जानने-समझने के लिए कि चट्टानी वर्षा कैसी और कब-कब होती है। इधर-उधर कूदकर चट्टानी पत्थरों से बचते हुए मैंने यात्रा सुरक्षित रूप से पूरी की। लेकिन ऊपर के शिविर तक सामान ले जाने का काम पूरा किए बिना लौट आया क्योंकि दिन भी काफी ढल चुका था। उतराई में पत्थरों की बौछार झेलते हुए मैं निचले शिविर में अपने साथी से फिर मिला, शायद इस प्रक्रिया में बढ़े रक्तप्रवाह का आनंद महसूस करते हुए।

यहां यह प्रश्न उठता है कि चढ़ाई के इस विवेकहीन जोखिम को मैंने क्यों गले लगाया। इस चढ़ाई से मुझे क्या मिला। प्रकट रूप से कुछ नहीं। यहां तक कि भावी उपयोग के लिए ऊपर शिविर में सामान तक नहीं ले जा सका। फिर भी मुझे संतोष है कि मैं प्रकृति के खतरनाक तत्वों के साथ पूरा तालमेल बैठा कर चला। इसे किसी विवेकशील व्यक्ति के लिए समझना कठिन होगा। फिर भी यह मानसिकता बहुत से पर्वतारोहियों में समान रूप से मिलती है। इस मानसिकता के कारण ही गंभीर पर्वतारोही बार-बार पहाड़ पर चढ़ने का जबरदस्त जोखिम उठाता है, बावजूद इसके कि यह मनःस्थिति ही इस तरह के पर्वतारोहियों के लिए जानलेवा बन जाती है।

तपस्याः सर आर्नोल्ड जुन्न ने "एल्पाइन मिस्टिसिज़्म एंड कोल्ड फिलोसफी" में पर्वतीय रहस्यवाद और पर्वतारोहण के संबंध में लिखा था कि "पर्वतों की समझ बढ़ाने के लिए उसने तपस्या का मार्ग चुना है। पहाड़ों में और अन्यत्र भी ऊंचे प्रकार के रहस्यवादी अनुभव की कुंजी 'तपस्या' है। रस्किन द्वारा उन लोगों की आलोचना के खिलाफ उंगली उठाने की जरूरत नहीं है जिन्होंने पर्वतीय धर्मपीठों को खेलकूद के मैदानों में बदल ड़ाला है लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि उसकी आलोचना की उग्रता का कारण यह हो सकता है कि पर्वतारोहण ने उसके अपने जीवन के संबंध

में उस कठिन एवं अचिह्नित तथ्य को उजागर कर दिया होगा जो मूलत: गैर-तापसिक और आरामपसंद था।'' अक्सर ऐसा होता है कि हिमालय की ऊंचाइयों पर कड़कड़ाती ठंड झेलने वाले बौद्धभिक्षु या साधु की कठिनाइयों की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। क्या इसका कारण यह है कि हमारे यहां तपस्वी जीवन बिताने वाले हजारों साधु और भिक्षु मिल जाते हैं? तपस्या भारतीय चरित्र का स्वाभाविक गुण है। किसी गंभीर पर्वतारोही में यह गुण मूल रूप से अपेक्षित होता है। संभवत: इसीलिए भारतीय चरित्र मानसिक दृष्टि से पर्वतारोहण और तापसिक खेलों के अनुकूल होता है।

पर्वत-पूजा: शायद ही कोई पर्वतारोही पर्वत-पूजा और पर्वत-प्रेरित पूजा में भेद करता हो। क्या वे पर्वतों द्वारा प्रेरित पूजापाठ करते हैं? सर आर्नोल्ड लुन्न की दृष्टि में परवर्ती पूजा में तुक है लेकिन पूर्ववर्ती पूजा बेतुकी है। हिमालय देवताओं के नाम वाले पहाड़ों से भरा हुआ है, जैसे गौरीशंकर, स्वर्गारोहिणी, कैलाश, पार्वती पर्वत, और शिवलिंग आदि। इनसे धार्मिक लोकगाथाएं भी गहरी जुड़ी हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं कि पहाड़ों के देवी-देवता हिमालय में बसे सीधे-सादे लोगों के जीवन में रच-बस गए हैं। इसलिए मैं अक्सर सोचता हूं कि क्या अधिकतर भारतीय पर्वतारोही भी इन्हीं लोगों की तरह जीवन बसर करते हैं और पर्वतों को पूजते हैं? यह बात निश्चित है कि हिमालय क्षेत्र धार्मिक पूजा-अर्चना में इतना डूबा रहता है कि बहुत से पर्वतारोही भी यहां के कर्मकांड और धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने लगे हैं। अज्ञात का डर पर्वतारोही के अपनी क्षमता में विश्वास की कमी और पर्वतों के साथ सामंजस्य से काम करने की योग्यता के अभाव के कारण वह इन तिनकों का सहारा ले बैठता है।

असल में पर्वतारोहण ही एकमात्र ऐसा खेल है जिसमें इसके शैकीनों न धर्म का विकल्प ढूंढ़ने का प्रयास किया है। सर लेसली स्टीफन 'एन एगनास्टिक्स अपोलोजी' लिखने से पहले एक एंग्लिकन पादरी थे। वे एकमात्र ऐसे पर्वतारोही नहीं थे जिसमें पर्वतों ने पूजा का वैसा हलका भाव उत्पन्न कर दिया, जैसा धार्मिक पूजाभाव से पैदा होता है, और जिस पर उन्होंने विश्वास करना छोड़ दिया था। पर्वतों में उन्होंने पाया कि पर्वतों की आवाज रहस्यमय है और संभव है कुछ व्याख्याता इससे असहमत हों। लेकिन कम से कम मुझसे तो ये पर्वत इतनी कोमल और अचम्भित करने वाली भाषा में बाते करते हैं जो किसी भी मानव शिक्षक के लिए संभव नहीं है।'' लेसली स्टीफन के प्रभाव में आकर आर्नोल्डि लुन्न ने स्कूली दिनों में ईसाई धर्म नकार दिया और भौतिकवाद को अंगीकार किया। उन्होंने घोषणा की कि वे एक बुद्धिवादी बन गए थे और 19 वर्ष का होते-होते वे नास्तिक नहीं तो अज्ञेयवादी जरूर बन गए थे। परन्तु पर्वतों की मनमोहक दृश्यावली ने उन्हें यकीन दिला दिया कि चार्ल्स डारविन जैसे उत्पत्ति के विशुद्ध भौतिकवादी सिद्धांत से हमारे सौंदर्य-बोध के मूल का हल्का भी संबंध नहीं था।

फाइलो का कहना है कि समग्र प्रकृति अपने में एक ऐसी भाषा है जिसके जरिए ईश्वर अपने विचार प्रकट करते हैं, लेकिन विचार भाषा से अधिक महत्व रखते हैं।

इस तरह पर्वत किसी अन्य यथार्थ का प्रतीक या चित्र हो सकते हैं लेकिन अगर चित्रों की इस तरह पूजा की जाए कि उन्हें ही यथार्थ मान लिया जाए तो यह सही माने में मूर्ति-पूजा ही होगी। पर्वतों के धर्म में विश्वास रखने वाले सभी लोगों को पर्वत-पूजा के इस आरोप से अपने को बचाने के लिए तैयार रहना होगा। क्या हम विश्वास करते हैं कि नंदादेवी-पर्वत एक देवी है या प्रभु की रचना है?

इसी दलील को आगे बढ़ाते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पर्वत-सौंदर्य की अभिव्यक्ति पर धर्म का रंग नहीं चढ़ाना चाहिए। सच्चा पर्वतारोही पर्वत-सौंदर्य को विशुद्ध रहस्यवाद मानता है।

कठिनाइयों के बावजूद युवाओं में पर्वतारोहण का जोश बढ़ता जा रहा है

उपस्थिति

कितने पर्वतारोही होंगे जो आर.एल.जी. इरविग के इस कथन से सहमत होंगे कि ''वर्ष दर वर्ष उनका यह विश्वास बढ़ता

जाता है कि वे स्वयं और उनका परिवेश किसी अदृश्य शक्ति की कृपा पर निर्भर है।'' क्या यही रहस्योद्घाटन विली अनसोइल्ड को उस समय हुआ जब 1963 में एवरेस्ट की चढ़ाई से पहले उन्होंने पहली बार नंदा देवी पर नजर डाली? कई वर्ष बाद वे अपनी पुत्री के साथ नंदा देवी की चढ़ाई के लिए फिर लौटे और उन्होंने अपनी पुत्री का नाम उस पर्वत के नाम पर ही रखा।

ऊंचाई पर तनाव-दबाव में आकर बहुत से पर्वतारोही यह महसूस करते हैं कि उनका कोई साथी-संगी है जबकि ऐसा कोई साथी वहां नहीं होता। एवरेस्ट के ऊंचे ढलानों पर दर्ज किए गए ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। 18 वर्ष पहले 6,150 मीटर ऊंचे भागीरथी-शिखर पर चढ़ाई के बाद हुई दुर्घटना का अनुभव मुझे याद आता है। शिखर से उतरते समय मेरा एक साथी रस्सी पर फिसल गया। उसने मुझे और मेरे एक अन्य साथी को भी नीचे घसीट लिया और इस गिरने को हम रोक नहीं पाए। परिणाम यह हुआ कि मुझे पूरी रात खुले में 20,000 फुट की ऊंचाई पर बैठ कर बितानी पड़ी। मुझे भयंकर चोट लगी थी, मेरे पास न कुल्हाड़ी थी, न कांटा, और न कपड़े। मेरा एक साथी मर गया था और दूसरा मर रहा था। ठिठुरते हुए और पैर पटकते हुए मैंने सहायता दल को ऊंची आवाज में बुलाया लेकिन वह मेरे पास नहीं पहुंच सका। तब मैंने अपने जीवित साथी के मनोबल को बनाए रखने की कोशिश की। रात भर और बचाव दल द्वारा अगले सवेरे ढूंढ निकाले जाने तक मुझे लगा कि कोई प्राणी मेरे साथ है। मैं उससे बातें करता रहा और वह मुझसे जीवित रहने की कोशिशों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह करता रहा जो कि मैं बराबर कर रहा था। वह कोई भूत जैसा नहीं बल्कि साथी जैसा दिखाई दे रहा था। मुझे उसकी मौजूदगी का एहसास हो रहा था। यह एहसास तब समाप्त हो गया जब मेरी नजर बचाव दल पर पड़ी। मुझे निश्चित रूप से मालूम नहीं कि यह चीज या घटना क्या थी। क्या यह मेरे थके मन की भ्रांति थी? अगर ऐसा था भी तो इसने मुझ पर सकारात्मक प्रभाव डाला। या यह उससे अधिक कुछ था? शायद तनाव-दबाव में मेरे साथ एक लोकोत्तर आयाम जुड़ गया था।

काले शिखर पर चढ़ाई

जब पुलिस बल में मेरे साथियों को पता चला कि मैं पंजाब पुलिस एडवेंचर स्पोर्ट्स क्लब के पहले पर्वतारोहण अभियान की शुरुआत कर रहा हूं तो कुछ लोगों ने चिंतित स्वर में पूछा कि क्या दल में आप अकेले पर्वतारोही होंगे। यह क्लब एक वर्ष पहले स्थापित किया गया था और मैं इसका संस्थापक अध्यक्ष था। उनकी यह पूछताछ उचित ही थी क्योंकि भारतीय पुलिस बल में पर्वतारोहण खेल जोर नहीं पकड़ पाया था। उनका शंका-निवारण करते हुए मैंने उन्हें बताया कि मैंने कुछ सिपाहियों को मूल और उन्नत पाठ्यक्रम के लिए प्रोत्साहित किया था। इन्होंने ही अनुनय-विनय कर मुझे यह हल्का प्रयास करने को कहा ताकि पर्वतारोहण-शिक्षा के कुछ अवसर उन्हें उपलब्ध हो सकें। चढ़ाई के लिए मैंने टांस घाटी में 'कालानाग' को चुना। वहां पंजाब से, जहां मैं तैनात हूं, आसानी से पहुंचा जा सकता था। साथ ही 30 वर्ष पहले शिखर की ढलानों को देखने के बाद से उस पर चढ़ने की कसमसाहट बनी हुई थी। 1955 में जैक गिब्सन की पहली चढ़ाई के बाद इस शिखर को कई बार सर किया जा चुका था। तो भी यह सोचा गया कि नए पर्वतारोहियों को इससे काफी कुछ सीखने को मिलेगा। हालांकि यह पर्वत अनेक खाइयों और दरारों के लिए ख्यातिप्राप्त था और इसका मुझे बाद में अनुभव भी हुआ फिर भी इसके लिए यह प्रियोक्ति प्रचलित थी कि इस शिखर पर चढ़ना सुरक्षित है।

चढ़ाई के लिए मैंने टांस घाटी में 'कालानाग' को चुना। वहां पंजाब से, जहां मैं तैनात हूं, आसानी से पहुंचा जा सकता था। साथ ही 30 वर्ष पहले शिखर की ढलानों को देखने के बाद से उस पर चढ़ने की कसमसाहट बनी हुई थी।

सिपाहियों का विनम्र निवेदन मान लेने के बाद समयाभाव और कचहरियों में पेशियों की तारीखें बदलवाकर मैं चंडीगढ़ से दो सप्ताह के भीतर एक टोली रवाना करने की तैयारी में पूरे मनोयोग से जुट गया। पर्वतारोहण के लिए ऐसे समय जमकर तैयारी करना हमेशा ही आवश्यक रहता है। जॉन बनयन ने अपनी प्रतीक कथा 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' में जिस मन:स्थिति को 'अवसाद के दलदल' का नाम दिया है, उसे पार करने के बाद पांच जून 2001 को हमारी टोली संकरी में सड़क के सिरे पर पहुंच गई थी। मैंने अनुभवी कुली-एजेंट को तथा टोली के प्रबंधक और उपनेता विनोद से पहले ही कह दिया था कि वे मुझे परिवहन समस्याओं को लेकर परेशान न करें, और मुझे और मेरे पांच सिपाहियों की पर्वतारोही टोली को चढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने दें और आसपास की अनेक घाटियों पर चढ़ कर जाने में सहयोग दें।

जैक गिब्सन के परिदृश्य में बंदरपुंच हिम नदी के दक्षिण में विभिन्न स्की घाटियों और 'टूथेक (दांत-दर्द) घाटी, उत्तर में यमनोत्री दर्रे का पारपथ और 'हरकीदून' में स्वर्गरोहिणी के प्रक्षिप्त भाग का पारपथ

शामिल था। इससे पहले भी कुछ अवसरों पर मैंने इन दो पारपथों को तय किया था। इसके अलावा वहां हरसिल को जाने वाले धूमदार कंडी दर्रे सहित 'स्वर्गरोहिणी' के शिखरों और दर्रों की एक बड़ी महराब, पश्चिमी बंदरपुंच हिमनदी की निमंत्रणकारी खोज तथा 6102 मीटर ऊंचे सफेद शिखर या बंदरपुंच की चढ़ाई भी मौजूद थी। 1978 में उत्तर-पश्चिम में 6316 मीटर ऊंचे बंदरपुंच पर चढ़ते हुए मैंने इस सफेद शिखर को देखा था। 5,984 मीटर यानी 19,633 फुट ऊंची और पहले सर न की हुई चोटी स्वर्गरोहिणी-V और 5845 मीटर यानी 19,177 फुट ऊंची चोटी स्वर्गरोहिणी-VI पर भविष्य में चढ़ने के लिए रुइनसरा गाद के उत्तर में स्वर्गरोहिणी शिखरों को देखने के आकर्षण के कारण भी मेरा मन मचल उठा। लेकिन जिसे मैं जरूरी समझता था, उसे मैंने यूं ही छोड़ दिया। छोड़ा भी उस क्षेत्र में जिसका सर्वोत्तम उल्लेख सर लेसली स्टीफन ने 'द प्लेग्राउंड आफ यूरोप-1870' में इन शब्दों में किया था : ''वन-क्षेत्र और बर्फ-क्षेत्र के बीच काव्यात्मकता से परिपूर्ण पर्वत क्षेत्र हैं। वहां ऊपर चढ़ते हुए आप महसूस करते हैं कि दुनिया की चिंताओं का गट्ठर आपके कंधों से उतर गया है और आप अंततः विषाद के दलदल को पार कर गए हैं (बनयन)। वहां आरंभिक महीनों में आप घुटनों तक फूलों के बीच होकर गुजरते हैं, और इनमें से प्रत्येक फूल एक साकार कविता का अंग प्रतीत होता है।''

काले शिखर पर चढ़ने के बाद झील में रुइनसर ताल गया, जिसे विक्रम सेठ ने स्वर्गिक झील से उतरा बताया है। वहां चारों तरफ कई एकड़ इलाके में सफेद, बैंगनी और पीले एनेमोन फूलों की छटा बिखरी थी। वहां और भी फूल थे जिनकी पहचान मैंने नरी धामी के सहयोग से की और जिनका उल्लेख मैं यहां करना चाहूंगा। ये फूल थे: बिस्टोर्टा, हेकेलिया यूनीकाटा, प्राइमुला इन्वोलूक्राटा, प्राइमुला मैक्रोफिला, म्योरोटिस, अल्पेस्टस (अल्पाइन मुझे-भूलो-नहीं), एलियम ह्यूमिब (बासंती प्याज), जेरेनियम, काटन ईस्टर थाइमस, बटरकप रनुकुलस, पेडुकुलारिस (लाउसवोर्ट), लिलियम नानुम, डक्टाइलोरिजा, हटजिविया, लिलियम पेंटुलम, ब्लैक पी, थर्मोप्सिस बरबाटा, एनेमोन, हिमालयी पीओनी-पाइनीया, इमोडी (बैंगनी और सफेद) और ब्रायर थेच'। इनके रंगों की छटा मेरे वाकमैन के बीथोवन संगीत से पुलकायमान हो उठी। मैं वहां एक दिन और एक रात ठहरा। बीच में चाय के समय बंबई से आई हुई उन दो नाटी युवतियों की मेजबानी की जो बाली दर्रे के लिए जाती हुई झील के दूसरी तरफ ठहरी हुई थीं।

अब पर्वतारोहण की बात पर लौटें। टांस का मार्ग मैपिल, बलून, स्प्रूस के पनझड़ी-शंक्रधारी जंगलों के बीच से होकर जाता था और तालुक के पास खूबानी वृक्षों के नीचे के क्षण आनंददायक थे। पकड़ में न आने वाले पर्वतीय पक्षियों के आह्लादकारी स्वरों से तन की सुस्ती उड़नछू हो जाती और हिमालयी पाई, कठफोड़वा और रेडस्टार्ट पक्षियों को देखने का सौभाग्य मिलता। अगला पड़ाव ओशला था। इसके बाद हम शादूलों और देवदार वृक्षों के वन से गुजरे। वहां भी पक्षियों की आंखमिचौनी का खेल चलता रहा। हमने नदी के किनारे सफेद टोपीधारी और सीसे के रंग के रैडस्टार्ट पक्षी तथा कस्तूरिकाएं देखीं। देवसू बुगियाल में टांस और रुइनसर नदियों का संगम है। वहां हमें काले शिखर की पहली झलक मिली। शिखर शंकु सांप के सिर से मिलता-जुलता होने के कारण 'कालानाग' कहलाता था। यह स्थान स्वर्गिक रुइनसर ताल में हमारे शिविर से 18 किलोमीटर दूर था। इसके कुछ ऊपर कुलियों की इतनी भीड़ थी कि आप एकांत का मजा नहीं ले सकते थे। लेकिन मैं लौटते हुए इन लोगों के बिना यहां पड़ाव डाल सका था। इसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं।

आधार-शिविर कियारकोटी में 4,415 मीटर ऊंचाई पर घास के बड़े मैदान में 8 जून तक बनाया जा चुका था। इस मैदान में स्वर्गरोहिणी-I के ढालों से पानी निरंतर आता रहता है। यहां से कुली लौट गए और हम कालानाग, स्वर्गरोहिणी, बंदरपुंच हिमनदी और धूमधार कांडी दर्रे का नजारा देखने में सफल हुए। हालांकि वर्ष के इस कालखंड में गढ़वाल का मौसम सामान्य रहता है तो भी शाम को वहां बौछारें पड़ी और ऊपरी इलाकों में हल्की बर्फ भी गिरी। इस आधार-शिविर का रास्ता इसलिए भी याद रहेगा कि वहां तरह-तरह के मनभावन फूलों का रंग बिखरा हुआ था।

रेडियो द्वारा मानसून के एक सप्ताह पहले ही आ जाने की भविष्यवाणी किए जाने पर ऊंचाई पर गए गाइड ने मुझ पर दबाव डाला कि मैं जलवायु के अनुकूल अपने को ढालने का कार्यक्रम छोड़कर जल्द से जल्द अपने मुख्य उद्देश्य के लिए काम करूं। मुझे लगता है कि इस दबाव के पीछे चढ़ाई चढ़ने वाले दल में घर लौटने की ललक थी।

अगले दिन हमने घास वाली ढलानों, दो नालों और कंकरियों की फिसलन-भरी ढलान पर से सामान ले जाकर 5,050 मीटर यानी 16,534 फुट की ऊंचाई पर 'धारोधारी चरागाह' में आगे का आधार-शिविर स्थापित किया। वह दिन इसलिए अच्छा रहा कि हमें कम-से-कम पंद्रह-पंद्रह के झुंड में भरल दिखाई दिए। इन्हें हिमालय की 'नीली भेड़' भी कहा जाता है लेकिन अफसोस यह रहा कि मैं अपना कैमरा पीछे छोड़ आया था। खलल पड़ने पर आराम कर रहे मोनल ने शोर मचाते हुए विरोध प्रकट किया। उसने बुरा न माना होता अगर उसने यह समझ लिया होता कि हम तो धातु जैसे

चमकते हरे सिर और कलाठी वाली उसकी साथिन की झलक पाना चाहते हैं। तभी हमने उसे पहाड़ के पार्श्व से उड़कर जाते देखा।

10 जून को पर्वतारोही टोली साफ मौसम में ऊपर चढ़ते हुए एबीसी पर पहुंच गई। वहां जोर का शोर मचाते हुए मोनल का फिर सामना हुआ। घोंसले में अपने आराम में खलल पड़ने का उसने बहुत विरोध किया। हमारे कुछ पर्वतारोहियों ने शिविर से पहले भरल के दो बड़े झुंडों में से एक झुंड को देखा। शिविर से हम पर्वतशृंखला की सभी चोटियों का और दाईं तरफ नीचे बहती हिमनदी देखने का भरपूर आनंद ले सके।

अगले दो दिन हमने शिखर के ऊपर की ऊंचाइयों के मौसम के अनुकूल अपने को ढालने, नीचे लुढकने-फिसलने, सामान को कालानाग हिमनदी तक ले जाने और उसे 5,500 मीटर की ऊंचाई पर बर्फ से ढके मैदान पर उतार फेंकने में लगाए। वहां से बरसुखा, पीतदंत और छोटानाग तथा स्वर्गरोहिणी की कुछ चोटियां देखी जा सकती थीं। मौसम अनिश्चित था और हिमपात अधिक समय तक होता रहा। इससे पर्वत पर चढ़ना काफी कठिन हो गया।

5,700 मीटर यानी 18,500 फुट की ऊंचाई पर शिविर-एक (चढ़ाई शिविर-एक) पर हम अंततः 13 जून को पहुंचे। यह शिविर कालानाग प्रपात के पास बर्फीले टीले पर स्थापित था। इसके बाद मौसम खराब हो गया और तीन रात हमें इसे झेलते रहने को मजबूर होना पड़ा। इस दौरान खाद्य सामग्री और आहार कम होता जा रहा था। इस अवधि में मैंने पढ़ा कि कैसे कुत्तों और बिल्लियों सान्निध्य से दमा हो जाता है। एल्डस हक्सले की पुस्तक 'द ब्रेव न्यू वर्ल्ड' और नायिका लेनिना के बारे में पढ़ा। इस दौरान पत्र भी लिखे, डायरी में भी अपने विचार लिखे आस-पास के दृश्यों के चित्र बनाए और हल्के से दस्तों का इलाज भी किया। सबको लगा कि हमारा विश्राम पूर्वनिश्चित था।

15 जून को सारी रसद समाप्त हो गई और अगर अगले दिन मौसम खराब रहता तो हमें नीचे उतरना पड़ता क्योंकि एक और चढ़ाई के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री मिलना अनिश्चित था। निर्णय करने में देरी का लाभ हुआ क्योंकि शाम तक मौसम सुधर गया और बाहर झांकने/निकलने का अवसर मिल गया। बर्फ भी इतनी पड़ी कि शिखर पर चढ़ने की परिस्थिति अनुकूल जान पड़ी।

पीछे मुड़कर देखते हैं तो यह उल्लेख करना जरूरी लगता है कि यह क्षेत्र, विशेष रूप से बंदरपुंच हिमनदी और रुईंसर के आसपास का इलाका हिमालय के पर्वतारोहियों के लिए श्रेष्ठ स्थल हैं। प्राकृतिक इतिहास का सैद्धांतिक और व्यावहारिक पाठ पढ़ाने के साथ-साथ रुईंसर गाद के दोनों तरफ की घाटियां और बेहड़ स्कीइंग और चट्टानी चढ़ाई का अच्छा आधार प्रदान करते हैं।

शिखर-दिवस (16 जून)

जल्दी रवाना होने से पहले की तैयारी हमने शेष बचे चावल, दाल, कुछ पोषक और गरमागरम चीजों के खान-पान से आरंभ की। चढ़ाई करने वाले छह सदस्य अर्थात स्वयं मैं, कसी कदकाठी वाली उत्तरांचली लड़की नारी धामी, कुलविंदर कुमार, मोहन लाल, गुरबचन सिंह, दौलत नेगी और ऊंची चढ़ाई के दो सहायक भगत सिंह रावत और चंदन सिंह आधी रात के कुछ ही बाद रवाना हुए। मुझे याद है तब बहुत ठंड नहीं थी। हवा भी ठहरी हुई थी। जैसे ही हम ऊपर चढ़ने लगे, हल्की बर्फ पड़ने लगी। तभी ओर्चों से मार्ग जगमगा उठा। हम गेरूर और कालानाग के बीच घाटी की ओर हिमदरारों के बीच से रास्ता निकालते हुए आगे बढ़ते गए। नारी, कुलविंदर, भगत सिंह और चंदन एक रस्सी पर थे जबकि मोहनलाल, गुरुबचन, दौलत और मैं दूसरी रस्सी पर थे। नारी अपनी रस्सी से बढ़ रही थी। इस महिला ने चोटी तक का सारा मार्ग बर्फ की नरम परत से लांघते हुए तय किया था जो अविश्वसनीय लगता है। जहां तक मेरी रस्सी का संबंध है, मोहन और मैं बारी-बारी से अगुवाई करते। मेरा आग्रह था कि सारी चढ़ाई तक सभी पर्वतारोही रस्सी से बंधे रहें।

जब हम ऊपर चढ़ रहे थे, हममें उदासीनता की भावना व्याप्त थी। मेरी सलाह में इसका कारण वायु का न होना और बर्फ गिरने में कमी थी। सूर्योदय के समय मेरी रस्सी लगभग घाटी के ऊपर थी जबकि नारी और अन्य लोग आगे निकल गए थे। तब तक हिमपात समाप्त हो गया था। हालांकि हमारे चारों ओर बादल ही बादल थे, फिर भी बाकी चढ़ाई में कोई बर्फ नहीं पड़ी क्योंकि वातावरण बर्फ के अनुकूल नहीं था। कांटों-कीलों के बाहर निकलने और मांस की गांठ बन जाने के कारण चढ़ाई में कठिनाई हुई। यह दिक्कत तब तक चलती रही जब तक मैंने अपना कांटा निकाल नहीं लिया।

19,500 फुट की ऊंचाई पर हम कुछ विश्राम के लिए रुके। वहां से हम बंदरपुंच की उत्तरी ढलानों और इसकी छोटी पश्चिमी चोटी, स्वर्गरोहिणी, छोटा नाग, और यहां तक कि अपने यिरकोटी आधार-शिविर को देख सकते थे। आधार-शिविर पर बेसब्री से

प्रतीक्षा कर रहे लोगों से अक्सर वाकी-टाकी से बातचीत होती रहती थी। अब चढ़ाई कुल मिलाकर लंबी और 30 से 45 डिग्री की आसान ढाल पर थी लेकिन वह नरम बर्फ के कारण बहुत थकाने वाली थी। अंतिम शिखर की ढलानें बहुत लंबी दिखाई देती थीं। मेरी बेचैनी इसलिए और बढ़ गई कि शिखर पिरमिड के आधार-क्षेत्र में मैं प्रछन्न हिमदरार में गिर गया। बिना कील कांटों के मैं सब तरफ पड़ी बर्फ के बीच अंधेरे में भटकने लगा। मेरे लड़खड़ाते शरीर के साथ जरा भी स्पर्श होने से बर्फ टूटकर गिरने लगती।

अपने सुरक्षा साजोसामान और नीचे दरार में औरों द्वारा लटकाई गई रस्सी के सहारे तीसरे पहर साढ़े तीन बजे मैं अपने थके बदन को दरार के बाहर निकाल सका। वहां अन्य सब हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। यह लंबी चढ़ाई थी। कम बर्फ पड़ने के कारण हम सभी आठों व्यक्ति शिखर पर पहुंच गए। हालांकि सब तरफ बादल ही बादल थे, हमारे चित्रों में शिखर-आधार और चोटी पर की छजली साफ दिखाई देती है। धार्मिक अनुष्ठानों की अध्यक्षता नारी ने की। हमने आधार-शिविर पर पैदल पहुंचे यात्रियों से बातचीत की और नीचे उतरने से पहले उनके धन्यवाद-ज्ञापन संदेशों को स्वीकार किया। मैंने शिविर में सबसे अंत में प्रवेश किया। मैं इस बात से संतुष्ट था कि एक ही दिन में 16 घंटे चलने के बावजूद सभी सुरक्षित वापस पहुंच गए हैं। एक बार तो नारी उस समय चिंतित दिखाई दी जब मुझे अपने सामने के मार्ग का मतिभ्रम हो गया और मैं कह उठा कि लोक निर्माण विभाग के सड़क बनाने वाले लोग हमारे यहां आ धमके हैं।

यहां यह बता देना आवश्यक है कि चढ़ाई चढ़ने वाले सदस्यों की औसत आयु 31 वर्ष थी। जहां तक मेरा संबंध है, अगर घुटनों कोही ध्यान में रखा जाए तो 48 वर्ष की आयु में पहाड़ से नीचे उतरने में मुझे अपना समय लेने का हक था। इसके अलावा शिखर पर चढ़ने में काफी समय लगा। 2,260 फुट की सीधी ऊंचाई किसी महिला के लिए एक ही दिन में सामान्य रूप से पार कर लेना कोई आसान काम नहीं है। 17 जून को सभी पर्वतारोही थक कर चूर हो गए थे। उनके पास न तो कोई खाना और न कोई राशन था। इतना ही नहीं, चढ़ाई-शिविर पर गैस समाप्त हो गई थी। इसलिए जल्द से जल्द नीचे जाने के सिवाए कोई चारा नहीं था। शिविर खाली कर दिया गया और हम 39 घंटों में पहली बार ठीक से भोजन करने के लिए ए बी सी तक नीचे उतरे। यह शिविर भी तोड़ दिया गया और उसी शाम हम निचले आधार-शिविर के लिए रवाना हो गए। वहां हमने पाया कि विनोद, रमेश और प्रेम की पदयात्री टोली 'हरकीदून' के लिए पैदल जा चुकी है ताकि हम मौसमी सैर-सपाटे का वह कार्यक्रम पूरा कर सकें।

पीछे मुड़कर देखते हैं तो यह उल्लेख करना जरूरी लगता है कि यह क्षेत्र, विशेष रूप से बंदरपुंच हिमनदी और रुईंसर के आसपास का इलाका हिमालय के पर्वतारोहियों के लिए श्रेष्ठ स्थल हैं। प्राकृतिक इतिहास का सैद्धांतिक और व्यावहारिक पाठ पढ़ाने के साथ-साथ रुईंसर गाद के दोनों तरफ की घाटियां और बेहड़ स्कींइग और चट्टानी चढ़ाई का अच्छा आधार प्रदान करते हैं। गौरव-गाथा बने जैक गिब्सन द्वारा अर्द्ध-शताब्दि पहले आरंभ किए गए अध्ययन और अभ्यासों के बाद इस क्षेत्र का उपयोग इन्हीं कामों के लिए किया जाता रहा है। मुझे भी भारतीय सैन्य अकादमी के उन कैडेटों को देखने का मौका मिला जो काले शिखर की चढ़ाई पूर्व परीक्षणों के दौर से गुजर रहे थे। आखिर हिमालय में इस तरह के क्षेत्र तो गिने-चुने ही हैं जहां युवा पर्वतारोही शिखरों को आसानी से सर कर सकते हैं। ❑

(भारतीय पुलिस सेवा के डा. पी.एम. दास पटियाला (पंजाब) की इंडिया रिज़र्व बटालियन में इंस्पेक्टर-जेनेरल हैं।)

पाठकों से

योजना सम्पादक मंडल का प्रयास रहता है कि समसामयिक एवं महत्वपूर्ण आर्थिक, सामाजिक एवं विकासपरक मुद्दों पर सारगर्भित लेखों के माध्यम से अधुनातम जानकारी पाठकों तक पहुंचाई जाए। प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं नियमित रूप से प्राप्त होती रहें तो हमारे इन प्रयासों में गति आ सकती है। अत: आपसे अनुरोध है कि अपने विचार, टिप्पणियों एवं सुझाव हमें निरन्तर भेजते रहें ताकि पत्रिका को आपकी रुचि के अनुरूप अधिक उपयोगी, रुचिकर एवं आकर्षक बनाने में हमें सहयोग मिले और हमारा उत्साहवर्धन हो।

कैरियर प्लस क्यों?

·IAS · PCS · IES · IFS ·

★ क्योंकि छः वर्षों के अथक परिश्रम से हमने सफलता दिलाने की विशिष्ट तकनीकें विकसित की हैं यथा व्यावसायिक दृष्टिकोण, सहकारी, समूहवादी एवं अंतर्क्रियात्मक वातावरण जहाँ प्रबंधन एवं अध्यापकगण आपसे सकारात्मक एवं भावनात्मक जुड़ाव रखते हुए आपके सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध और जागरुक हैं तथा अध्ययन के मध्य सीखने व जानने की आपकी मानसिक प्रक्रिया के साथ लयात्मक और लचीला रुख अपनाकर एक रचनात्मक वातावरण में आपकी सफलता के लिए तत्पर हैं.

★ क्योंकि हमारे पास हैं चालीस से अधिक विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ, जिनकी प्रतिभा और योग्यता - बहुचर्चित है, जिसका प्रमाण है, हमारे 200 से अधिक वे छात्र जिन्होंने देश की सर्वश्रेष्ठ सेवाओं यथा भारतीय सिविल सेवा, भारतीय वन सेवा एवं भारतीय इंजी. सेवा की लिखित परीक्षा में इस वर्ष सफलता पायी है.

★ क्योंकि सामान्य रुप से उपलब्ध मानविकी विषयों- लोक प्रशासन, राजनीतिविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, सामान्यअध्ययन, निबन्ध के साथ ही हम अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्ध, संस्कृत "साहित्य" व अंग्रेजी "साहित्य" जैसे अन्यत्र अनुपलब्ध विषयों में भी श्रेष्ठ मार्गदर्शन उपलब्ध कराते हैं.

★ क्योंकि प्रमुख विज्ञान विषयों यथा : भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, गणित, जन्तुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, कृषि विज्ञान तथा प्रमुख इंजीनियरिंग विषयों यथा सिविल इंजी., मैकेनिकल इंजी., इलैक्ट्रिकल इंजी., ई एंड टी इंजी. व कम्प्यूटर इंजी. में मार्गदर्शन हेतु भारत का एकमात्र विश्वसनीय संस्थान है.

★ क्योंकि यह संस्थान अपनी शिक्षा-पद्धति में अध्ययन सामग्री, कक्षा नोट्स, निरंतर टैस्ट की व्यवस्था तो करता ही है साथ ही अध्ययन की सुविधा हेतु कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर आदि का नियमित प्रयोग किया जाता है संस्थान दोनों केन्द्रों पर छात्रावास, पुस्तकालय व वाचनालय, पूर्णतः वातानुकूलित कक्षाऐं, शांत एवं स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराता है.

★ क्योंकि यह एकमात्र संस्थान है जहां सिविल सेवा के साथ ही वन सेवा, इंजीनीयरिंग सेवा, CSIR/UGC-NET, GATE की तैयारी भी सफलतापूर्वक करायी जाती है.

★ क्योंकि यह दिल्ली का अपनी तरह का सबसे बड़ा, सबसे विस्तृत, सबसे सफल एवं सबसे ज्यादा विविध कक्षाऐं देने वाला संस्थान है.

★ क्योंकि नियमित कक्षाओं में नहीं आ सकने वाले छात्रों के लिए हमारे पास, उपलब्ध सभी विषयों में पत्राचार पाठ्यक्रम हैं (मनोविज्ञान, राजनीतिविज्ञान, प्रबन्ध, अंग्रेजी 'साहित्य' व कम्प्यूटर विज्ञान के अतिरिक्त)।

पत्राचार शुल्क - मुख्य परीक्षाः (कला) रू 2000/-, (विज्ञान) रू 2500/-
प्रारम्भिक परीक्षाः रू 1500/-, (इंजि.) विषय : रू 3000/-

फाउण्डेशन कोर्स 2003 एवं मुख्य परीक्षा कोर्स 2002
◦ प्रत्येक माह 10 एवं 25 तारीख से प्रारम्भ

क्योंकि सफलता यहाँ परम्परा है।

हमारे IAS-IES में वर्ष 2001-02 के सफल प्रत्याशियों को बधाई

मनीष रंजन - चौथा स्थान

नितीश झा - दसवां स्थान
(रसायन विज्ञान, सामन्य अध्ययन)

कृष्ण गर्ग - ग्यारवां स्थान
(प्राणी विज्ञान, सामन्य अध्ययन)

वर्ष 2001 में IAS में कुल 46 चयन

Selection in I. ENGG..S. 2001

सिविल इंजी.- हरि सिमरण-11, अक्षय कुमार-16, प्रशांत अग्रवाल-27, मनु मित्तल-32, ओम प्रकाश-54, मनोज कमार. -73, ज्योती तंवर-83, शैलेश कुमार-92, ए.के. यादव-103, सी. शेखर-113, एम.के. मीना-130, अब्दुल बासित-135, विजय कुमार-142, सी.आर.मीना-155, के.के.मीना-158, मिलन कुमार सिंह-168, प्रदीप कुमार-172

मैकेनिकल इंजी.- पी.के. गुप्ता-18, मोहम्मद शैफ-27, ए. के. तिवारी-35, राजीव-48, उत्पल श्रीवास्तव-66, इंदल कुमार पंकज-78, रामेश्वर-117

इलैक्ट्रिकल इंजी- सौरभ मिश्रा-4, विकास त्रिपाठी-6, रामनिवास-117, ए.के.आर्य-31, कोशलेष सिंह-40, विपिन पाल-46, नितिन कुमार-67

ईएण्डटी इंजी- राजेश कु. 24, आर.पी. मोर्या-53, जय प्रकाश-56, ऋतुराज बसंत-61, अशोक कुमार, जय प्रकाश मीना इत्यादि

Selection in I. F. S. 2001

संजीव चर्तुवेदी (भौतिकी, रसायन)	- दूसरा	अ. सोनीबाला देवी (वनस्पति, प्राणी)	-पन्द्रवां
राजीव चर्तुवेदी (भौतिकी, रसायन)	- सातवां	एस.राकेश कुमार (वनस्पति, कृषि)	-सोलवां
सुशान्त पटनायक (भौतिकी, रसायन)	- दसवां	नगासंग लुकिहम (प्राणि, वनस्पति)	-सताईसवा
अशोक प्रताप सिंह (कृषि, वनस्पति)	- ग्यारवां	एस.पी. आनन्ध कुमार (वनस्पति, कृषि)	-उन्नतीसवां

उत्तरी दिल्ली शाखा :
302/37,38,39,
अंसल बिल्डिंग, कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स,
नजदीक बत्रा सिनेमा
डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन : 7652829, 7654588

-कैरियर प्लस-

दक्षिणी दिल्ली शाखा :
28बी/4, जिया सराय,
नजदीक IIT मेन गेट, हौज खास,
नई दिल्ली-110016
फोनः 6527448, 6563175

अधिक जानकारी के लिए रू० 50/- का मनीआर्डर या डी.डी भेजें अथवा सम्पर्क करें

ई-मेलःcareerplus@rediffmail.com वेबसाइटः www.careerplusias.com

भारत के सर्वाधिक लुभावने समुद्र तट

○ मनोहर पुरी

समुद्र का भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और अर्थ के क्षेत्र में विशेष स्थान रहा है। रत्नाकार के रूप में सागर भारत भूमि को अनादि काल से धन-धान्य से समृद्ध करते रहे हैं। सदियों से हमारे पर्यावरण की रक्षा भी इन्हीं से होती रही है। जहां तक पर्यटन की दृष्टि से समुद्र और समुद्र-तटों के विकास की बात है वह अपेक्षाकृत नई सोच है। पिछले कुछ ही वर्षों से हमने इस दिशा में सोचना प्रारंभ किया है।

जिधर दृष्टि उठाएं, चारों ओर गहरी नीली जल राशि का ही साम्राज्य हो; नीले पानी के अंतिम छोर से उगता अथवा उसमें डूबता लालिमायुक्त सूर्य हो तो कौन ऐसे दृश्य के स्वामी, समुद्र के मोहपाश में स्वयं ही बंधने के लिए लालायित नहीं हो जाएगा। आज देश-विदेश की पर्यटक कंपनियां समुद्री सैर के इसी पक्ष का प्रचार करके सैलानियों को लंबी-लंबी समुद्री यात्राओं की ओर आकर्षित कर रही हैं। बड़े-बड़े जलयानों पर ऐसी यात्राओं अर्थात 'क्रूज' का आकर्षण भारतीय पर्यटकों में भी तेजी से बढ़ रहा है। वैसे व्यापार के लिए लंबी एवं कठिन समुद्री यात्राएं करना और समुद्र के सुनहरे और लुभावने तटों पर मनोरंजन के लिए सैर-सपाटा करना भारतीयों के लिए कोई नई बात नहीं है। आज तक भारतीय समुद्र को वरुण देवता मान कर उसका आदर करते हैं। फलत: समुद्री तटों के रखरखाव का वे निरंतर ध्यान रखते हैं। भारतीय नतमस्तक हो समुद्र तटों पर फूल और नारियल अर्पित करते रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार हम समुद्र तटों पर फूल और नारियल अर्पित करते रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार हम समुद्र से उतना ही मांगते आए हैं जितने से हमारा निर्वाह हो जाए। अपने स्वार्थ के लिए हमारे पूर्वजों ने समुद्र का शोषण कभी नहीं किया। इन दिनों भौतिकता का अंधी दौड़ में न तो उनके प्रति श्रद्धा शेख है और न ही पर्यावरण की चिंता।

सदियों से सागर भारत की जन-आस्थाओं के पूरे परिवेश के साथ जुड़े रहे हैं। समुद्र का भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और अर्थ के क्षेत्र में विशेष स्थान रहा है। रत्नाकार के रूप में सागर भारत भूमि को अनादि काल से धन-धान्य से समृद्ध करते रहे हैं। सभ्यता के प्रारंभ से लेकर आज तक भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग अपने जीवन निर्वाह के लिए पूरी तरह से समुद्रों पर ही आश्रित रहा है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमने हर प्रकार से समुद्र का आर्शीवाद लिया है। हमारा तो विश्वास रहा है कि समुद्र मंथन से प्राप्त रत्नों के कारण ही हमें विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता होने का अवसर प्राप्त हुआ। सदियों से हमारे पर्यावरण की रक्षा भी इन्हीं से होती रही है। जहां तक पर्यटन की दृष्टि से समुद्र और उसके तटों के विकास की बात है वह अपेक्षाकृत नई सोच है। पिछले कुछ ही वर्षों से हमने इस दिशा में सोचना प्रारंभ किया है। अभी भी भारत के समुद्री तटों पर भारतीय सैलानियों की अपेक्षा विदेशी पर्यटकों की संख्या अधिक दिखाई देती है।

यह जानकर अवश्य ही अचंभा होता है कि 7,000 किलोमीटर लंबे समुद्री तटों के स्वामी होते हुए भी हमने गंभीरतापूर्वक समुद्रतटीय पर्यटन को विकसित करने का विशेष प्रयास नहीं किया है। बंगाल से लेकर तमिलनाडु और केरल से लेकर गुजरात तक भारतीय समुद्रतट विश्व के किसी भी समुद्र तट से प्रतिस्पर्द्धा की क्षमता रखते हैं। इसके अतिरिक्त लक्षद्वीप, अंडमान निकोबार और दमन दीव जैसे भारतीय महाद्वीपों की सुंदरता का तो कोई मुकाबला ही नहीं है।

समुद्र तटों से हमारा परिचय बंगाल की खाड़ी के मुहाने पर स्थित पश्चिम बंगाल से शुरू हो जाता है। भले ही यहां कोई विश्वप्रसिद्ध समुद्री तट न हों फिर भी डिघा

और बक्खाली के सुनहरी समुद्री तट और डायमंड हार्बर का डेल्टा, जहां गंगा समुद्र में समाहित होने के लिए हिमालय पर्वत से दौड़ी चली आती है, बहुत ही दर्शनीय स्थल है। गंगा हर भारतीय के लिए मोक्षदायिनी है और गंगासागर में स्नान करना किसी भी भारतीय की जीवन भर की साध हो सकती है। हर वर्ष यहां लाखों लोग पवित्र स्नान के लिए आते हैं।

हमारे चार धामों में से एक धाम होने के कारण उड़ीसा की धार्मिक नगरी पुरी भले ही भगवान जगन्नाथ के मंदिर के लिए विश्वविख्यात है परंतु इसका समुद्री तट अपने आप में बेजोड़ है। इस तट पर लगभग एक किलोमीटर की दूरी तक समुद्र गहरा नहीं है। इस कारण सैलानी बहुत दूर तक समुद्र स्नान का आनंद उठाते हैं। अच्छे तैराक अपने आप और नौसिखिए पर्यटक स्थानीय मछुआरों की सहायता से घंटों जलक्रीड़ा करते हैं। इस तट की सुनहरी रेत को देखकर किसी भी पर्यटक का मन उसे बिछौना मान कर लेटने को मचल उठता है। प्रात: सूर्योदय एवं सायं सूर्यास्त के समय सैलानी घंटों इस सुनहरी रेल के बिछौने पर विश्राम करते हुए बंगाल की खाड़ी की विशाल जल राशि को अपलक निहारा करते हैं। मीलों लंबे इस समुद्री तट के साथ-साथ सड़क पर सजे बाजार में उड़ीसा के अद्भुत हस्तशिल्प देखकर पर्यटक आश्चर्य से दांतों तले उंगली दबा लेते हैं। गहरे समुद्र से निकले शंख और सीपियां यहां बहुत की कम दामों पर उपलब्ध होते हैं। समुद्र से प्राप्त अनेक प्रकार की वस्तुओं से बनी कलाकृतियां किसी भी सैलानी को अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम हैं।

पुरी के अतिरिक्त गोपालपुर, कोणार्क और चांदीपुर के तट भी बहुत लुभावने हैं। गोपालपुर के शांत समुद्री तट पर नीली जलराशि की लहरों का नर्तन पर्यटक को घंटों अपने सम्मोहन में बांधे रखता है। यहां पर हरे वृक्षों से आच्छादित संकरी खाड़ियों और 'लगूनों' की मौन शांति जो सुखद अनुभूति प्रदान करती हैं उसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं। कोणार्क सूर्यमंदिर की स्थापत्य कला के लिए विश्वप्रसिद्ध है। इस मंदिर में ऐसी बेजोड़ मूर्तियां बनाई गई हैं जिनका दुनिया में अन्यत्र उदाहरण नहीं मिलता। मंदिर में बनी मूर्तियों की सजीवता किसी भी पर्यटक को अभिभूत कर देती है। 13वीं शताब्दि में निर्मित इस मंदिर की विशालता, मूर्त्तिकला की गहराई और बारीकियों को देख कर आश्चर्य होता है कि आज जैसे आधुनिक यंत्रों के अभाव में उस युग में किस प्रकार इतने विशाल पत्थरों को इतनी ऊंचाई पर ले जाया गया होगा और किस प्रकार इतनी सूक्ष्मता से मूर्तियों में प्राण भरे गए होंगे। पत्थर पर अंकित इस कविता के रस में सैलानी बार-बार डूबता और सराबोर होता है। इन कविताओं को छायांकन के लिए सैलानियों को अवश्य ही एक दो फिल्में बचा कर रखनी चाहिए।

बंगाल से लेकर तमिलनाडु और केरल से लेकर गुजरात तक भारतीय समुद्रतट विश्व के किसी भी समुद्र तट से प्रतिस्पर्द्धा की क्षमता रखते हैं। इसके अतिरिक्त लक्षद्वीप, अंडमान-निकोबार और दमन-दीव जैसे भारतीय महाद्वीपों की सुंदरता का तो कोई मुकाबला ही नहीं है।

कोणार्क के समुद्री तट पर सूर्योदय का नयनाभिराम दृश्य देखने के लिए प्रतिदिन हजारों दर्शक एकत्र होते हैं। पर्यटन के विकास की दृष्टि से यहां पर अनेक विकास कार्य करने की योजनाएं बनती रही हैं। यह माना जाता रहा है कि पर्यटन की दृष्टि से यदि इस क्षेत्र को अंधाधुंध ढंग से विकसित करने का प्रयास किया गया तो यहां के पर्यावरण को क्षति पहुंचेगी और समुद्र में उपलब्ध कछुओं की एक विशेष प्रजाति लुप्त हो जाएगी।

चांदीपुर के तट पर समुद्र का पानी प्रतिदिन पांच किलोमीटर पीछे हट जाता है और धीरे-धीरे पुन: चढ़ता है। इस पानी की लय एक मधुर संगीत का आनंद देती है। उड़ीसा के समुद्री तटों पर प्रात:कालीन स्फूर्तिदायक समुद्री वायु किसी को भी मंत्रमुग्ध करके उसका मन हर्षित करने में सक्षम है। इस समय मछुआरे अपनी-अपनी नावों में मछली पकड़ने के लिए समुद्र में जाते हैं। सूर्य की रश्मियों में नहाती हुई दूर जाती नौकाएं छोटे-मोटे पक्षियों सरीखी दिखाई देती हैं।

आंध्र प्रदेश के 666 किलोमीटर लंबे समुद्री तट पर दस प्रसिद्ध बंदरगाह हैं। 14वीं शताब्दि से अरब व्यापारियों के आगमन की साक्षी और ईस्ट इंडिया कंपनी का पूर्वी तट पर प्रथम पड़ावस्थल मछलीपत्तनम का तट सैलानियों के स्वागत को सदैव तत्पर रहता है। यह नगरी विश्व में कलमकारी कला के लिए प्रसिद्ध है। मछलीपत्तनम से मात्र 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मनगिनापुरी तट अपने मनोहारी दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। यहां प्रतिदिन सैकड़ों लोग पिकनिक मनाने आते हैं। माघ पूर्णिमा के दिन यहां लाखों तीर्थयात्री पवित्र स्नान के लिए डुबकी लगाते हैं। इसके तट पर ही स्थित दत्ताश्रम भी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है।

विशाखापत्तनम के सुनहरे बालू से भरे तट हमेशा से पर्यटकों को लुभाते रहे हैं। इस तट से डालफिन की नाक सरीखा रेखा-चित्र नीले आकाश की पृष्ठभूमि में देखते ही बनता है। 'डालफिन नोज' एक बहुत बड़ी 174 मीटर ऊंची चट्टान है। समुद्र तट से इसकी ऊंचाई 358 मीटर है। यह समुद्र तट को मुख्य भूमि से पृथक करती है। आकृति डालफिन की नाक जैसी होने के कारण इस चट्टान को यह नाम दिया गया है।

महाबलिपुरम का समुद्री तट

ऋषिकोंडा का तट सूर्य की गर्मी से गर्म हुए समुद्र द्वारा सदैव धुला-धुला दिखाई देता है। यह तट पूरी तरह से प्रदूषणमुक्त होने के कारण अपने मनोहारी दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। इस तट पर बड़े-बड़े रेत के टीले सैलानियों के लिए विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। काकीनाड़ा, कृष्णापत्तनम तथा कलिपत्तनम भी अपनी-अपनी तटीय सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन सभी स्थानों पर ठहरने का अच्छा प्रबंध है।

तमिलनाडु का महाबलिपुरम का समुद्री तट शताब्दियों पूर्व पल्लव साम्राज्य के प्रमुख बंदरगाह के रूप में विकसित हुआ था। आज भी इस तट पर सातवीं शताब्दि में बने द्रविड़ शैली के मंदिरों में स्थापत्य कला के अद्वितीय नमूने देखे जा सकते हैं। यह समुद्री तट निरंतर तेज लहरों के शोर और तीव्र गति से चलने वाली हवाओं की सनसनाहट से गूंजता रहता है। नारियल और नागफनी के पेड़ों से अच्छादित यह तट पर्यटकों के सामने एक अलग तरह का सौंदर्य प्रस्तुत करता है। मद्रास के 'गोल्ड़न बीच' की अपनी अलग विशिष्टता है। शहरी आबादी के एकदम निकट होने के कारण उसके रखरखाव में आने वाली कठिनाई का कोई अच्छा समाधान मद्रास शहर के प्रशासक ढूंढने में अभी तक सफल नहीं हुए हैं। फिर भी इस 'बीच' का आकर्षण हजारों पर्यटकों को निरंतर अपने मोहपाश में बांधे रखता है। समुद्र के बीच खड़े हुए जब पर्यटक इसकी फेनिल लहरों की अठखेलियों का आनंद उठा रहा होता है तो कई बार उसके शरीर से आ टकराने वाला कोई लावारिस शव उसका सारा मजा किरकिरा भी कर सकता है।

मद्रास के समुद्र तट के साथ-साथ सर्पाकार मार्ग पर यात्रा करते हुए जब सैलानी इस तट पर द्रविड़ शैली के मंदिरों को देखता है तो आश्चर्यचकित रह जाता है। स्थापत्य कला के सौंदर्य से भरपूर समुद्री तट पर निर्मित पुराने मंदिरों का अनोखा संगम है महाबलीपुरम। पांडिचेरी के समुद्री तट पर प्रात:काल ही पर्यटकों का आना शुरू हो जाता है। इस तट से सूर्योदय का दृश्य बहुत मनोहारी होता है। सूरज के निकलने से पूर्व शनै: शनै: दूर समुद्र की लहरें जैसे अपने परिधान बदलने लगती हैं। उसी के साथ ही बदलने लगती है क्षितिज पर रंगों की छटा।

कन्याकुमारी भारत की मुख्य भूमि का अंतिम स्थल बिंदु, तीन सागरों की त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है। तीन रंगों का नीला, हरा और मटमैला पानी मिलकर जिस इंद्रधनुष की संरचना करता है, उसे देखने का सुख हर किसी के नसीब में नहीं होता। यहां एक ही स्थल से पर्यटक सूर्योदय और सूर्यास्त के दिलकश नजारे देख सकते हैं। प्रात: जब बंगाल की खाड़ी से बाल रवि उदित होते हैं तो लगता है कि भानुभास्कर स्नान करके निकले हों। सायंकाल जब थके मांदे सूरज अरब सागर में विश्राम को जाते हैं तो आभास होता है जैसे उन्होंने किसी गहरी नीली जलराशि की चादर ओढ़ ली हो। चैत्र पूर्णिमा को सांझ ढले यदि आकाश मेघों से युक्त हो तो इस स्थान से बंगाल की खाड़ी में चंद्रोदय और अरब सागर में सूर्यास्त देखने योग्य होता है। अगले दिन इसके विपरीत प्रात:काल बंगाल की खाड़ी में सूर्योदय और अरब सागर में चंद्रास्त का दृश्य अत्यंत मनोहर और विस्मयकारी होता है। इस समुद्री तट पर अलग-अलग रंगों की रेत की छटा भी निराली है। पर्यटकों के लिए यह रेत दुकानदार छोटी-छोटी थैलियों में भरकर बेचते हैं।

जहां कन्याकुमारी के तट पर उत्ताल तरंगें सैलानी के मन को उद्वेलित करती हैं वहीं रामेश्वरम का ठहरा सागर उसे अपने सौंदर्य से जड़वत बना देता है। रामेश्वरम भारत के दक्षिण भाग में स्थित एक छोटा-सा टापू है। हिंदुओं के चार पवित्र धामों में से एक होने के कारण इसका भारतीय जन-जीवन में अपना अलग स्थान है। धार्मिक दृष्टि से यात्रा करने के लिए यहां प्रतिदिन हजारों तीर्थयात्री आते हैं। पहले पाबन और मंडप नामक दो रेलवे स्टेशनों के मध्य समुद्र के ऊपर बंधी हुई रेलवे की पटरियों द्वारा ही यहां पहुंचा जाता था। अब सड़क मार्ग भी बन गया है। जब समुद्र के बीचोंबीच छोटी-सी रेल की पटरी पर गाड़ी आती है तो ऐसा लगता है कि विश्व का सबसे अद्भुत

आश्चर्य दृष्टि के सामने आ गया हो। अपने दोनों ओर विशाल जलराशि देखना एक रोमांचकारी अनुभव है। रामेश्वरम में शंख और सीप से बनी हस्तशिल्प की वस्तुएं भी विशेष आकर्षण का केंद्र हैं।

कोवलम केरल के 600 किलोमीटर तटीय प्रदेश का सबसे शांत एवं खूबसूरत तट है। यहां पर सैलानी जितनी शांति और खुलेपन का एहसास करता है उतना अन्यत्र कहीं नहीं। पर्यटकों के लिए यहां पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं। नौकायन, तैराकी, वाटर-स्कींइग इत्यादि का पूरा प्रबंध है। जड़ी बूटियों से निकाले गए तेल से केरल की परंपरागत मालिश कराने की सुविधा भी यहां उपलब्ध है। कोवलम के समुद्र तट ने अब अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थान बना लिया है। तिरुवनंतपुरम शहर से मात्र 16 किलोमीटर की दूरी पर होने के बावजूद ऐसा लगता है जैसे व्यक्ति कहीं सुनसान स्थल पर पहुंच गया है। यहां पहुंचने के लिए सैलानी हरे-भरे नारियल के वृक्षों के झुरमुटों को पार करता हुआ आता है तो कोवलम की सुंदरता के देख कर अभिभूत हो उठता है। जब तक पर्यटक तट पर नहीं पहुंचता उसे ऐसा लगता है जैसे वह किसी छोटे पर्वतीय स्थल की यात्रा कर रहा हो। प्रदूषणरहित इस तट की पृष्ठभूमि में सागर की विशाल नीलाभ जलराशि सैलानी का मन मोह लेती है। नितांत अनगढ़ और चिर कुंवारा सपना सा है यह तट। जैसे पलक झपकने की भूल करते ही संपूर्ण सौंदर्य राशि ओझल हो जाएगी। किवदंती है कि यह समुद्र कुंआरा है, इसलिए सांझ ढलने पर कोई नारी इसे नहीं छूती। यदि वह यह भूल करती है तो समुद्र उसे लील जाता है, ऐसी ही मान्यता है यहां के स्थानीय लोगों की। ऐसा लगता है कि यह पर्यटन स्थल मुख्य रूप से विदेशी पर्यटकों के लिए विकसित किया गया है। कोवलम के इस विकसित क्षेत्र से थोड़ी दूर हटते ही काफी गंदगी दिखाई देने लगती है। इस ओर के तट पर पहुंचने के मार्ग को भी अधिक सुंदर बनाया जा सकता है। यदि मध्यम दर्जे के सैलानियों के लिए भी यहां कुछ प्रबंध कर दिए जाएं तो निश्चित रूप से कोवलम भारी संख्या में सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है।

कोचीन विश्व व्यापार का एक ऐसा महत्वपूर्ण तट है जहां से व्यापारी काली मिर्च, काजू, मछली और रबर का व्यापार दुनिया भर में करते हैं। अरब सागर की महारानी के नाम से प्रसिद्ध यह बंदरगाह छोटे-छोटे टापुओं और 'बैक वाटर' से सुसज्जित एक रमणीय पर्यटन स्थल है। पांच सौ वर्ष पूर्व पुर्तगालियों ने इस स्थान की खोज की थी। बाद में डच, यहूदी और अंग्रेज इसकी सुंदरता के मोहजाल में बंधकर यहीं के होकर रह गये। प्राचीन कोचीन में पुर्तगाली, इंगलिश और यूरोपीय सभ्यताओं के चिन्ह आज भी मिलते हैं। पांच सौ वर्ष पुराने महल और भारत में बनने वाला पहला चर्च आज भी उस इतिहास के साक्षी बन कर खड़े हैं। 1524 में वास्कोडिगामा के निधन के पश्चात उसे यहां के सेंट फ्रांसिस चर्च में दफनाया गया था। कोचीन और अर्नाकुलम के मध्य 'फेरी' से यात्रा जहां सैलानियों के लिए रोमांचकारी अनुभव है वहीं सड़क मार्ग की अपेक्षा जल मार्ग अधिक सुविधाजनक भी है। दूरी की दृष्टि से भी यह मार्ग छोटा है।

रामेश्वरम भारत के दक्षिण भाग में स्थित एक छोटा-सा टापू है। हिंदुओं के चार पवित्र धामों में से एक होने के कारण इसका भारतीय जन-जीवन में अपना अलग स्थान है। धार्मिक दृष्टि से यात्रा करने के लिए यहां प्रतिदिन हजारों तीर्थयात्री आते हैं।

कर्नाटक राज्य भी समुद्री सौंदर्य में अन्य राज्यों से ज्यादा पीछे नहीं है। इस राज्य के 320 किलोमीटर लंबे सुनहरी तटों पर खिलती हुई धूप बहुत मनोहारी दिखाई देती है। अरब सागर में केरल से आगे बढ़ते ही मंगलौर के समुद्री तट पर्यटकों का खुले दिल से स्वागत करते हैं। पाम के ऊंचे-ऊंचे वृक्षों, 'बैक-वाटर' और सुहावनी जलवायु के कारण इसे पर्यटकों के लिए स्वर्ग समान सुखद कहा जा सकता है। यह स्थान टीपू सुल्तान की नौसेना का दुर्ग रहा है। कर्नाटक का कारावली तट अपनी नीली जलराशि की सुंदरता के लिए विश्वप्रसिद्ध है। पूरे तट के साथ-साथ राजमार्ग है जो रास्ते में आने वाले प्रत्येक शहर और कस्बे के मध्य से गुजरता हुआ पर्यटक को संपूर्ण आनंद और जानकारी प्रदान करने में सहायक होता है। कर्नाटक के कारवाड़ समुद्री तट को कवीन्द्र रवीन्द्र ने भारत के सुंदरतम तट की संज्ञा दी है। यहां के उडीपी, उल्लाल, मारवंथा, सूरथकल, मालपी और मरुदेश्वर जैसे खूबसूरत एवं शांत समुद्री तट पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। गोकर्ण के पांच तटों में से एक का आकार ओम जैसा होने के कारण उसे 'ओम बीच' कहा जाता है। इन सभी स्थानों पर मंगलौर से पहुंचा जा सकता है। पर्यावरण की दृष्टि से कर्नाटक के तट एकदम अछूते हैं।

गोवा अरब सागर के तट पर स्थित पूर्व का रोम कहलाता है। सह्याद्रि पर्वत शृंखलाओं से नीचे आते ही पहाड़ छूने का प्रयास करती अरब सागर की लहरें दिखाई देने लगती हैं। प्राचीन ग्रंथों में गोवा को परशुराम सृष्टि के नाम से पुकारा गया है। मान्यता है कि परशुराम ने इस क्षेत्र को महाबली समुद्र से छीनकर उत्तर के पर्वतों से आए ब्राह्मणों को तप के लिए दे दिया था। इसे 'गोवापुरी' नाम से पुकारा गया। इसकी लंबाई सात योजन अर्थात 140 किलोमीटर बताई गई है। वर्तमान गोवा की लंबाई भी इतनी ही है। यहां पर पूरब और पश्चिम की सांझी संस्कृति देखने को मिलती है। यहां के 100

भारत का प्रत्येक समुद्र तट सैलानियों को आकर्षित करता है

किलोमीटर लंबे समुद्री तट विदेशी सैलानियों की भीड़ से निरंतर भरे रहते हैं। इन तटों पर सभी प्रकार की सुविधाएं हैं। यहां के मछुआरों को मछली पकड़ते देखना एक अलग-सा अनुभव है। सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत लुभावना दिखाई देता है जब लंबे-लंबे ताड़ के वृक्षों के झुरमुट उसके सामने नतमस्तक से होते दिखाई देते हैं।

गोवा में समुद्री तटों की भरमार है। अंजूना और कलंगगूट सबसे प्रसिद्ध तट हैं। अंजूना बीच एक किनारे की तरफ सबसे शांत और खूबसूरत तट माना जाता है वहीं कलगंगूट मस्त लहरों, नारियल से आच्छादित सफेद रेतीले किनारों और फेनी की मादकता के लिए प्रसिद्ध है। अरब सागर के किनारे लगभग सात किलोमीटर की मेहराबी आकृति के इस तट पर पर्याप्त मात्रा में प्रदूषण दिखाई देता है। सर्वप्रथम यहां प्रदूषण फैलाने का कार्य हिप्पियों द्वारा किया गया। इन दिनों हिप्पी तो दिखाई नहीं देते परंतु गंदगी वैसी ही है। प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ विदेशी सैलानियों ने यहां सांस्कृतिक प्रदूषण फैलाने में भी काफी योगदान दिया है। पश्चिमी घाट पर निरंतर होने वाले पेड़ों की कटाई ने भी गोवा के वातावरण को प्रभावित किया है।

बागा, बोगमालो, मेजोरडा, मोरजिम, बागाटोर, कलानग्रेट, मीरामर, डोना पाल, चपोरा एवं कोलाबा इत्यादि समुद्री तट पर्यटकों को हर पल आकर्षित करते रहते हैं। शांत और एकदम निर्जन समुद्र तट की सैर के लिए उत्तर में हरमल से बेहतर कोई स्थान नहीं है। मोमनगांव पोर्ट प्राकृतिक रूप से एक अन्य सुंदर स्थल है। इसके समीप ही खूबसूरत तट दोण पाऊल है। यहां एक ऊंची मीनार है जिसके छज्जे से अरब सागर का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। समुद्री तटों पर विकसित गोवा की विशेष प्रकार की संस्कृति भी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है।

महाराष्ट्र के 720 किलोमीटर लंबे समुद्री तटों पर नहाने वालों का जमघट-सा लगा रहता है। इन तटों पर जलक्रीड़ाओं का समुचित प्रबंध होने के कारण सैलानी यहां स्वर्गिक आनंद का अनुभव करते हैं। मुंबई को भारत का 'प्रवेश द्वार' कहा जाता है। समुद्र तट पर बसी यह औद्योगिक नगरी भारत की आर्थिक राजधानी के रूप में विश्वप्रसिद्ध है। यहां की महानगरीय सभ्यता किसी को भी अजनबीपन का अहसास नहीं होने देती। यहां के जुहू, वरसोवा, चौपाटी, दादर, गिरगांव और इरानगल जैसे बालू के तट पर्यटकों का हर प्रकार से मन बहलाने में सक्षम हैं। इन तटों पर देश विदेश से आने वाले पर्यटकों का मेला हरदम लगा रहता है। जुहू के समुद्री तट पर शहरी सभ्यता के कोलाहल के साथ-साथ समुद्री नजारे देखे जा सकते हैं तो मुंबई से मात्र 50-60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित दहाणु शहरी हलचल से रहित शांत और मनोरम समुद्र तट है। यहां पर सैलानी समुद्र की लहरों से अठखेलियां करते हुए समुद्र की गंभीरता का लुत्फ उठाते हैं।

गुजरात भी समुद्री तटों के सौंदर्य से मालामाल है। पोरबंदर, चोरवाड़, तिथाल, द्वारका और सोमनाथ के समुद्री तटों की

सुंदरता बेजोड़ है। समुद्र तट के साथ-साथ सड़क होने के कारण पर्यटक वाहन में बैठे भी समुद्र की सुंदरता का आनंद उठाते चलता है। होटल में आराम करते हुए भी सैलानी विशाल जलराशि में डूबता उभरता रह सकता है। चोरवाड़ से सोमनाथ की यात्रा कुशल तैराक तैर कर करते हैं। इस क्षेत्र में तैराकी की प्रतियोगिताएं भी पर्यटकों के आकर्षण का कारण बन रही हैं। भुज से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मांडवी का अनछुआ समुद्र तट उन सैलानियों के लिए पावन है जो वातावरण को अक्षुण्ण बनाये रखने में रुचि रखते हैं। इस तट पर पहुंचते ही समुद्र के सौंदर्य को देखकर पर्यटकों की हृदय गति तीव्र हो जाती है। रोमांचक जल क्रीडाओं, तैराकी, नौका विहार की सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। डनी पवाईंट के पास ही खूबसूरत कोरल के भंडार हैं। यहां पर उछलती डालफिन और बड़े-बड़े कछुओं की भागदौड़ देखते ही बनती है। नाल सरोवर पर दूर देशों से आए प्रवासी पक्षियों की छटा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। अहमदपुर मांडवी के तटों पर पाम के ऐसे वृक्ष मिलते हैं जो भारत में अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं हैं। यहीं से केंद्र शासित प्रदेश दीव का प्रवेश द्वार भी है।

सूर्य, रेत और सागर की अपूर्व सुंदरता का अद्भुत मिश्रण है दीव का नन्हा-सा टापू। सौराष्ट्र के तट पर स्थित यह टापू एक समय पुर्त्तगालियों के नियंत्रण में था। यहां पर पर्यटक शांतिपूर्वक बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के प्रकृति से अपना तारतम्य स्थापित कर सकते हैं। इसके सुनहरी रेत से आच्छादित तटों का आलिंगनबद्ध करते सागर को देखने मात्र से ही पर्यटक की सारी थकान छूमंतर हो जाती है। द्वीव का 21 किलोमीटर लंबा तट विश्व के गिने-चुने तटों में माना जाता है। सूर्यास्त का नजारा देखने के लिए यहां बड़ी संख्या में लोग आते हैं। वे एकटक पश्चिम के क्षितिज को तब तक देखते रहते हैं जब तक सूर्य की लालिमा सायंकाल के सलेटी रंग में परिवर्तित नहीं हो जाती। शहर से नौ किलोमीटर दूर 'नागोआ बीच' अत्यधिक शांत और सुंदर है। घोड़े की नाल की आकृति वाले इस समुद्र तट पर तैरना पूरी तरह सुरक्षित है। चक्रातीर्थ और 'जालंधर बीच' के गुनगुने पानी में स्नान करने का अपना ही मजा है। ऐसे ही अप्रतिम सौंदर्य से भरपूर हैं अंडमान और निकोबार के समुद्री तट।

अंडमान और निकोबार 204 द्वीपों का समूह है जिनमें से 38 निर्जन टापू हैं। इनका क्षेत्रफल 6,475 वर्ग किलोमीटर है। इसमें ऐसे अनेक पर्वतीय भ्रमण-स्थल हैं जहां से समुद्र का अथाह नीला जल चारों ओर अपने पूरे विस्तार सहित दिखाई देता है। वायुयान से नीचे देखने पर लगता है जैसे गहरी नीली पृष्ठभूमि पर वनों और नारियल के झुरमुटों का हरा गलीचा बिछा दिया गया हो। लहराती बल खाती समुद्री जल की खाड़ियां द्वीपों के भीतर घुसकर उन्हें घेरती मालूम देती हैं। इनकी निर्मल जलराशि में कोरल के बगीचे, जेली फिश और शंख, सीपियां और कौड़ियां प्रचुरता से बिखरी दिखाई देती हैं। यहां की सुनहली धूप, चमचमाती रेल वाले समुद्र तट, गहरी हरियाली से लदे पर्वत और चहचहाते पक्षी, गहरा नीला समुद्र और सतरंगी मछलियां किसी का भी मन मोह लेने में सक्षम हैं। अंडमान और निकोबार सागर-वक्ष पर हरे-भरे टापुओं की जीवंत स्थली है। नैसर्गिक सौंदर्य, वन्य जीवन, भरपूर सागर संपदा, जनजातियें का अनुपम जीवन, मोहक रत्नाभूषणों की कारीगरी पर्यटक को बार-बार यहां आने के लिए प्रेरित करती है।

लक्षद्वीप नारियल के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की हरियाली से अच्छादित चिकने रेतीले तटों से घिरा हुआ है। यह मालाबार तट से 220 से 440 किलोमीटर की दूरी पर फैला है। अपने प्रकार का अनोखा यह द्वीपसमूह अपने भीतर प्रकृति के अनेकानेक चमत्कार और रहस्य छिपाए हुए है। लक्षद्वीप का जादुई सौंदर्य, डाल्फिन की चुलबुलाहटों और उड़ने वाली मछलियों की कलावाजियों से सैलानी को मंत्रमुग्ध कर देता है। लक्षद्वीप में कई मूंगे के द्वीप होने के कारण इसे समुद्री संपदा का खजाना कहा जाता है। फिरोजी रंग के स्वच्छ पारदर्शी पानी में स्थित मूंगे की चट्टानें और उनके भीतर बाहर तैरती असंख्य रंगों की मछलियां किसी तिलिस्म सी दिखाई देती हैं। शीशे के तले वाली नाव में बैठकर यह नजारा देखना अद्भुत अनुभव है।

भारत का प्रत्येक समुद्री तट सैलानियों के लिए कोई न कोई आकर्षण लिए है। समुद्री तटों के पर्यटन की ओर हमने अभी पूरा ध्यान नहीं दिया है। असीम संभावनाओं का क्षेत्र होते हुए भी यह अभी तक लगभग अछूता है। पर्यटन की संभावनाओं से भरपूर इस क्षेत्र को विकसित करने का प्रयास जितनी जल्दी किया जाएगा, देश के पर्यटन उद्योग के लिए उतना ही अच्छा होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इसके लिए पर्यावरण के साथ कोई गंभीर छेड़छाड़ न की जाए। ❑

भारत का प्रत्येक समुद्री तट सैलानियों के लिए कोई न कोई आकर्षण लिए है। समुद्री तटों के पर्यटन की ओर हमने अभी पूरा ध्यान नहीं दिया है। असीम संभावनाओं का क्षेत्र होते हुए भी यह अभी तक लगभग अछूता है। पर्यटन की संभावनाओं से भरपूर इस क्षेत्र को विकसित करने का प्रयास जितनी जल्दी किया जाएगा, देश के पर्यटन उद्योग के लिए उतना ही अच्छा होगा।

(लेखक 'युगवार्ता' के संपादक हैं।)

पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण

○ के.एल. नौटे

युवा पर्वतारोही पहले कम ऊंचाई वाली पर्वतश्रेणियों से शुरुआत करें

भ्रमण या देशाटन, विशेषकर युवाओं के लिए, न केवल आनन्ददायक होता है, बल्कि इससे वे गौरवान्वित भी होते हैं। घने पेड़-पौधों की हरियाली से आच्छादित भू-भाग कुछ समय के प्रवास के लिए आकर्षित करते हैं; खासकर देवदार, झाड़ियां और जड़ी-बूटियों के पौधे मन मोह लेते हैं। मैदानी भागों में रहने वाले लोगों के लिए यह अत्यन्त स्वाभाविक है कि वे महानगरों के नीरस शोर-शराबे से दूर जाकर बार-बार पर्वतीय क्षेत्रों में अवकाश बिताना पसंद करें।

पर्वत मानव को प्रकृति का बेजोड़ उपहार हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में देशाटन, विशेषकर युवाओं के लिए, न केवल आनन्ददायक होता है, बल्कि इससे वे गौरवान्वित भी होते हैं। घने पेड़-पौधों की हरियाली से आच्छादित भू-भाग कुछ समय के प्रवास के लिए आकर्षित करते हैं। खासकर देवदारु, झाड़ियां और जड़ी-बूटियों के पेड़-पौधे मन मोह लेते हैं। मैदानी भागों में रहने वाले लोगों के लिए यह अत्यन्त स्वाभाविक है कि वे महानगरों के नीरस शोर-शराबे से दूर बार-बार पर्वतीय क्षेत्रों में अवकाश बिताना पसंद करें। इस तरह का भ्रमण शिवालिक पर्वतमाला में किया जा सकता है, जो विशेषकर गर्मी के मौसम में बेहद रोमांचकारी और आनन्ददायी हो सकता है।

पर्वतमालाओं पर रहने वाले लोग एक तरह से बड़े भाग्यशाली हैं। आज के अधिकांश शहरी क्षेत्रों में व्याप्त प्रदूषण के विपरीत पर्वतीय क्षेत्रों में वातावरण एकदम स्वच्छ है। आश्चर्य की बात नहीं कि बड़े शहरों में रहने वाले लोग, अल्पावधि के लिए ही सही, अपने फेफड़ों को पर्वतों की ताजी हवा से भरने के लिए वहां जाते हैं। ऐसे पर्वतीय क्षेत्रों में भ्रमण आनन्ददायक तो होता है लेकिन उसमें कठिनाइयां भी कम नहीं होती। इसलिए युवाओं, स्कूली बच्चों, विशेषकर स्काउट्स और एन सी सी कैडेटों के लिए यह सलाह उचित होगी कि वे शुरू में कम ऊंचाई वाली पर्वत श्रेणियों पर भ्रमण करें। नांगल बांध और देवोत्सिद्ध बाबा बालकनाथ के बीच की शिवालिक पर्वतमाला इस लिहाज से उनके लिए उचित है। यह करीब 50 किलोमीटर लम्बी पर्वतमाला है जो पर्वतीय

क्षेत्रों में भ्रमण का पहला पाठ सिखाने के लिए शानदार भू-भाग है।

भाखड़ा

भाखड़ा बांध आजादी के बाद सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में भारत द्वारा हासिल की गई अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक उपलब्धियों में एक है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू कहा करते थे, "यह 740 फुट ऊंचा बांध न केवल एक जलाशय है बल्कि आधुनिक धर्मनिरपेक्ष भारत का एक मंदिर भी है।" वास्तव में इस निर्माण के सूक्ष्म सौंदर्य को सही-सही शब्दों में उतार पाना संभव नहीं है। अत: जिज्ञासुओं, विशेषकर विद्यार्थियों को चाहिए कि इसके सही और समुचित मूल्यांकन के लिए वे इसे अपनी आंखों से देखें।

भाखड़ा बांध पर दिल्ली से नांगल बांध होते हुए आसानी से पहुंचा जा सकता है। शिवालिक एक्सप्रेस सीधी ट्रेन है, जो दिल्ली से हर रोज चलती है। यह रात साढ़े आठ बजे रवाना होती है और अगले दिन सुबह 8 बजे नांगल पहुंचती है। यह दूरी 356 किलोमीटर है। इसके अतिरिक्त ये दोनों स्थान शानदार राजमार्गों से भी जुड़े हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से आरंभ होने के अलावा चंडीगढ़, अम्बाला, अमृतसर, शिमला, देहरादून आदि से दिन-रात इन स्थानों के लिए बसें आती-जाती रहती हैं। भाखड़ा बांध नांगल बांध से उत्तर-पूर्व में 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। दोनों स्थानों के बीच दोहरी लेन वाला भव्य राजमार्ग है जिस पर ड्राइविंग में बड़ा मजा आता है। बड़ी संख्या में बसें और टेक्सियां चलती रहती हैं और आवृत्ति भी कम नहीं है।

बांध की आंतरिक संरचना को देखने के लिए आपको भाखड़ा व्यास प्रबन्ध बोर्ड के जन संपर्क अधिकारी से परमिट लेना होता है जिसका कार्यालय नांगल बांध पर ही स्थित है। किन्तु बांध और इसके आस-पास के क्षेत्रों में फोटो खींचना वर्जित है।

गोबिन्द सागर

भाखड़ा बांध के पीछे स्थित जलनिकाय गोबिन्द सागर है जिसका नामकरण दसवें सिख-गुरु, गोबिन्द सिंह के नाम पर किया गया है। यह करीब 80 किलोमीटर लम्बा और 1 से 5 किलोमीटर तक चौड़ा है। यह अर्द्धचन्द्राकार झील लगभग 166 किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। इसका कुछ हिस्सा हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में और कुछ ऊना जिले में स्थित है। गोबिन्द सागर के पार्श्वभाग में उत्तर में सोलहसिंधी धार (पर्वतमाला) और दक्षिण में नैनादेवी धार तथा पीर नगाह (या नागा) धार है। क्षेत्र में झील के साथ-साथ आबादी भी है। पूरा क्षेत्र हरियाली से सराबोर है।

झील के चारों ओर शिवालिक पर्वतमाला में प्रचुर संख्या में वन्यजीव भी मौजूद हैं, जैसे तेंदुए, चीते, लकड़बग्घे, गीदड़, हरिण, जंगली सूअर, मोर, तीतर, बहेलिये (व्याध) आदि। शिकार वर्जित है किन्तु कैमरे से शूटिंग की जा सकती है। जीव-जन्तुओं को देखने का सबसे उपयुक्त स्थल झील का किनारा है जहां वे सुबह-शाम के शान्त वातावरण में पानी पीने के लिए आते हैं।

झील के चारों ओर शिवालिक पर्वतमाला में प्रचुर संख्या में वन्यजीव भी मौजूद हैं, जैसे तेंदुए, चीते, लकड़बग्घे, गीदड़, हरिण, जंगली सूअर, मोर, तीतर, बहेलिये (व्याध) आदि। शिकार वर्जित है किन्तु कैमरे से शूटिंग की जा सकती है। जीव-जन्तुओं को देखने का सबसे उपयुक्त स्थल झील का किनारा है जहां वे सुबह-शाम के शान्त वातावरण में पानी पीने के लिए आते हैं।

बाछेर्तू : बाछेर्तू सोलहसिंघी धार पर एक छोटा सा उनींदा गांव है जो भाखड़ा बांध से करीब 10 कि.मी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। इतनी दूरी के दौरान झील के जल निकाय की चौड़ाई करीब 6 कि.मी. है। अत: भाखड़ा बांध के निकट बस से उतरने के बाद करीब 1 किलोमीटर पैदल चलकर झील पार करने के लिए नौका मिलती है। नौका से आप भाखड़ा की तरफ से चलकर करीब आधा घंटे में 6 कि.मी. की झील की चौड़ाई पार करके दूसरे छोर पर जयदेवी गांव पहुंचते हैं। जयदेवी में नौका अड्डे से आपको करीब 4 कि.मी. पैदल चलकर बाछेर्तू गांव पहुंचना होता है, जिसके लिए समुद्र तल से करीब 15000 से 2500 फुट की औसत ऊंचाई पर सैर-सपाटा करने का अवसर मिलता है। वैसे बाछेर्तू गांव हर मौसम में चालू रहने वाले सड़क मार्ग से ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर आदि से भली-भांति जुड़ा है।

बाछेर्तू गांव ताजा जल के एक विशाल झरने के लिए मशहूर है। यह स्थानीय लोगों के लिए ईश्वरीय वरदान समझा जाता है, जो एक खुश्क पर्वत के मध्य में जल-स्रोत है। इस पवित्र झरने के बारे में एक आख्यान यह है कि मध्य युग में एक महात्मा घरवस्त्रा नामक गांव के निकट से गुजर रहे थे। गर्मी के मौसम में भरी दोपहरी के समय पर्वत से गुजरते समय महात्मा को जोर की प्यास लगी। उन्होंने गांव की एक बुजुर्ग महिला से अनुरोध किया कि वह उन्हें जल पिला दे। महिला ने अपने एकमात्र घड़े से महात्मा को आधा जल पीने की अनुमति दे दी। लेकिन बहुत प्यासा होने के कारण महात्मा ने उसका घड़ा पूरा खाली कर दिया। इस पर महिला व्याकुल हो उठी और उसने पूरा घड़ा खाली करने के लिए महात्मा के समक्ष नाराजगी प्रकट की। इस पर महात्मा तत्काल

समाधिस्थ हो गए और अपने मेजबान के जल की क्षतिपूर्ति के लिए गंगा मां की आराधना करने लगे। महात्मा की पूजा से गंगा मां प्रसन्न हुईं और कहा जाता है कि उनके आशीर्वाद से उस स्थान पर ताजा जल के अनन्त और विशाल आकार के झरने का उदय हुआ। लोगों ने बाद में यह जाना कि महात्मा कोई और नहीं, स्वयं भगवान शिव थे। उन्होंने पवित्र जल के झरने के निकट एक भव्य शिव मंदिर का निर्माण किया। यह भी कहा जाता है कि 18वीं सदी में बिलासपुर के राजा बीर चंद ने बाछेर्तू मंदिर का जीर्णोद्धार किया और उसे विशाल आकार प्रदान किया, जिसमें आज इसे देखा जा सकता है। यह एक दर्शनीय स्मारक है। इस पवित्र झरने के जल में स्नान करना एक तरह का उपचार समझा जाता है। बाछेर्तू में हर वर्ष 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन एक मेला लगता है, जिसमें लाखों तीर्थ यात्री एकत्र होते हैं, पवित्र जल में स्नान करते हैं, और भगवान शिव की आराधना करते हैं। समूचे उत्तर भारत से धार्मिक आयोजन के रूप में बैसाखी के अवसर पर लोगों के एकत्र होने का सिलसिला न जाने कब से जारी है। देश में वर्तमान संचार क्रांति की बदौलत बाछेर्तू आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या कई गुणा बढ़ गई है। वास्तव में आज भारत के लगभग सभी भागों से लोग बाछेर्तू मंदिर पहुंचते हैं, और न केवल बैसाखी के दिन, बल्कि सारा साल यह सिलसिला चलता रहता है।

खड़क सिंह दुर्ग (फोर्ट)

सोलहसिंघी धार पर बाछेर्तू झरने के निकट एक ऊंचा टीला है, जहां से बड़ा भव्य दृश्य दिखाई देता है। न केवल नीचे घाटी या इसके विपरीत पर्वतमाला आपको मंत्र-मुग्ध करती है बल्कि इसके पार का मैदान भी बड़ा आकर्षक लगता है। कहा जाता है कि बिलासपुर के राजा खड़कसिंह ने 14वीं सदी में इस पर्वत शिखर का इस्तेमाल सामरिक उद्देश्य के लिए किया और वहां एक दुर्ग का निर्माण कराया। यह दुर्ग वर्तमान घरबस्त्रा गांव के ठीक ऊपर स्थित है। आख्यान के अनुसार महाराजा रंजीतसिंह के सैनिक भी कुछ समय तक इस दुर्ग में रहे थे। यह दुर्ग हालांकि जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, लेकिन अब भी बाछेर्तू आने वाले लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

यहां आने वाले बुद्धिजीवी पर्यटकों की राय है कि पुरातत्त्व विभाग को इस दुर्ग के रख रखाव की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, जिससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

देवोत्सिद्ध

देवोत्सिद्ध भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर है। इसकी स्थापना बाबा बालकनाथ द्वारा की गई थी। वास्तव में यह हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में छाकमो धार पर स्थित है। पक्की सड़क से जाएं तो बाछेर्तू से यह करीब 10 कि.मी. दूर है। इस मार्ग पर टेक्सियों और बसों की कोई कमी नहीं है, इच्छुक पर्यटक इस दूरी को पैदल भी तय कर सकते हैं। पैदल रास्ते बड़े छोटे हैं और करीब 1½ घंटे में यह दूरी तय की जा सकती है।

कहा जाता है कि मध्यकाल में दक्षिण-पश्चिम भारत में गुजरात-काठियावाड़ के जूनागढ़ क्षेत्र से सम्बद्ध एक विलक्षण प्रतिभासंपन्न युवा भगवान शिव का परम भक्त था। वह मोक्ष के लिए दर-दर भटकते हुए तलाई नामक गांव पहुंचा, जो वर्तमान देवोत्सिद्ध मंदिर से दक्षिण-पश्चिम में करीब 4 कि.मी. दूर है। यह गांव दो शिवालिक पर्वतमालाओं के बीच खावाजेदीखड के किनारे एक ऊपजाऊ घाटी में स्थित है। इस युवक ने मा रत्नो नाम की गांव की एक वृद्ध महिला के घर में शरण ली। युवा भक्त में कुछ अवतार के लक्षण मौजूद थे। वह अपनी मेजबान के मवेशियों की देखभाल करता था और साथ ही भगवान की पूजा-आराधना भी करता था। इस दौरान उसे मोक्ष की प्राप्ति हो गई। बाबा द्वारा प्रदर्शित चमत्कारों से लोगों को यह विश्वास हो गया कि वह न केवल भगवान शिव का उपासक था, बल्कि उनका अवतार भी था। यही वजह थी कि उन्हें बाबा बालकनाथ की संज्ञा दी गई। इस स्थान को शाह तलाई कहा जाता है। मोक्ष प्राप्ति के बाद बाबा एक निकटवर्ती गुफा में स्थानांतरित हो गए जिसे आज 'देवोत्सिद्ध' मंदिर कहा जाता है।

सीधा मार्ग

आप चाहें तो हमीरपुर (55 कि.मी.) बिलासपुर (60 कि.मी.), नांगल (100 कि.मी.) से सड़क मार्ग से सीधे देवोत्सिद्ध पहुंच सकते हैं अथवा भाखड़ा बांध से रायपुर-बंगाना सर्किट (80 कि.मी.) होते हुए बस से या नौका-पैदल बस से संयुक्त रूप से कुल 30 किलोमीटर दूरी तय करके देवात्सिद्ध पहुंच सकते हैं।

रात्रि-विश्राम

पर्यटकों के रात्रि-विश्राम के वास्ते शाह तलाई, देवोत्सिद्ध और निकटवर्ती सब-डिवीजनल मुख्यालय बार्सर में लोक निर्माण विभाग और वन विभाग के विश्रामगृह हैं। शाह तलाई में कुछ साधारण प्राइवेट होटल भी हैं। नांगलबांध या नया नांगल में स्थित सरकारी सर्किट हाउस, विश्राम गृहों, टूरिस्ट बंगलों और होटलों का भी इस्तेमाल ठहरने के लिए किया जा सकता है।

नांगल-भाखड़ा-बाछेर्तू और शाह तलाई होते हुए देवोत्सिद्ध बाबा बालकनाथ का एकतरफा पैदल भ्रमण और सामान्य बस से वापसी युवाओं, खासकर स्काउट्स और एन सी सी कैडेटों के लिए आकर्षक भ्रमण एवं पर्वतीय सैर-सपाटे का प्रथम पाठ हो सकता है। ❑

(श्री के.एल. नौटे शिमला स्थित एक लेखक हैं जो पूर्व में 'असिस्टेंट कन्जर्वेटर आफ फारेस्ट' रह चुके हैं।)

IAS..... यथार्थ अनुभव

रिक्तियों के कटौती एवं बढ़ते हुए प्रतियोगिता के दौर में हमने अध्यापन को नई दिशा प्रदान की है एवं सफलता के नए सूत्रों को प्रतिपादित किया है। सिविल सेवा परीक्षा, 2001 में 56 परीक्षार्थीयों का चयन एवं सर्वोच्च दस में 2 का चयन संस्था के प्रयासों को स्थापित करता है। अध्यापन एवं मार्गदर्शन के स्तर में अंतर स्पष्ट एवं विशिष्ट है .....

नए सत्र के लिए नामांकन प्रारंभ

कक्षा कार्यक्रम — **सामान्य अध्ययन** द्वारा हेमंत झा एवं के० सिद्धार्थ

— **भूगोल** द्वारा के० सिद्धार्थ

— **इतिहास** द्वारा हेमंत झा

— **दर्शनशास्त्र** द्वारा धर्मेन्द्र कुमार

— **निबंध**

एकीकृत मार्गदर्शन कार्यक्रम — ऐसे परीक्षार्थी जो सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में दो बार या साक्षात्कार में एक बार प्रवेश पा चुके हैं लेकिन अन्ततः असफल रहे हैं और जिनका वैकल्पिक विषयों में एक विषय इतिहास है के लिए संस्था एक ''एकीकृत मार्गदर्शन कार्यक्रम'' (इतिहास-सामान्य अध्ययन-निबंध) शुरू करने जा रही है जो निःशुल्क है। विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

पत्रचार कार्यक्रम — पर्याप्त, प्रमाणित, परिवर्द्धित एवं संशोधित अध्ययन सामग्री - उत्तर प्रारूप - विद्यार्थियों के प्रश्नोत्तर की जाँच की व्यवस्था - दूरभाष वार्तालाप सुविधा - ई-मेल की सुविधा - समय-समय पर सुझाव, नई दिशा तथा उपगमन से संबंधित अध्ययन सामग्री।

— विषय : सामान्य अध्ययन, भूगोल, इतिहास, दर्शनशास्त्र

— शुल्क : मुख्य परीक्षा — रू० 2,000 /- प्रारंभिक परीक्षा रू० 2,000/-

CAREER POINT

A Centre of Excellence for Civil Services Examination

NORTH DELHI CENTRE : 2589, HUDSON LINES, KINGSWAY CAMP, DELHI-110 009
PH. : 724 0105

SOUTH DELHI CENTRE : 30-B, BERSARAI, OPP. JNU OLD CAMPUS, DELHI-110 016
PH. : 696 6168

FOR OUTSTATION CALL : 011-2714482 (10:00 p.m. to 12:00 pm)
e-mail : careerpoint@vsnl.net

In alliance with

CENDER

पर्यावरण एवं संसाधन विकास केन्द्र

C-11, Sector - 53, Noida - 201 307, (UP)
Tel. : 0120-4490076, Mobile : 9868114604
e-mail : suhasini@bol.net.in

FOR THE PROSPECTUS, PLEASE SEND A DRAFT / MONEY ORDER OF RS. 30

पी.एस. भटनागर, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110 001 से प्रकाशित एवं मुद्रित तथा तारा आर्ट प्रेस, बी-4, हंस भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110 002 में मुद्रित। दूरभाष : 3378626, 3379686

कार्यकारी संपादक : अंजनी भूषण

रजि. सं. डी. एल. 12036/2002 लाइसेंस संख्या यू (डी.एन.)-53/2001 डाक व्यय की पहली अदायगी किए बिना डाक में डालने के लिए लाइसेंस प्राप्त पंजी सं. 951/5
Reg. No. D.L. 12036/2002 R & Licence No. U (D.N.)-53/2001 to post without pre-payment at RMS, Delhi. R.N. 951/5

अक्षय ऊर्जा आंदोलन द्वारा स्थायी ऊर्जा सुरक्षा में प्रयासरत इरेडा

कार्यक्षेत्र

- सौर ऊर्जा
- पवन ऊर्जा
- जल ऊर्जा
- जैव ऊर्जा
- ऊर्जा दक्षता एवं संरक्षण
- विशेष योजनाएं

उपलब्धियाँ

1550 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता
1900 MW क्षमता परिवर्धन
1000,000 M.T. – मेट्रिक टन कोयले का पुनः स्थापन (एम.टी.सी.आर.) प्रतिवर्ष
रु. 5300 करोड़ अनुमोदित धनराशि
रु. 2700 करोड़ धनराशि परिव्यय

विस्तृत विवरण के लिए कृपया इस पते पर संपर्क करें प्रबंध निदेशक

इरेडा IREDA

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
भारत पर्यावास केंद्र कॉम्प्लेक्स, कोर–4ए, ईस्ट कोर्ट, प्रथम तल, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003 (भारत)
फोन: 4682214–21, फैक्स: 91–11–4682202, ई–मेल: mdireda@rediffmail.com वेब साईट: www.iredaltd.com

अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, भारत सरकार

शाश्वत ऊर्जा

◄IMAGEADS►